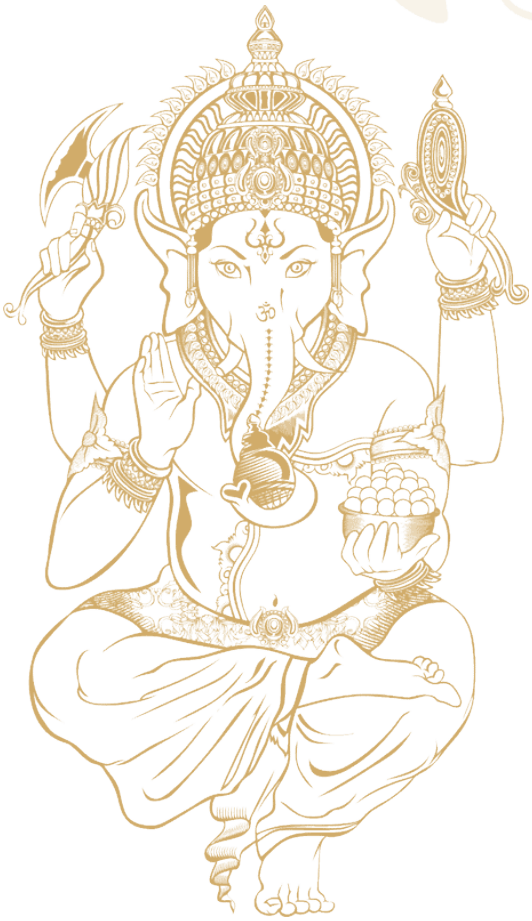

Shreya

14 Feb 2013

04:20 PM

Pune

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 119821201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**14/02/2013**
दिन	गुरुवार
जन्म समय	**16:20:00 घंटे**
इष्ट	23:13:14 घटी
स्थान	**Pune**
राज्य	Delhi
देश	India

अक्षांश	18:34:00 उत्तर
रेखांश	73:58:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:34:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	15:45:52 घंटे
वेलान्तर	-00:14:11 घंटे
साम्पातिक काल	01:24:21 घंटे
सूर्योदय	07:02:42 घंटे
सूर्यास्त	18:34:07 घंटे
दिनमान	11:31:25 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	01:52:01 कुम्भ
लग्न के अंश	02:23:07 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**रेवती - 3**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	शुभ
करण	बव
गण	देव
योनि	गज
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सिंह
युँजा	पूर्व
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	चा-चांदनी
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1934	माघ	25
पंजाबी	संवत : 2069	फाल्गुन	3
बंगाली	सन् : 1419	फाल्गुन	2
तमिल	संवत : 2069	मासी	2
केरल	कोल्लम : 1188	कुंभम	2
नेपाली	संवत : 2069	फाल्गुन	3
चैत्रादि	संवत : 2069	माघ	शुक्ल 4
कार्तिकादि	संवत : 2069	माघ	शुक्ल 4

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 4
तिथि समाप्ति काल _____: 08:19:28
जन्म तिथि _____: 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 28:08:41 घंटे
जन्म योग _____: रेवती
सूर्योदय कालीन योग ____: साध्य
योग समाप्ति काल _____: 12:16:30 घंटे
जन्म योग _____: शुभ
सूर्योदय कालीन करण ____: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 08:19:28 घंटे
जन्म करण _____: बव
भयात _____: 33:21:36
भभोग _____: 62:53:17
भोग्य दशा काल _____: बुध 7 वर्ष 10 मा 30 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: मृग
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

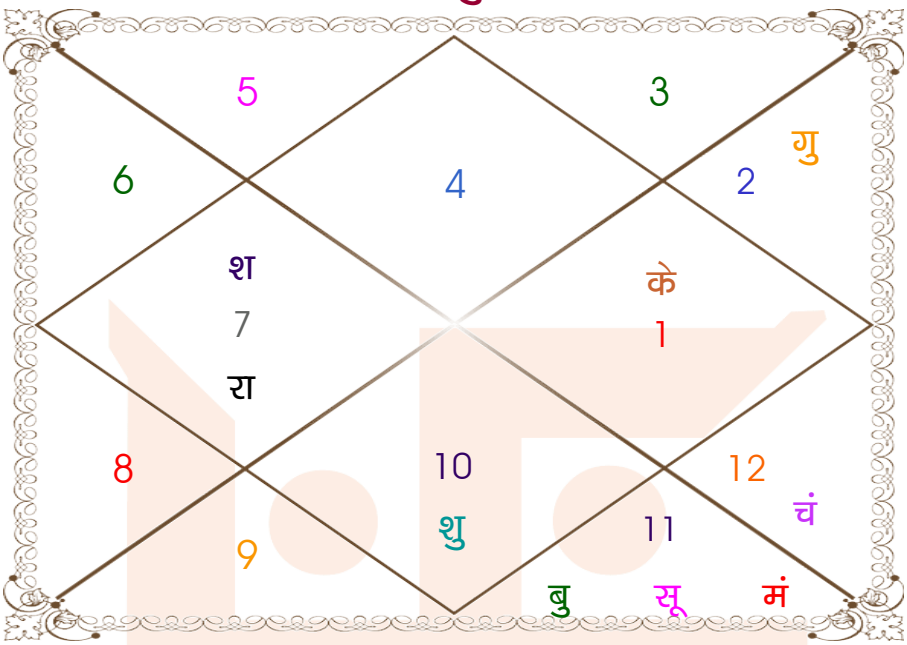

चन्द्र कुंडली

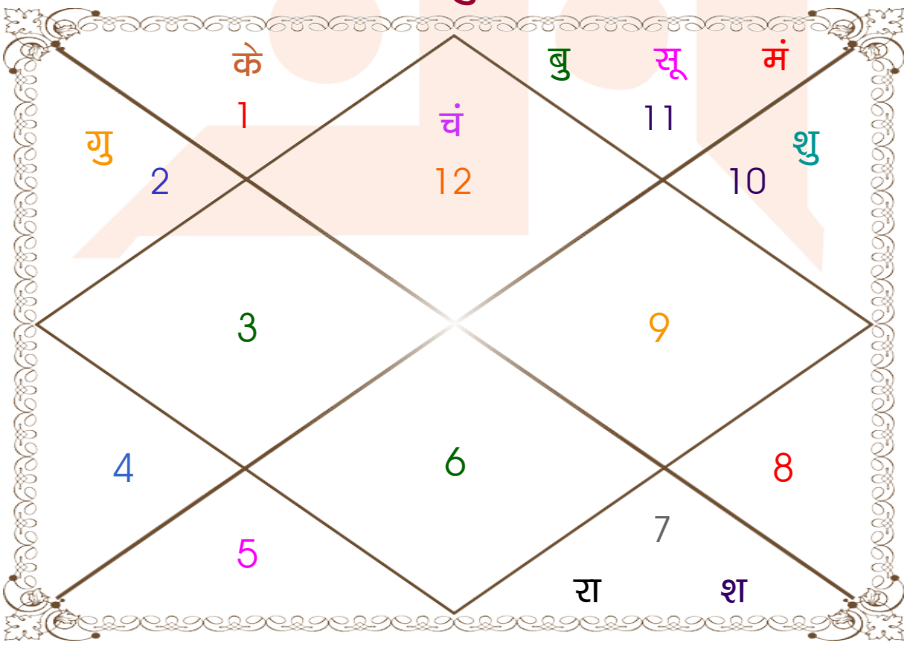

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

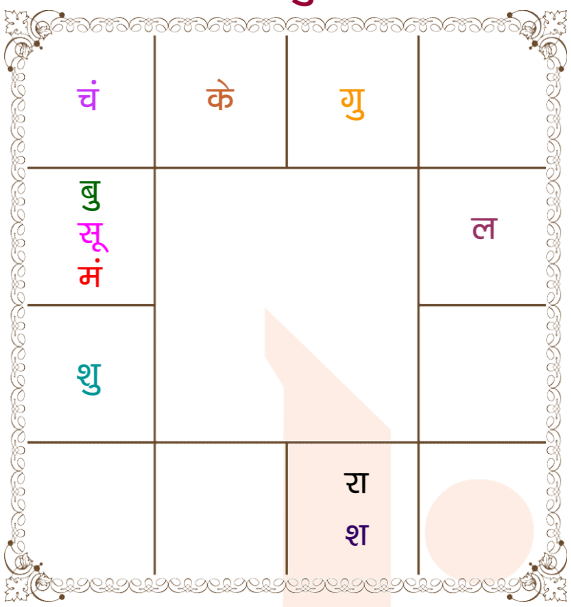

लग्न कुंडली

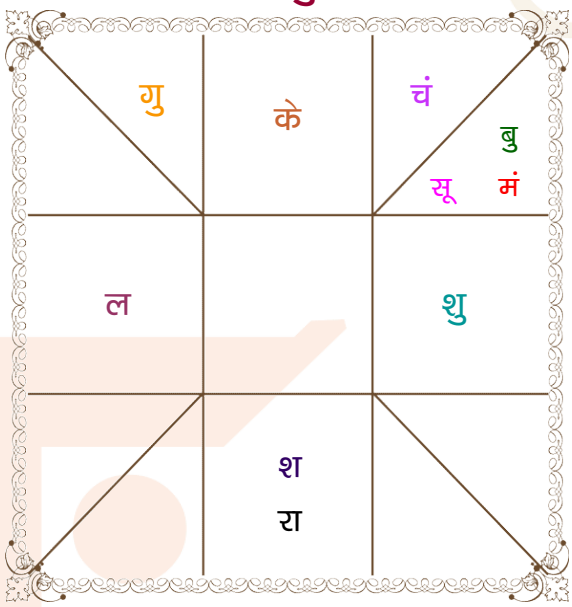

विंशोत्तरी
बुध 7वर्ष 10मा 30दि

बुध

14/02/2013

16/01/2124

बुध	15/01/2021
केतु	15/01/2028
शुक्र	15/01/2048
सूर्य	15/01/2054
चन्द्र	15/01/2064
मंगल	15/01/2071
राहु	15/01/2089
गुरु	16/01/2105
शनि	16/01/2124

योगिनी
उल्का 2वर्ष 9मा 16दि

संकटा

01/12/2022

01/12/2030

संकटा	11/09/2024
मंगला	01/12/2024
पिंगला	12/05/2025
धान्या	11/01/2026
भ्रामरी	01/12/2026
भद्रिका	11/01/2028
उल्का	12/05/2029
सिद्धा	01/12/2030

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	02:23:07	321:05:57	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	---
सूर्य			कुंभ	01:52:01	01:00:38	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	शत्रु राशि
चंद्र			मीन	23:47:29	12:42:23	रेवती	3	27	गुरु	बुध	मंगल	सम राशि
मंगल		अ	कुंभ	15:43:29	00:47:18	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	सम राशि
बुध			कुंभ	19:39:37	01:15:55	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	मंगल	सम राशि
गुरु			वृष	12:39:38	00:03:00	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
शुक्र			मक	21:24:18	01:15:06	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि
शनि			तुला	17:27:58	00:00:27	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	सूर्य	उच्च राशि
राहु	व		तुला	26:40:04	00:04:56	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		मेष	26:40:04	00:04:56	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	सूर्य	मित्र राशि
हर्ष			मीन	12:09:40	00:02:48	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	मंगल	---
नेप			कुंभ	08:31:16	00:02:16	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	---
प्लूटो			धनु	16:43:21	00:01:37	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	---
दशम भाव			मीन	28:45:20	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:02:40

लग्न-चलित

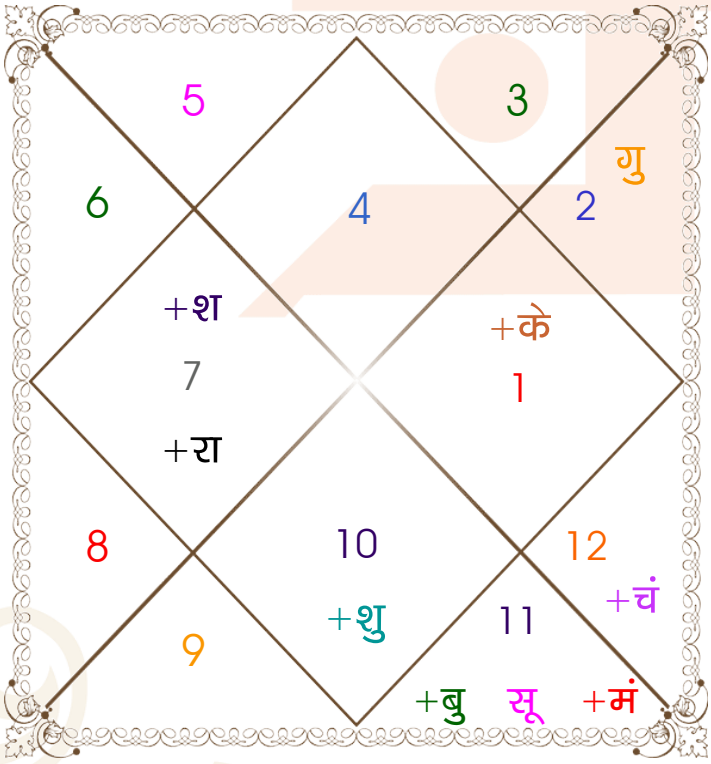

चन्द्र कुंडली

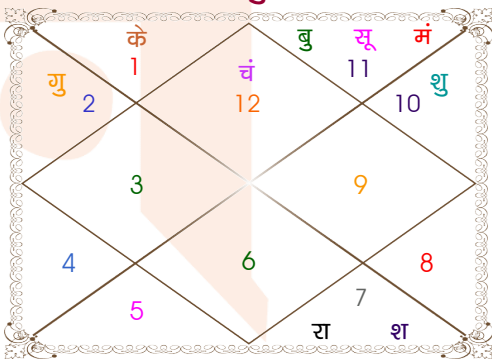

नवमांश कुंडली

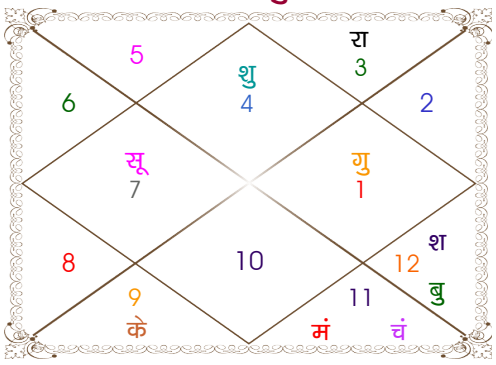

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मिथुन	16:46:49	कर्क	02:23:07
2	कर्क	16:46:49	सिंह	01:10:32
3	सिंह	15:34:14	सिंह	29:57:56
4	कन्या	14:21:38	कन्या	28:45:20
5	तुला	14:21:38	तुला	29:57:56
6	वृश्चिक	15:34:14	धनु	01:10:32
7	धनु	16:46:49	मकर	02:23:07
8	मकर	16:46:49	कुम्भ	01:10:32
9	कुम्भ	15:34:14	कुम्भ	29:57:56
10	मीन	14:21:38	मीन	28:45:20
11	मेष	14:21:38	मेष	29:57:56
12	वृष	15:34:14	मिथुन	01:10:32

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	02:23:07
2	कर्क	27:55:35
3	सिंह	26:42:19
4	कन्या	28:45:20
5	वृश्चिक	01:36:51
6	धनु	02:53:37
7	मकर	02:23:07
8	मकर	27:55:35
9	कुम्भ	26:42:19
10	मीन	28:45:20
11	वृष	01:36:51
12	मिथुन	02:53:37

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली

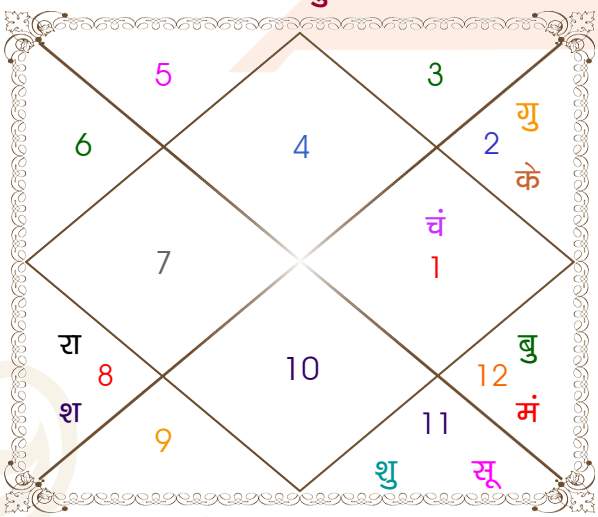

भाव कुंडली

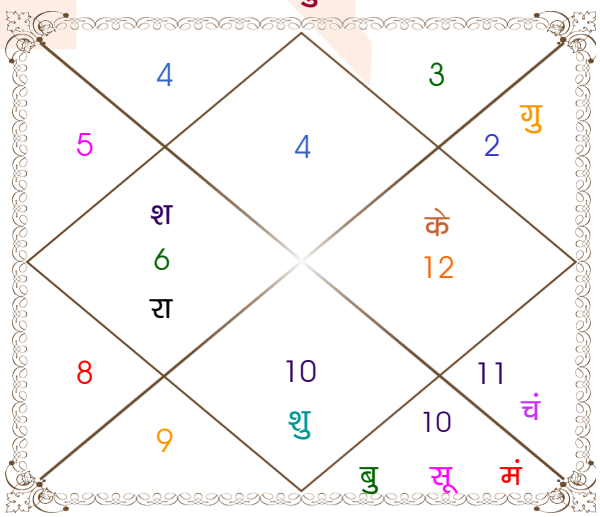

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	बाल	खल	गमन	2.49	77 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	कुमार	शान्त	आगमन	8.45	31 %
मंगल	पुत्र	भ्रातृ	युवा	विकल	आगमन	0.00	62 %
बुध	भ्रातृ	ज्ञाति	वृद्ध	निपीदित	आगमन	0.35	61 %
गुरु	ज्ञाति	धन	युवा	खल	उपवेशन	1.99	41 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	कुमार	मुदित	आगमन	6.78	60 %
शनि	मातृ	आयु	युवा	दीप्त	निद्रा	14.79	71 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	मुदित	आगमन	0.00	21 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	मुदित	भोजन	0.00	21 %
कुल						34.84	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली

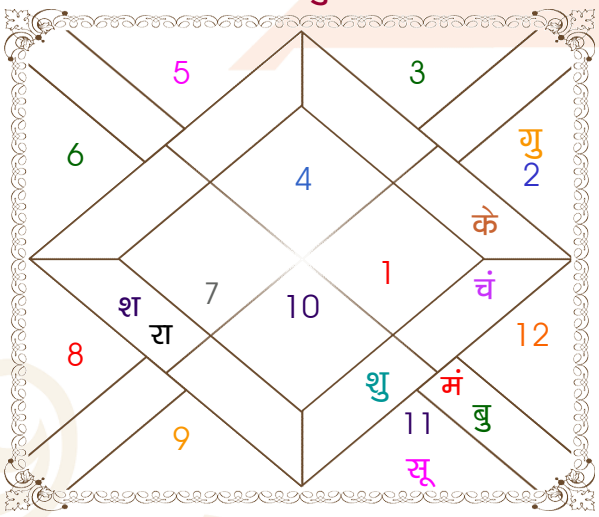

लग्न-चलित

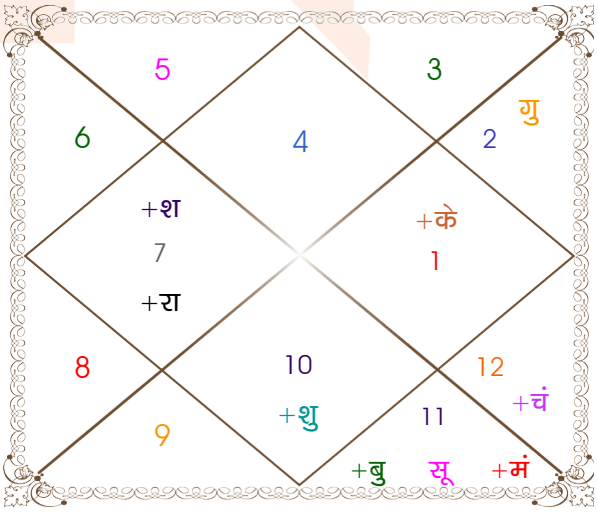

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

सुदर्शन चक्र

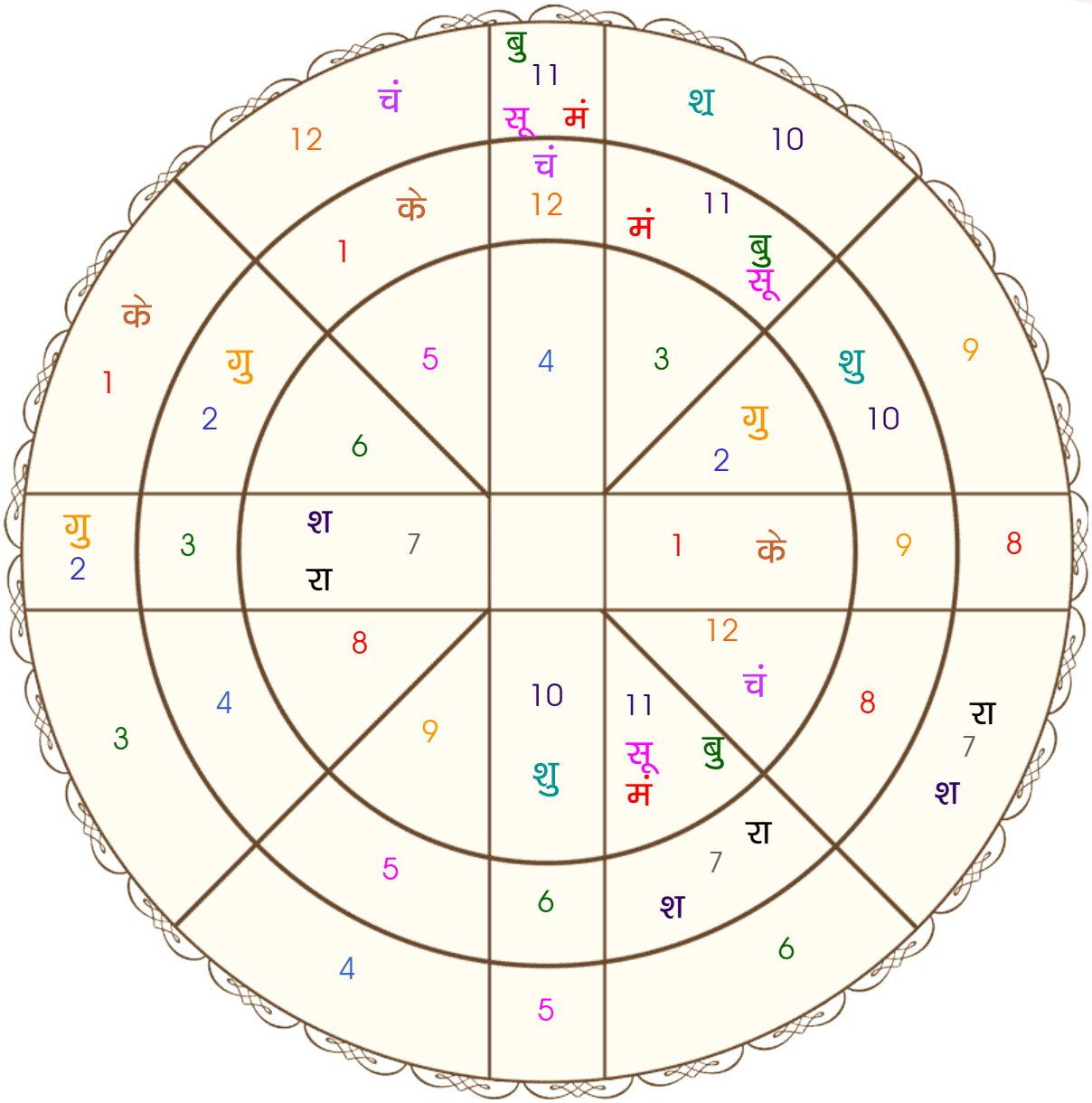

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : बुध 7 वर्ष 9 मास 9 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	01:58:35	शनि	मंगल	केतु	शुक्र
चंद्र		मीन	23:54:03	गुरु	बुध	मंगल	शुक्र
मंगल		कुंभ	15:50:03	शनि	राहु	शुक्र	चंद्र
बुध		कुंभ	19:46:11	शनि	राहु	मंगल	शुक्र
गुरु		वृष	12:46:12	शुक्र	चंद्र	राहु	शनि
शुक्र		मक	21:30:52	शनि	चंद्र	शुक्र	राहु
शनि		तुला	17:34:32	शुक्र	राहु	सूर्य	राहु
राहु	व	तुला	26:46:38	शुक्र	गुरु	शुक्र	शुक्र
केतु	व	मेष	26:46:38	मंगल	सूर्य	सूर्य	मंगल
हर्ष		मीन	12:16:14	गुरु	शनि	मंगल	राहु
नेप		कुंभ	08:37:49	शनि	राहु	राहु	मंगल
प्लूटो		धनु	16:49:55	गुरु	शुक्र	चंद्र	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कर्क	02:29:41	चंद्र	गुरु	राहु	बुध
2	कर्क	28:02:09	चंद्र	बुध	शनि	शनि
3	सिंह	26:48:52	सूर्य	सूर्य	सूर्य	राहु
4	कन्या	28:51:54	बुध	मंगल	शनि	शुक्र
5	वृश्चिक	01:43:25	मंगल	गुरु	राहु	गुरु
6	धनु	03:00:11	गुरु	केतु	सूर्य	सूर्य
7	मक	02:29:41	शनि	सूर्य	गुरु	चंद्र
8	मक	28:02:09	शनि	मंगल	शनि	शनि
9	कुंभ	26:48:52	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र
10	मीन	28:51:54	गुरु	बुध	शनि	शुक्र
11	वृष	01:43:25	शुक्र	सूर्य	गुरु	शनि
12	मिथु	03:00:11	बुध	मंगल	शुक्र	शुक्र

के.पी. अयनांश : 23:56:06

फॉरच्युना : सिंह 24:25:09

लग्न कुंडली

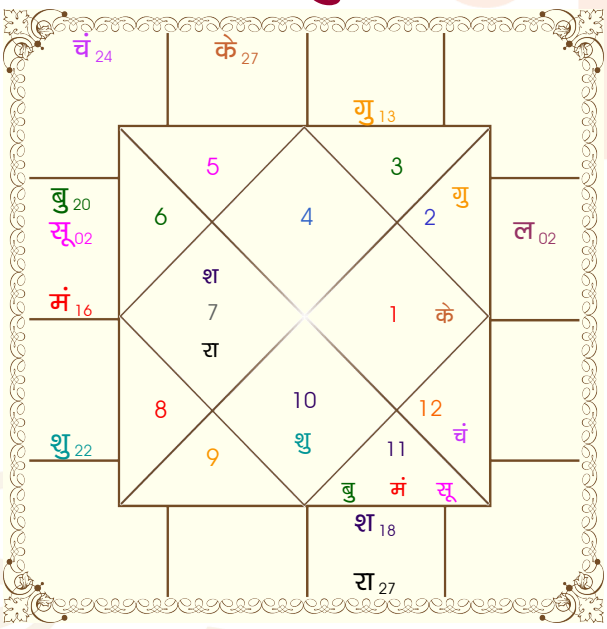

भाव कुंडली

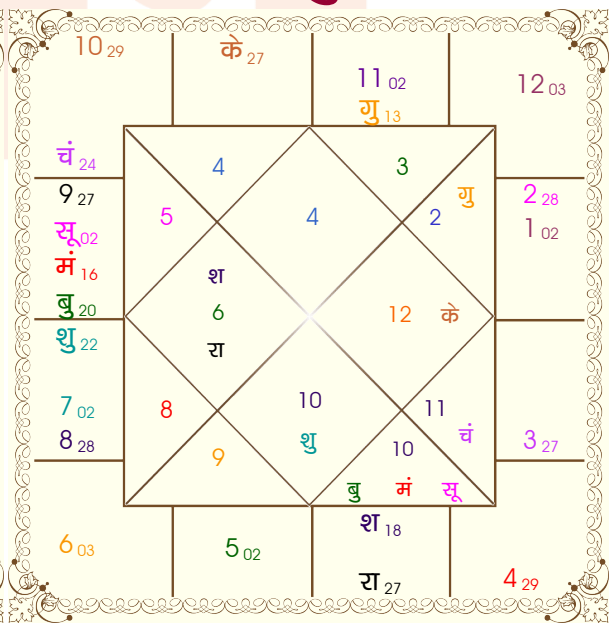

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र- गुरु- शुक्र-
2	चंद्र- गुरु- शुक्र-
3	सूर्य- केतु-
4	चंद्र- मंगल, बुध+ शनि+ राहु,
5	सूर्य- मंगल-
6	गुरु- राहु-
7	शुक्र, शनि-
8	सूर्य+ चंद्र, मंगल, बुध, शनि- केतु,
9	चंद्र, गुरु, शुक्र, शनि-
10	गुरु- राहु- केतु,
11	गुरु, शुक्र- राहु,
12	चंद्र- बुध-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3- 5- 8+
चंद्र	1- 2- 4- 8, 9, 12-
मंगल	4, 5- 8,
बुध	4+ 8, 12-
गुरु	1- 2- 6- 9, 10- 11,
शुक्र	1- 2- 7, 9, 11-
शनि	4+ 7- 8- 9-
राहु	4, 6- 10- 11,
केतु	3- 8, 10,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	चन्द्र
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	मंगल

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	गु शु	चं
2	--	--	गु शु	चं
3	--	--	के	सू
4	मं बु श	श रा	चं	बु
5	--	--	सू	मं
6	--	--	रा	गु
7	--	शु	--	श
8	सू चं के	सू मं बु	--	श
9	गु शु	चं	--	श
10	--	के	रा	गु
11	रा	गु	--	शु
12	--	--	चं	बु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	3	3,7,11	कुम्भ	8
चंद्र	1,2	---	मीन	9
मंगल	5	4,8,12	कुम्भ	8
बुध	4,12	2,10	कुम्भ	8
गुरु	6,10	1,5,9	वृष	11
शुक्र	11	---	मकर	7
शनि	7,8,9	---	तुला	4
राहु	---	---	तुला	4
केतु	---	6	मेष	10

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	5	4,8,12	8	---	6	10
चंद्र	4,12	2,10	8	5	4,8,12	8
मंगल	---	---	4	11	---	7
बुध	---	---	4	5	4,8,12	8
गुरु	1,2	---	9	---	---	4
शुक्र	1,2	---	9	11	---	7
शनि	---	---	4	3	3,7,11	8
राहु	6,10	1,5,9	11	11	---	7
केतु	3	3,7,11	8	3	3,7,11	8

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य 301.87	चंद्र 353.79	मंगल 315.72	बुध 319.66	गुरु 42.66	शुक्र 291.41	शनि 197.47	राहु 206.67	केतु 26.67	हर्ष 342.16	नेप 308.52	प्लूटो 256.72
सूर्य 301.87	-- 0.00	-- 0.00	युति 1.19	-- 0.00	-- 0.00	युति 4.58	-- 0.00	-- 0.00	चतु 0.62	नवां 0.90	युति 7.67	-- 0.00
चंद्र 353.79	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 3.46	-- 0.00	-- 0.00
मंगल 315.72	युति 1.19	-- 0.00	-- 0.00	युति 9.16	4था 9.49	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 7.29	-- 0.00
बुध 319.66	-- 0.00	-- 0.00	युति 9.16	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 3.93	-- 0.00
गुरु 42.66	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	9वां 6.09	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
शुक्र 291.41	युति 4.58	तृती 2.43	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	चतु 0.58	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
शनि 197.47	-- 0.00	-- 0.00	पंच 2.69	पंच 2.52	-- 0.00	चतु 1.54	-- 0.00	युति 5.71	सप्त 5.71	-- 0.00	-- 0.00	3रा 9.97
राहु 206.67	चतु 0.62	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	चतु 0.58	युति 5.71	-- 0.00	सप्त 10.00	अष्टां 0.71	-- 0.00	-- 0.00
केतु 26.67	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 5.71	सप्त 10.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
हर्ष 342.16	-- 0.00	युति 3.46	-- 0.00	-- 0.00	तृती 2.97	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	अष्ट 0.71	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
नेप 308.52	युति 7.67	अष्ट 0.91	युति 7.29	युति 3.93	चतु 1.40	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
प्लूटो 256.72	अष्ट 0.97	-- 0.00	तृती 2.90	तृती 2.16	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	चतु 1.10	-- 0.00	-- 0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	92.39	121.18	149.97	178.76	209.97	241.18	272.39	301.18	329.97	358.76	29.97	61.18
सूर्य	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच
301.87	0.00	9.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.97	0.00	2.06	2.64	2.95
चंद्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
353.79	0.00	0.00	0.00	8.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.68	0.00	0.00
मंगल	--	सप्त	--	8वां	--	--	--	युति	युति	--	--	--
315.72	0.00	0.47	0.00	2.05	0.00	0.00	0.00	0.47	0.79	0.00	0.00	0.00
बुध	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	--	--
319.66	0.00	0.00	4.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.72	0.15	0.00	0.00
गुरु	--	--	5वां	--	--	--	9वां	--	--	--	युति	--
42.66	0.00	0.00	2.39	0.00	0.00	0.00	4.75	0.00	0.00	0.00	2.39	0.00
शुक्र	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
291.41	0.00	5.21	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.21	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	10वा	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
197.47	0.00	1.35	0.00	0.00	2.59	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.59	0.00
राहु	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--	सप्त	--
206.67	0.00	0.00	0.00	0.00	9.41	0.00	0.22	0.00	1.95	0.00	9.41	0.00
केतु	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
26.67	0.22	1.14	1.95	0.00	9.41	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.41	0.00
हर्ष	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
342.16	0.00	0.00	2.89	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.89	0.00	0.00	0.00
नेप	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
308.52	0.00	7.18	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.18	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	--	अष्ट	--	--	--	--
256.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.65	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	92.39	117.93	146.71	178.76	211.61	242.89	272.39	297.93	326.71	358.76	31.61	62.89
सूर्य	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच
301.87	0.00	9.16	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.16	0.00	2.06	2.99	2.89
चंद्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
353.79	0.00	0.00	0.00	8.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.68	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	8वां	--	--	--	--	युति	--	4था	--
315.72	0.00	0.00	0.00	2.05	0.00	0.00	0.00	0.00	4.09	0.00	0.93	0.00
बुध	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	पंचा	--
319.66	0.00	0.00	7.40	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.40	0.15	1.00	0.00
गुरु	--	--	--	--	--	--	9वां	--	--	--	युति	--
42.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.75	0.00	0.00	0.00	4.02	0.00
शुक्र	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
291.41	0.00	7.76	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.76	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	10वा	--	--	युति	3रा	--	--	--	--	सप्त	--
197.47	0.00	4.58	0.00	0.00	0.89	0.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.89	0.00
राहु	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--	सप्त	--
206.67	0.00	0.00	0.00	0.00	8.69	0.00	0.22	0.00	3.00	0.00	8.69	0.00
केतु	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
26.67	0.22	2.84	3.00	0.00	8.69	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.69	0.00
हर्ष	--	अष्टां	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
342.16	0.00	0.36	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच
308.52	0.00	4.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.45	0.00	0.00	0.00	0.29
प्लूटो	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	अष्टां	--
256.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.22	0.00	0.00	0.00	0.00	0.99	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

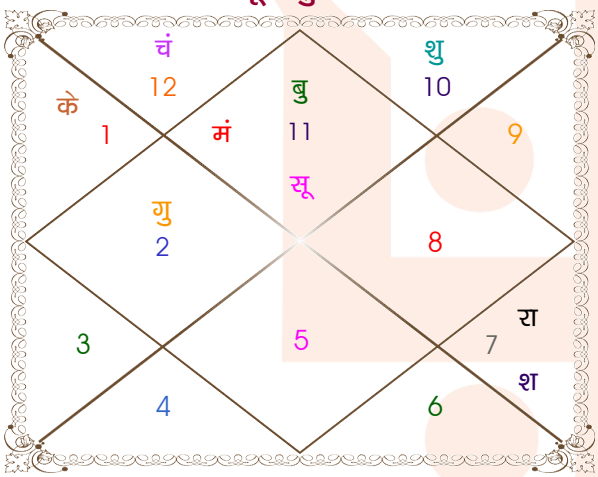

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

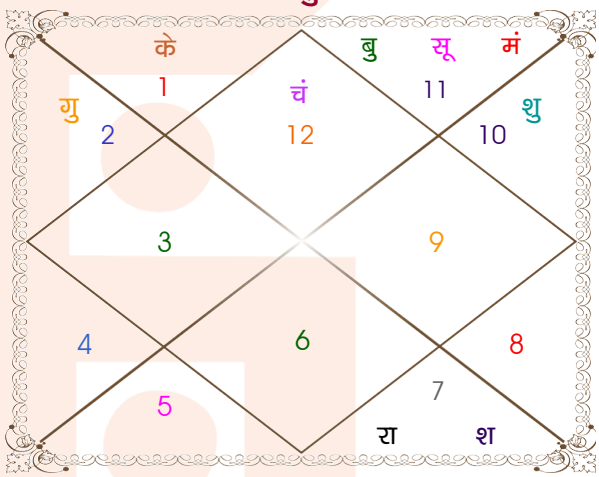

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

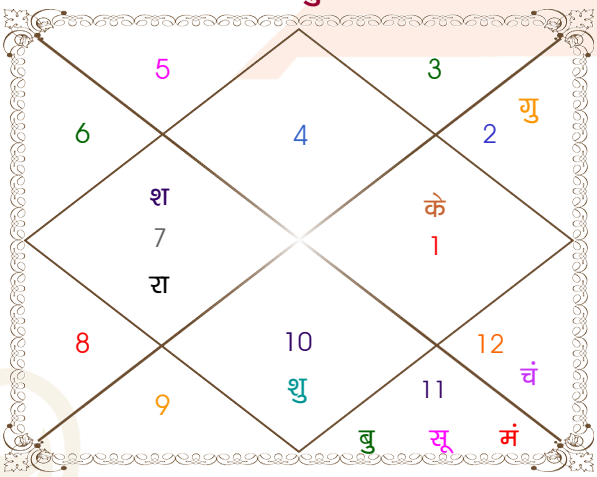

देह विचारः

होरा कुंडली

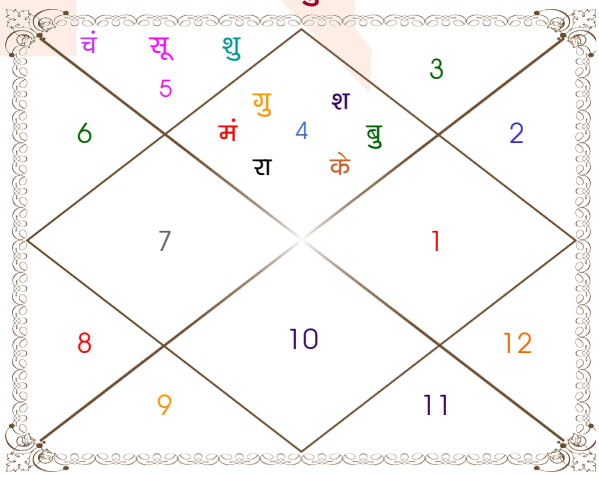

सम्पदाविचारः

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

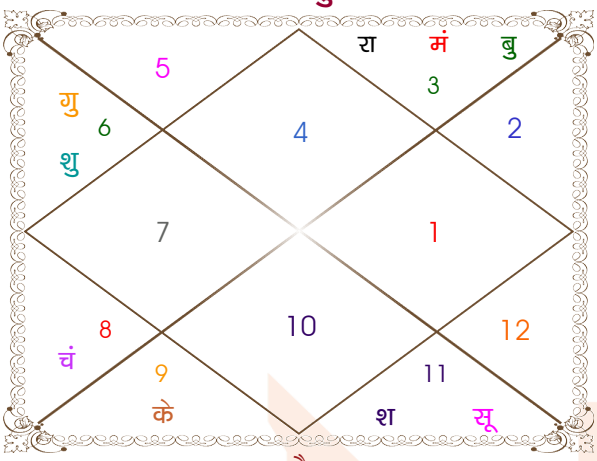

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

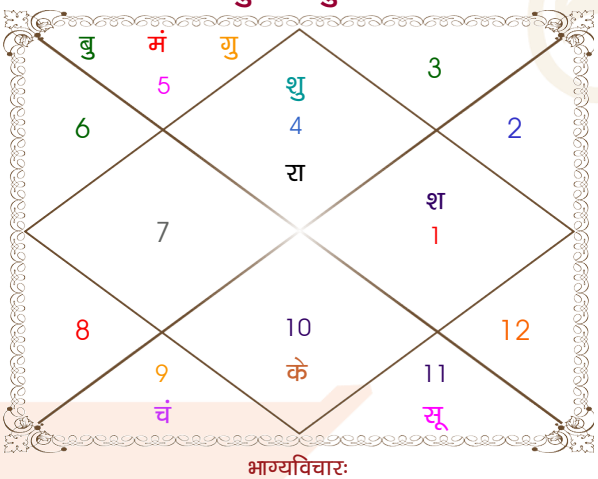

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

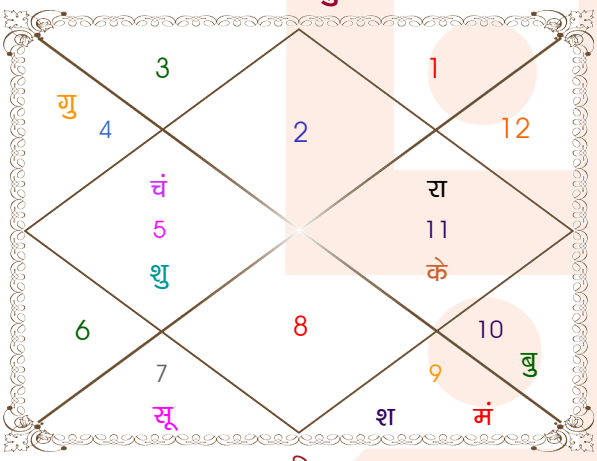

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

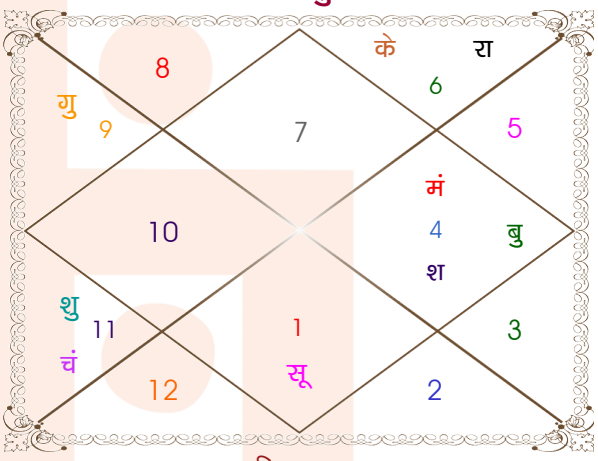

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

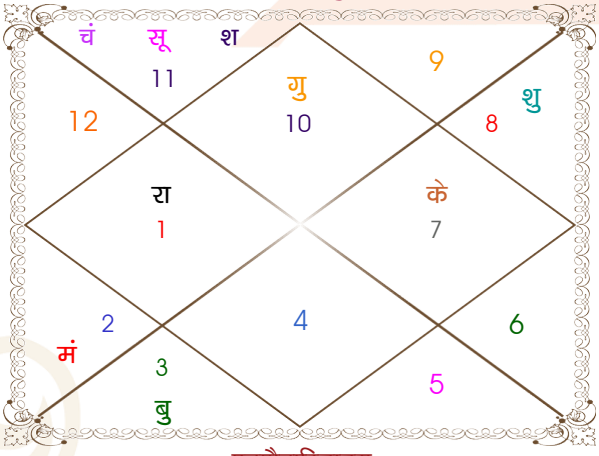

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

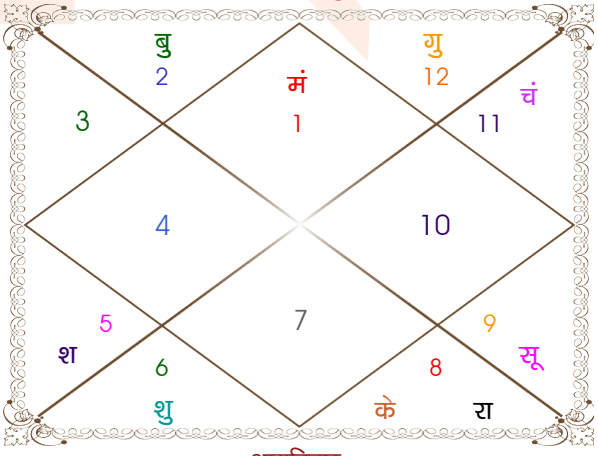

आयुविचारः

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

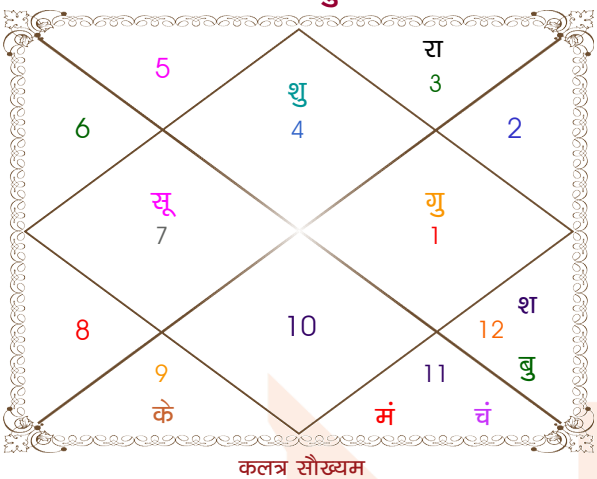

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

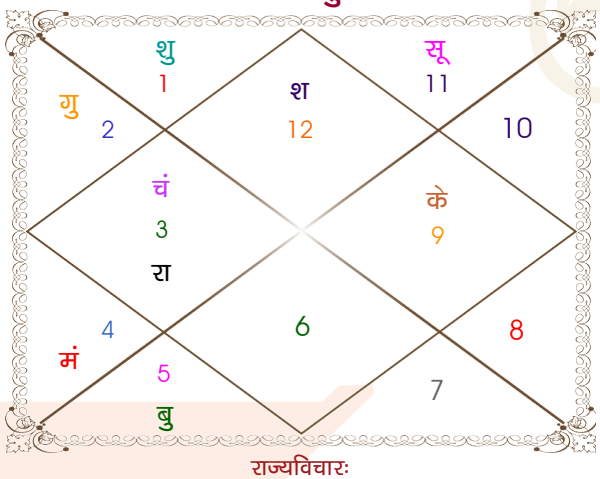

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

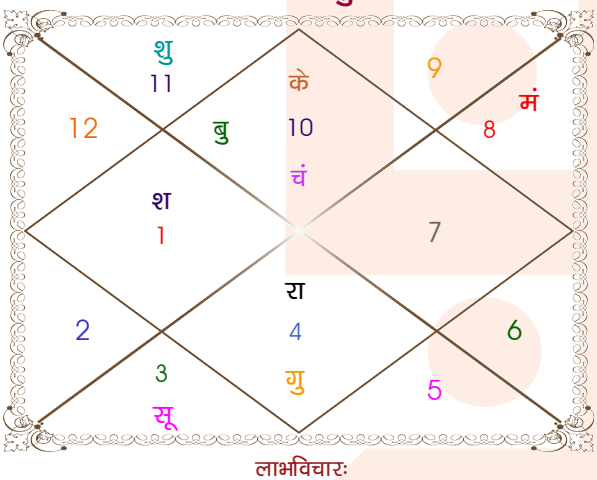

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

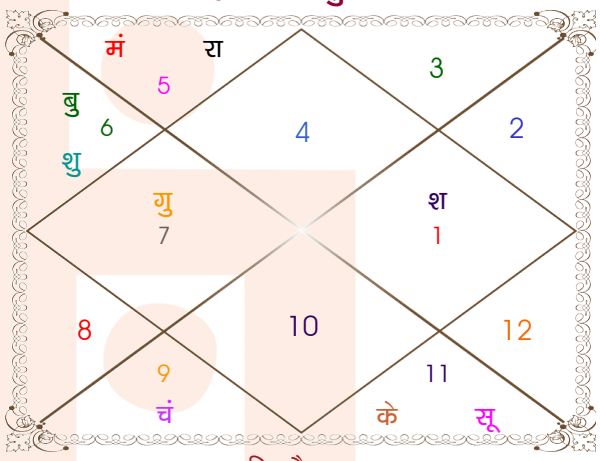

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

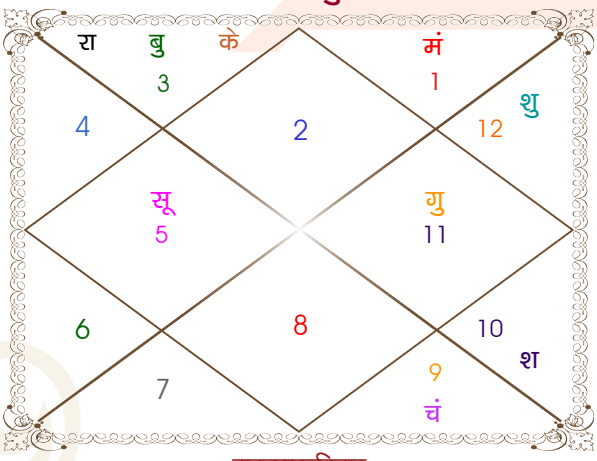

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

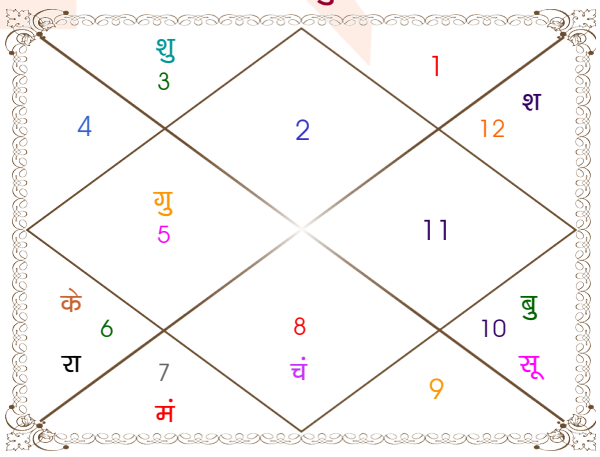

उपासनाज्ञानम्

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

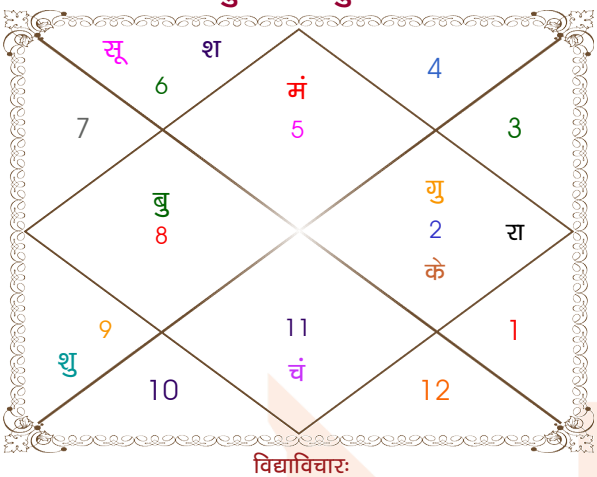

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

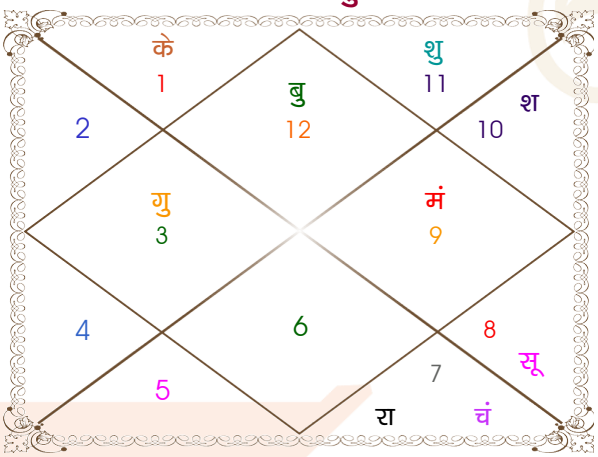

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

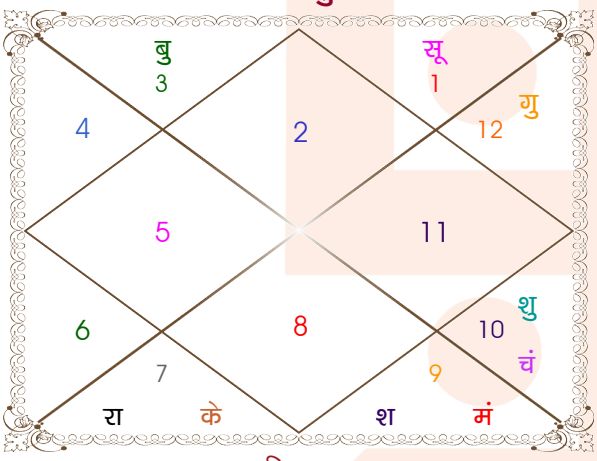

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

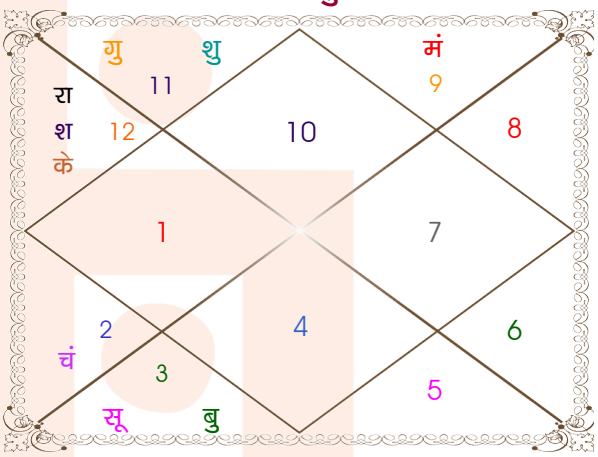

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

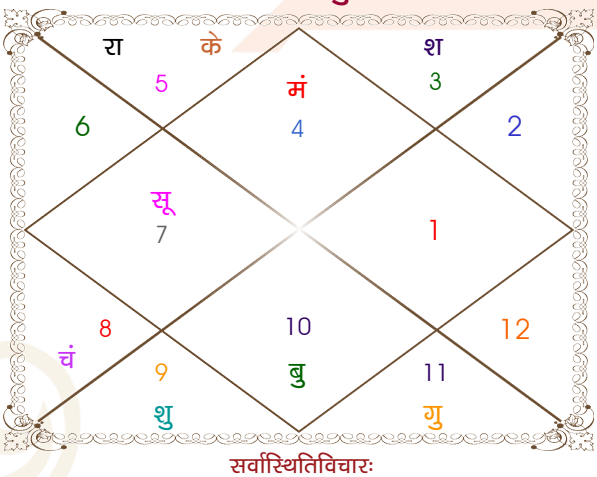

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

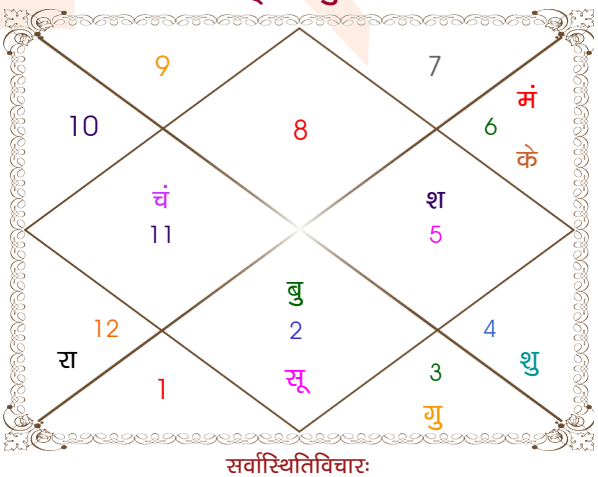

सर्वास्थितिविचारः

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कर्क	कुंभ	मीन	कुंभ	कुंभ	वृष	मक	तुला	तुला	मेष
होरा	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	कर्क	कुंभ	वृश्चि	मिथु	मिथु	कन्या	कन्या	कुंभ	मिथु	धनु
चतुर्थांश	कर्क	कुंभ	धनु	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	मेष	कर्क	मक
सप्तमांश	मक	कुंभ	कुंभ	वृष	मिथु	मक	वृश्चि	कुंभ	मेष	तुला
नवमांश	कर्क	तुला	कुंभ	कुंभ	मीन	मेष	कर्क	मीन	मिथु	धनु
दशमांश	मीन	कुंभ	मिथु	कर्क	सिंह	वृष	मेष	मीन	मिथु	धनु
द्वादशांश	कर्क	कुंभ	धनु	सिंह	कन्या	तुला	कन्या	मेष	सिंह	कुंभ
षोडशांश	वृष	सिंह	धनु	मेष	मिथु	कुंभ	मीन	मक	मिथु	मिथु
विंशांश	वृष	मक	वृश्चि	तुला	मक	सिंह	मिथु	मीन	कन्या	कन्या
चतुर्विंशांश	सिंह	कन्या	कुंभ	सिंह	वृश्चि	वृष	धनु	कन्या	वृष	वृष
सप्तविंशांश	मीन	वृश्चि	तुला	धनु	मीन	मिथु	कुंभ	मक	तुला	मेष
त्रिंशांश	वृष	मेष	मक	धनु	मिथु	मीन	मक	धनु	तुला	तुला
खवेदांश	मक	मिथु	वृष	धनु	मिथु	कुंभ	कुंभ	मीन	मीन	मीन
अक्षवेदांश	कर्क	तुला	वृश्चि	कर्क	मक	कुंभ	धनु	मिथु	सिंह	सिंह
षष्ट्यंश	वृश्चि	वृष	कुंभ	कन्या	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	मीन	कन्या

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
चन्द्र	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
मंगल	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
बुध	3 व्यंजन	4 चामर	5 सिंहान	6 केरल
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
शुक्र	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
शनि	2 किंसुक	3 व्यंजन	4 गोपुर	5 कन्दुक
राहु	2 किंसुक	2 किंसुक	4 गोपुर	5 कन्दुक
केतु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	8.00	12.90	8.55	13.85	11.30	15.20	12.50	10.45	14.55
सप्तवर्ग	7.88	12.10	9.65	14.63	10.98	15.03	12.93	9.65	14.78
दशवर्ग	9.25	11.65	10.63	15.68	10.00	13.53	10.78	9.03	14.78
षोडशवर्ग	9.60	11.63	10.63	14.48	10.73	12.80	11.08	9.72	15.03

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	सम	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	शत्रु	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	अतिमित्र	---	सम	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	37	47	54	8	43	38	59
सप्तवर्गज बल	53	79	77	146	90	120	94
ओजयुग्मक बल	30	15	30	15	15	30	15
केन्द्र बल	30	15	30	30	30	60	60
द्रेष्काण बल	15	15	0	15	0	15	15
कुल स्थान बल	165	171	191	215	178	263	243
कुल दिग्बल	41	2	46	16	43	22	35
नतोन्नत बल	42	18	18	60	42	42	18
पक्ष बल	43	85	43	43	17	17	43
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	60	0	0	0	0	0	0
अयन बल	26	21	20	38	58	9	50
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	186	124	80	141	222	99	170
कुल चेष्टाबल	0	0	6	35	35	6	37
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	3	-3	-4	-4	-36	3	-26
कुल षट्बल	455	345	335	429	477	436	467
रूप षट्बल	7.6	5.7	5.6	7.1	8.0	7.3	7.8
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.5	1.0	1.1	1.0	1.2	1.3	1.6
संबंधित पद	2	7	5	6	4	3	1

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	26.36	28.50	17.85	17.31	38.71	14.65	46.61
कष्ट फल	30.65	23.62	17.88	35.55	20.79	34.48	4.43

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	345	455	455	429	436	477	467	467	467	477	335	429
भावदिग्बल	30	20	10	30	20	10	30	10	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	13	29	74	55	42	50	14	41	3	0	3	9
कुल भाव बल	388	504	539	514	497	537	511	519	490	477	388	487
रूप भाव बल	6.5	8.4	9.0	8.6	8.3	8.9	8.5	8.6	8.2	7.9	6.5	8.1
संबंधित पद	12	6	1	4	7	2	5	3	8	10	11	9

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

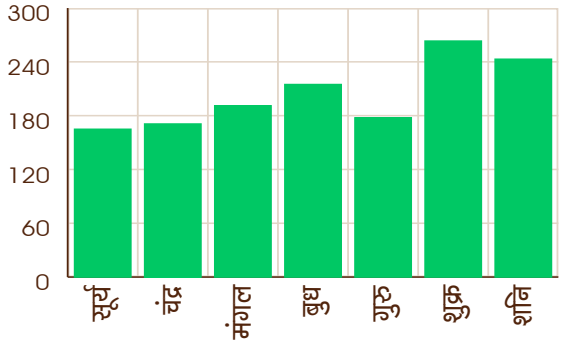

दिग्बल

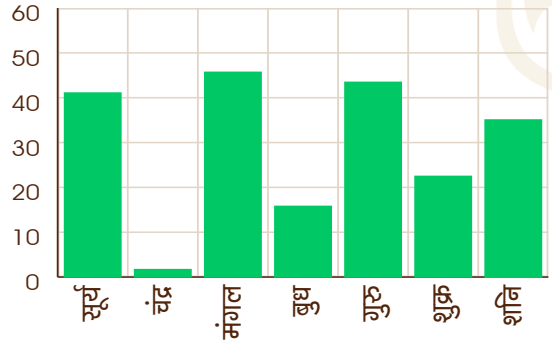

कालबल

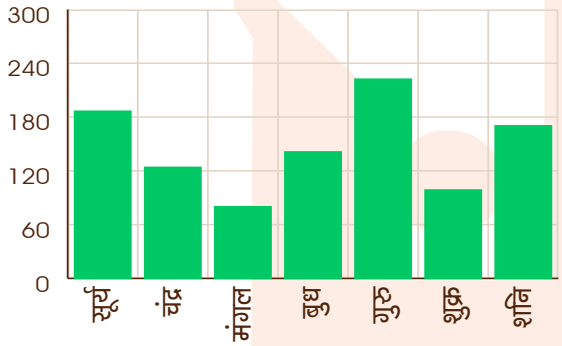

चेष्टाबल

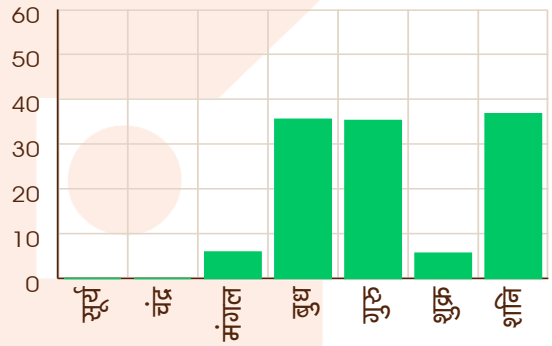

नैसर्गिक बल

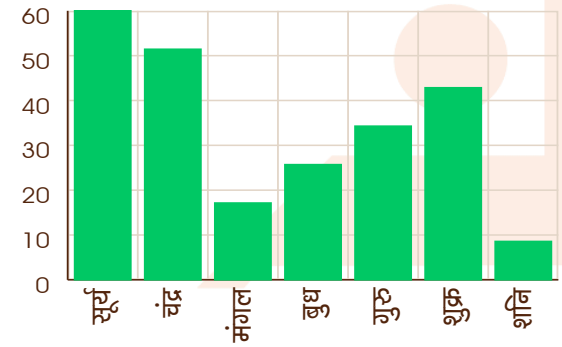

दृग्बल

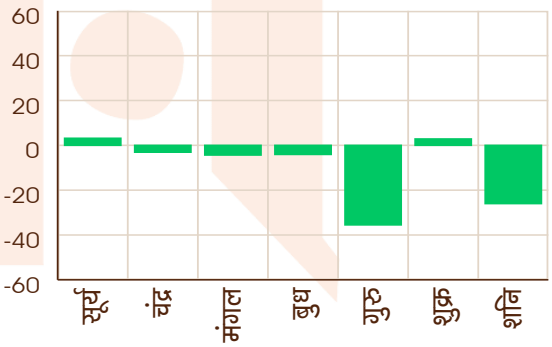

रूप षट्बल

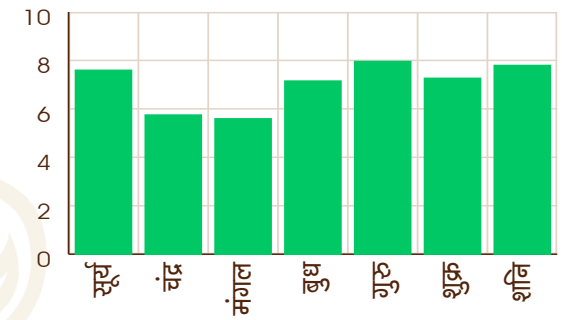

न्यूनतम षट्बल

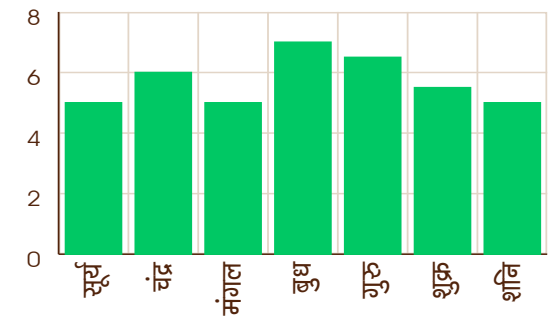

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

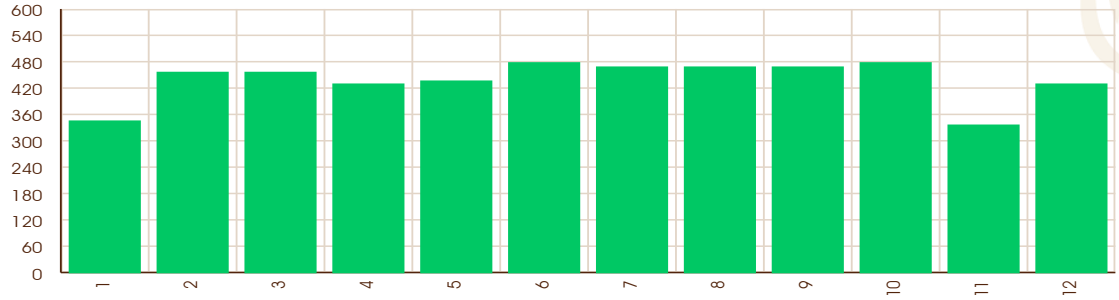

भावदिग्बल

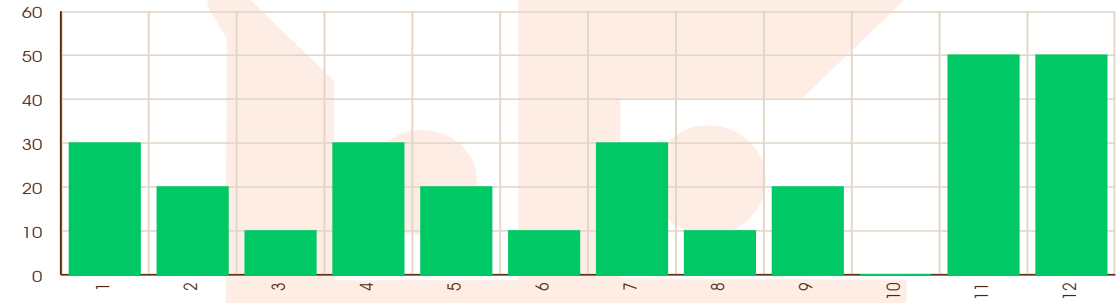

भावदृष्टि बल

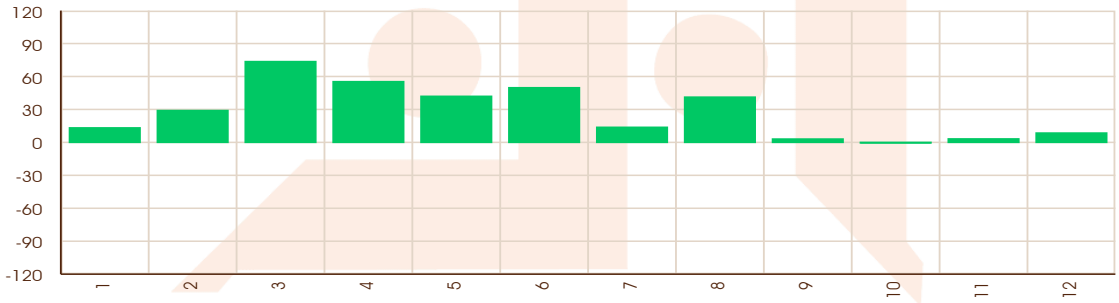

भाव बल

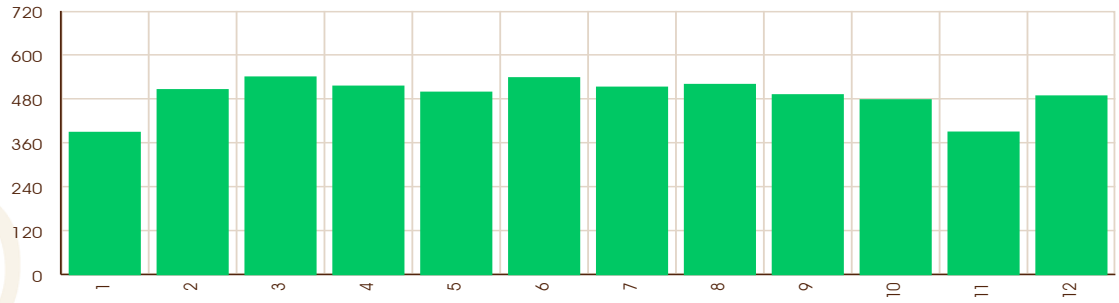

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

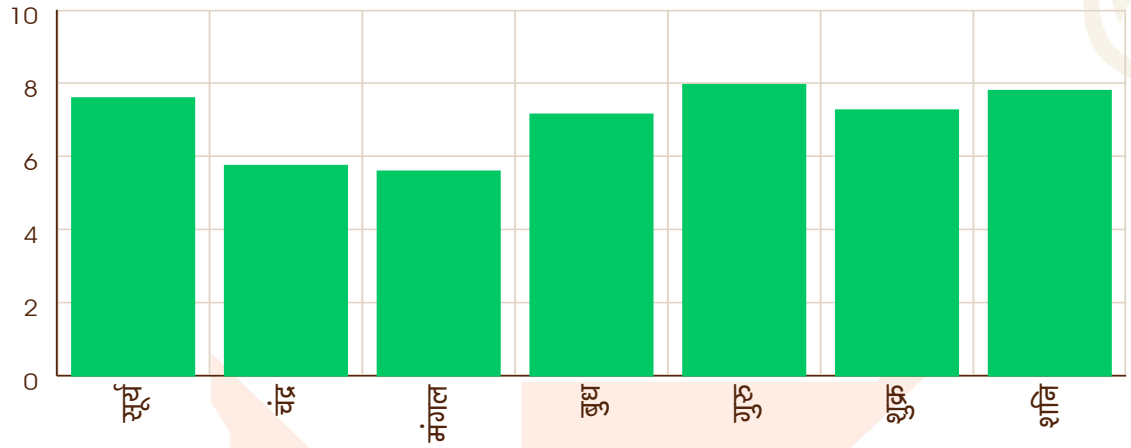

इष्ट - कष्ट फल

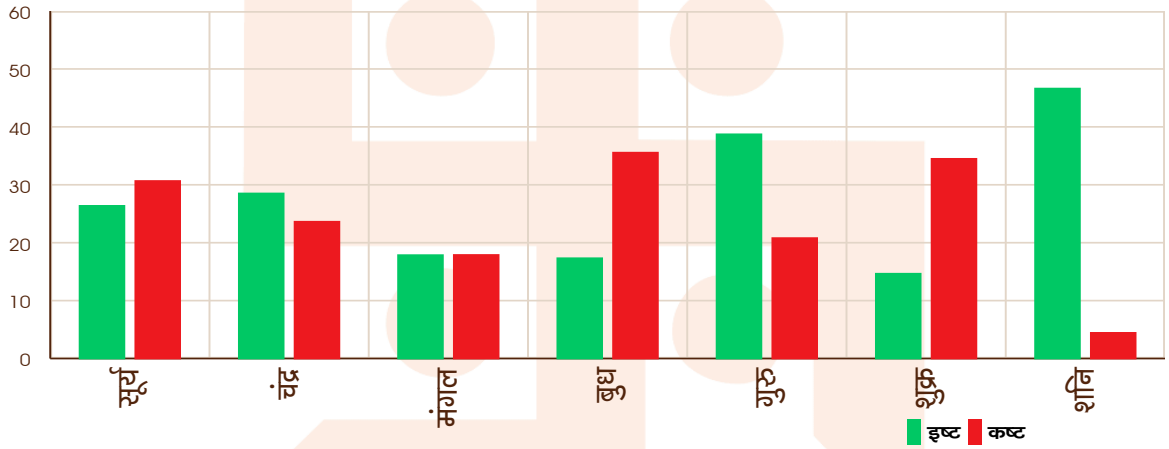

रूप भाव बल

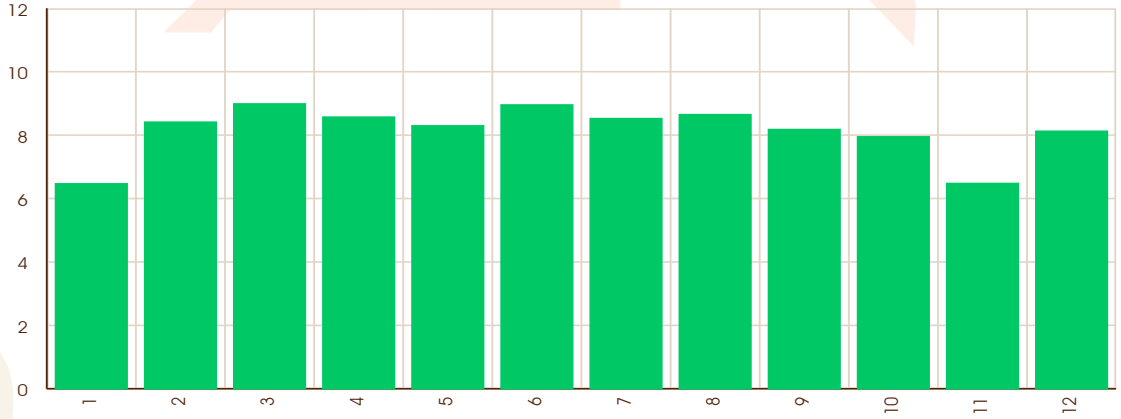

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कर्क	02:23:07	--	--	पुनर्वसु	4	7
गुलिक	गु	मेष	20:40:11	--	--	भरणी	3	2
काल	का	वृष	13:25:44	--	--	रोहिणी	2	4
मृत्यु	मृ	मिथु	23:45:00	--	--	पुनर्वसु	2	7
यमघंटक	यम	कुंभ	27:06:30	--	--	पू०भाद्रपद	3	25
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कर्क	13:16:39	--	--	पुष्य	3	8
धूम	धू	मिथु	15:12:01	--	--	आर्द्रा	3	6
व्यतिपात	व्य	मक	14:47:59	--	--	श्रवण	2	22
परिवेश	परि	कर्क	14:47:59	--	--	पुष्य	4	8
इन्द्रचाप	इ	धनु	15:12:01	उच्च	--	पूर्वाषाढ़ा	1	20
उपकेतु	उप	मक	01:52:01	--	--	उत्तराषाढ़ा	2	21

प्राणपद	:	मिथु	28:19:37	कारकाँश लग्न	:	मिथु	00:00:36
भाव लग्न	:	वृश्चि	21:42:30	होरा लग्न	:	मेष	11:01:53
घटी लग्न	:	मक	08:28:55	वर्णद लग्न	:	धनु	16:35:00

उपग्रह कुंडली

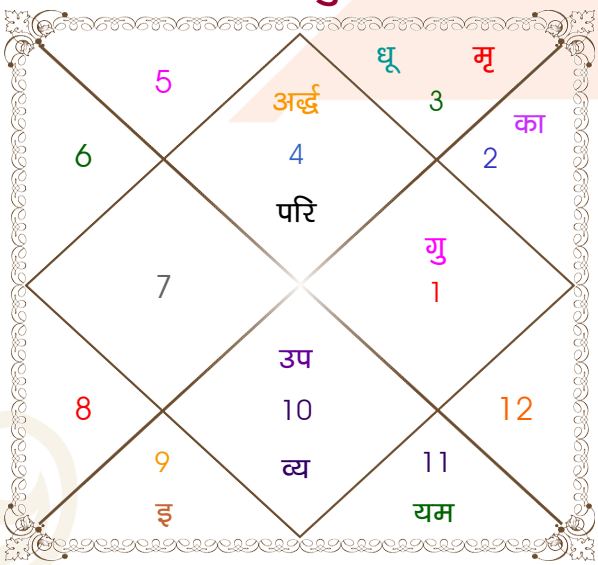

आरूढ़ कुंडली

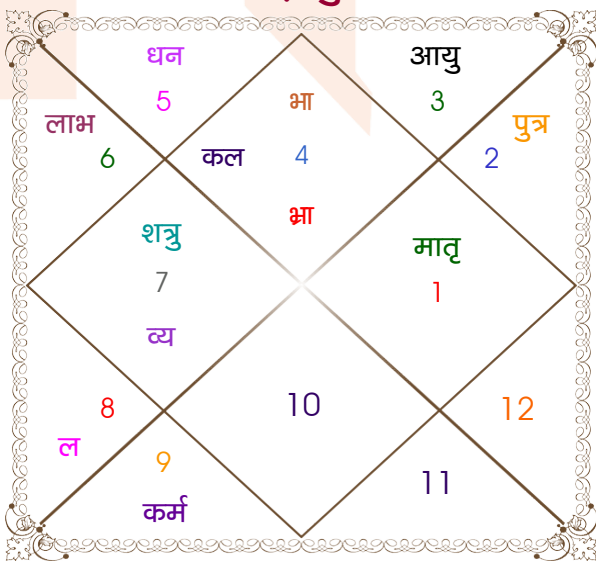

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षन्नाडी चक्र

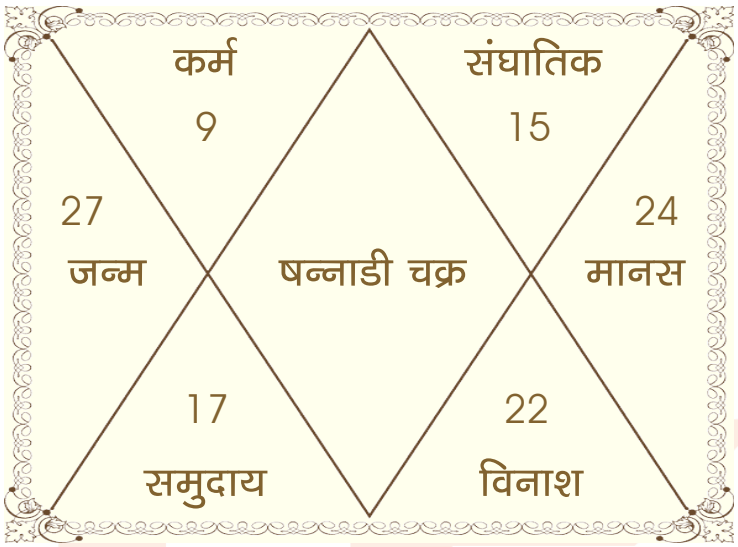

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	2	3	3	5	4	3	4	4	6	4	6	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	6
शुक्र	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	7
बुध	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
कुल	5	5	5	3	3	5	5	1	6	7	1	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
कुल	2	2	5	4	4	4	4	2	2	3	5	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
कुल	4	3	6	4	4	4	5	2	7	4	6	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	6
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	5
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
कुल	6	3	4	4	5	4	7	6	2	6	6	3	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	5
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	9
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	8
कुल	6	5	4	4	5	3	5	3	4	5	3	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	3
बुध	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	6
कुल	3	4	6	3	2	3	3	3	2	3	3	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
गुरु	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
सूर्य	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
शुक्र	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	7
बुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	4	4	2	4	6	5	5	4	4	6	1	49

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	3	2	3	3	4	3	4	6	3	2	3	39
गुरु	3	6	3	4	4	5	4	7	6	2	6	6	56
मंगल	5	4	4	4	4	2	2	3	5	2	2	2	39
सूर्य	3	5	4	3	4	4	6	4	6	4	2	3	48
शुक्र	4	5	3	5	3	4	5	3	5	6	5	4	52
बुध	6	4	4	4	5	2	7	4	6	5	4	3	54
चंद्र	5	5	3	3	5	5	1	6	7	1	3	5	49
बिन्दु	29	32	23	26	28	26	28	31	41	23	24	26	337
रेखा	27	24	33	30	28	30	28	25	15	33	32	30	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	0	1	1	1	3	0	0	0	6
गुरु	0	4	0	0	1	3	1	3	3	0	3	2	20
मंगल	1	2	2	2	0	0	0	1	1	0	0	0	9
सूर्य	0	1	2	0	1	0	4	1	3	0	0	0	12
शुक्र	1	1	0	2	0	0	2	0	2	2	2	1	13
बुध	1	2	0	1	0	0	3	1	1	3	0	0	12
चंद्र	0	4	2	0	0	4	0	3	2	0	2	2	19
रेखा	3	14	6	5	2	8	11	10	15	5	7	5	91

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	0	1	1	1	3	0	0	0	6
गुरु	0	4	0	0	1	3	1	3	1	0	3	2	18
मंगल	0	2	2	2	0	0	0	0	1	0	0	0	7
सूर्य	0	1	2	0	1	0	4	1	3	0	0	0	12
शुक्र	1	1	0	2	0	0	2	0	1	2	2	1	12
बुध	0	2	0	1	0	0	3	0	1	3	0	0	10
चंद्र	0	4	2	0	0	2	0	3	0	0	2	2	15
रेखा	1	14	6	5	2	6	11	8	10	5	7	5	80

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	99	136	53	69	162	92	47
ग्रह पिंड	30	86	20	56	109	75	5
शोध्य पिंड	129	222	73	125	271	167	52

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

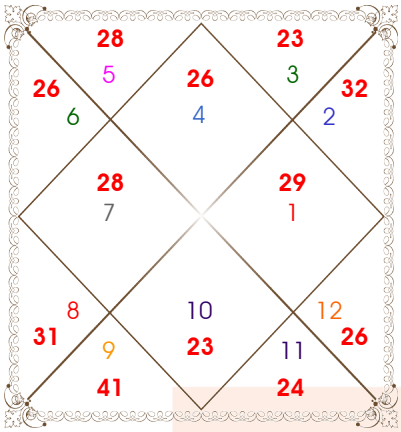

सूर्य का अष्टकवर्ग

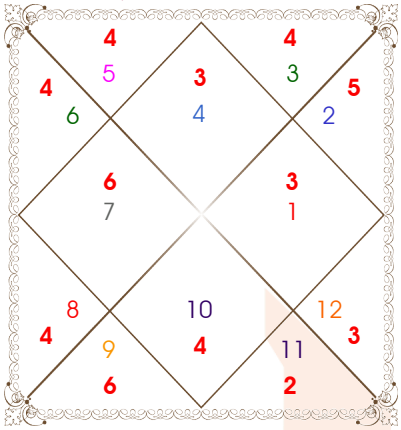

चंद्र का अष्टकवर्ग

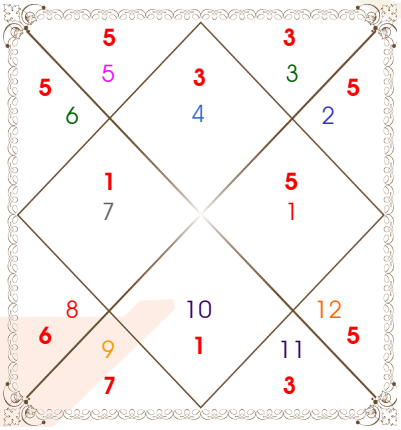

मंगल का अष्टकवर्ग

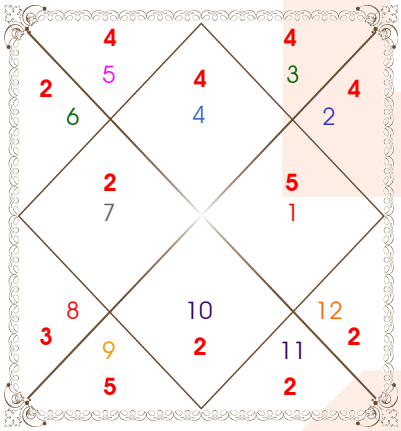

बुध का अष्टकवर्ग

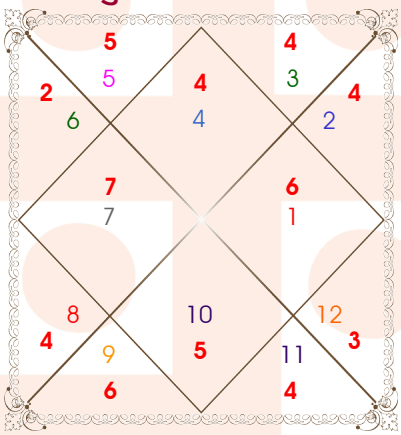

गुरू का अष्टकवर्ग

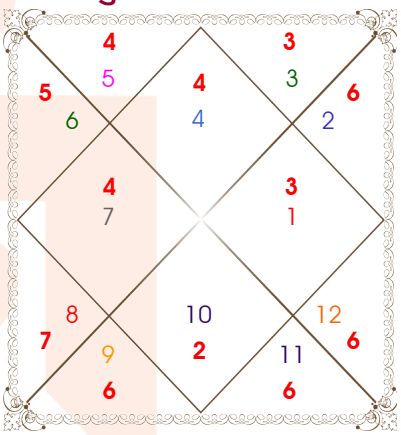

शुक्र का अष्टकवर्ग

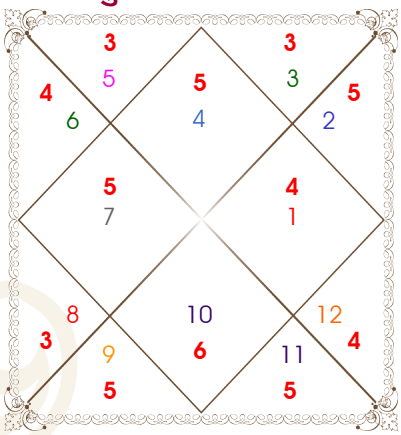

शनि का अष्टकवर्ग

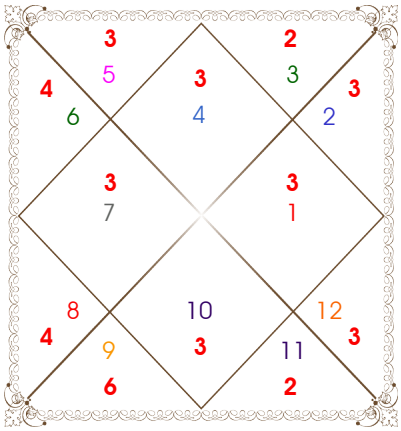

लग्न का अष्टकवर्ग

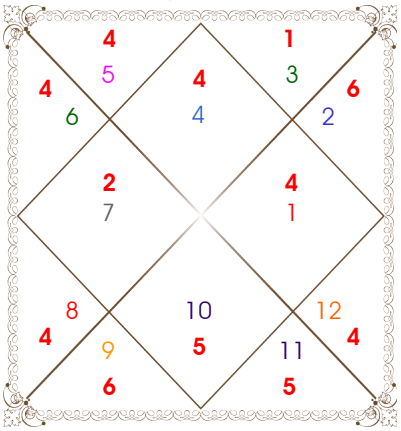

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

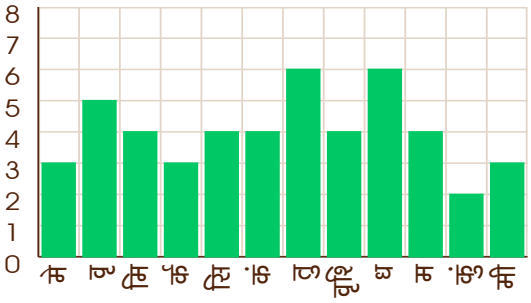

चन्द्र

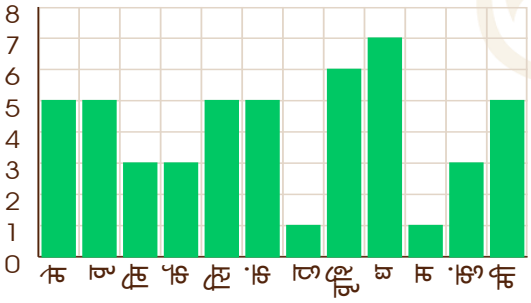

मंगल

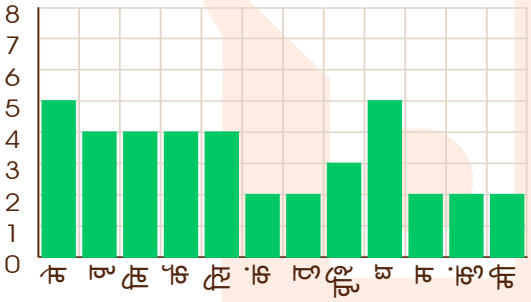

बुध

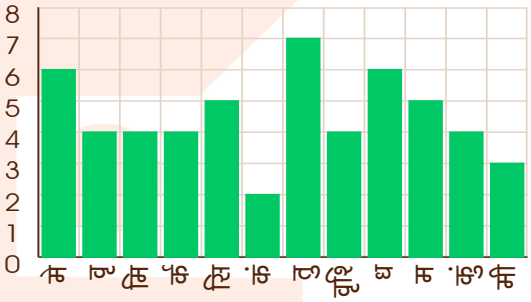

गुरु

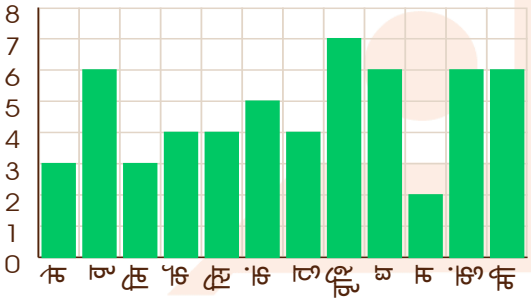

शुक्र

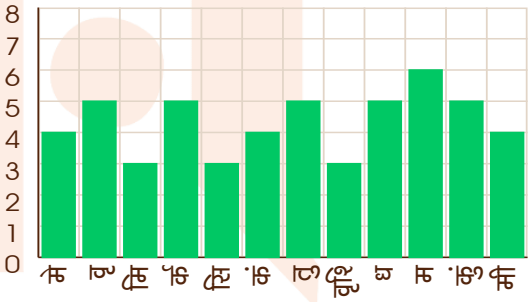

शनि

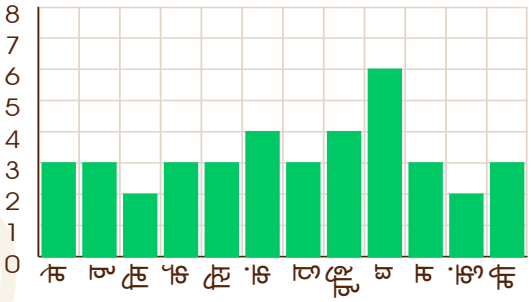

लग्न

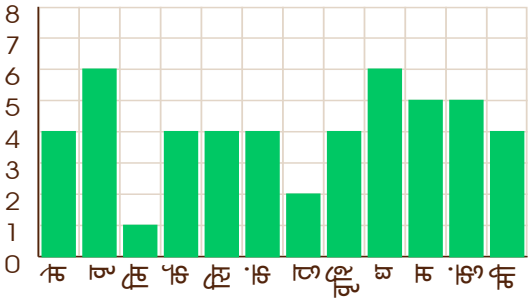

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

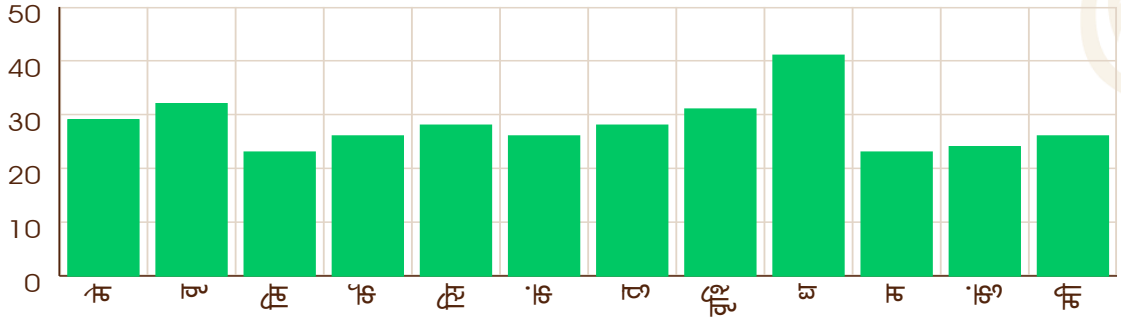

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

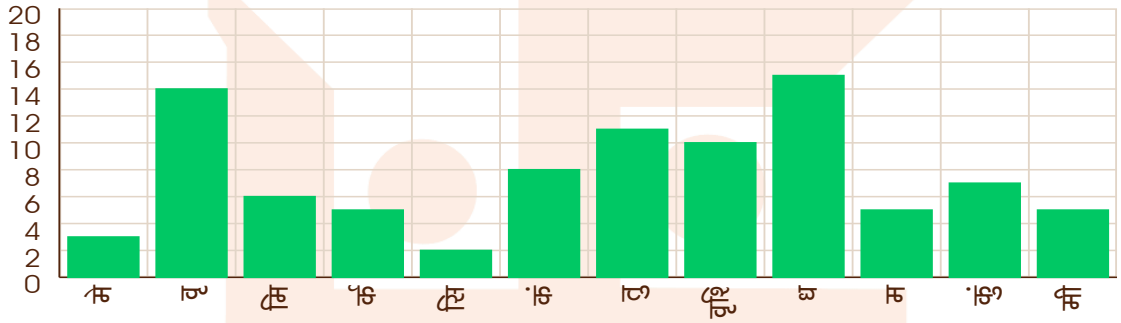

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

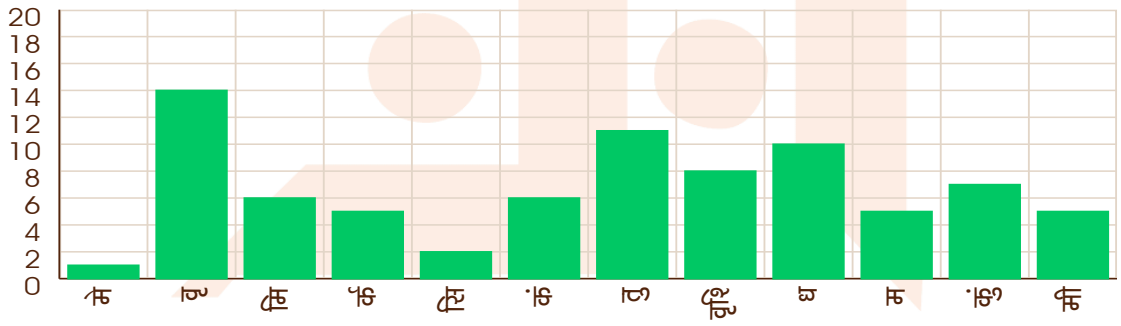

शोध्य पिंड

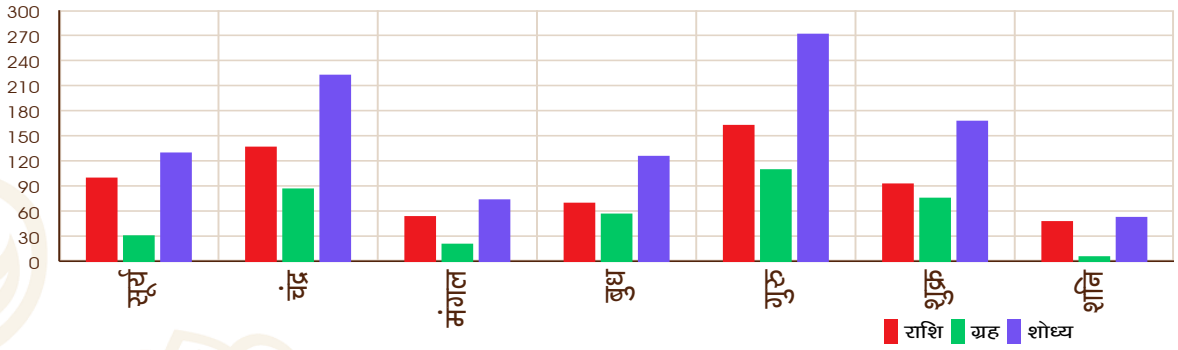

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 7 वर्ष 10 मास 30 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
14/02/2013		15/01/2021		15/01/2028		15/01/2048		15/01/2054	
15/01/2021		15/01/2028		15/01/2048		15/01/2054		15/01/2064	
	00/00/0000	केतु	13/06/2021	शुक्र	17/05/2031	सूर्य	04/05/2048	चंद्र	15/11/2054
	00/00/0000	शुक्र	13/08/2022	सूर्य	16/05/2032	चंद्र	02/11/2048	मंगल	16/06/2055
	00/00/0000	सूर्य	19/12/2022	चंद्र	15/01/2034	मंगल	10/03/2049	राहु	15/12/2056
	00/00/0000	चंद्र	20/07/2023	मंगल	17/03/2035	राहु	02/02/2050	गुरु	16/04/2058
	14/02/2013	मंगल	16/12/2023	राहु	17/03/2038	गुरु	21/11/2050	शनि	15/11/2059
मंगल	13/07/2013	राहु	02/01/2025	गुरु	15/11/2040	शनि	03/11/2051	बुध	16/04/2061
राहु	30/01/2016	गुरु	09/12/2025	शनि	15/01/2044	बुध	09/09/2052	केतु	15/11/2061
गुरु	07/05/2018	शनि	18/01/2027	बुध	15/11/2046	केतु	15/01/2053	शुक्र	17/07/2063
शनि	15/01/2021	बुध	15/01/2028	केतु	15/01/2048	शुक्र	15/01/2054	सूर्य	15/01/2064

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
15/01/2064		15/01/2071		15/01/2089		16/01/2105		16/01/2124	
15/01/2071		15/01/2089		16/01/2105		16/01/2124		00/00/0000	
मंगल	12/06/2064	राहु	27/09/2073	गुरु	05/03/2091	शनि	19/01/2108	बुध	14/06/2126
राहु	01/07/2065	गुरु	21/02/2076	शनि	15/09/2093	बुध	28/09/2110	केतु	11/06/2127
गुरु	07/06/2066	शनि	28/12/2078	बुध	22/12/2095	केतु	07/11/2111	शुक्र	11/04/2130
शनि	17/07/2067	बुध	16/07/2081	केतु	27/11/2096	शुक्र	07/01/2115	सूर्य	15/02/2131
बुध	13/07/2068	केतु	04/08/2082	शुक्र	29/07/2099	सूर्य	20/12/2115	चंद्र	17/07/2132
केतु	09/12/2068	शुक्र	03/08/2085	सूर्य	17/05/2100	चंद्र	20/07/2117	मंगल	15/02/2133
शुक्र	08/02/2070	सूर्य	28/06/2086	चंद्र	16/09/2101	मंगल	29/08/2118		00/00/0000
सूर्य	16/06/2070	चंद्र	28/12/2087	मंगल	23/08/2102	राहु	05/07/2121		00/00/0000
चंद्र	15/01/2071	मंगल	15/01/2089	राहु	16/01/2105	गुरु	16/01/2124		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 7 वर्ष 11 मा 24 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
14/02/2013		13/07/2013		30/01/2016		07/05/2018		15/01/2021	
13/07/2013		30/01/2016		07/05/2018		15/01/2021		13/06/2021	
	00/00/0000	राहु	30/11/2013	गुरु	20/05/2016	शनि	10/10/2018	केतु	23/01/2021
	00/00/0000	गुरु	03/04/2014	शनि	28/09/2016	बुध	26/02/2019	शुक्र	17/02/2021
	00/00/0000	शनि	28/08/2014	बुध	23/01/2017	केतु	25/04/2019	सूर्य	25/02/2021
	14/02/2013	बुध	07/01/2015	केतु	13/03/2017	शुक्र	06/10/2019	चंद्र	09/03/2021
बुध	05/03/2013	केतु	03/03/2015	शुक्र	29/07/2017	सूर्य	24/11/2019	मंगल	18/03/2021
केतु	26/03/2013	शुक्र	05/08/2015	सूर्य	08/09/2017	चंद्र	14/02/2020	राहु	09/04/2021
शुक्र	26/05/2013	सूर्य	21/09/2015	चंद्र	16/11/2017	मंगल	11/04/2020	गुरु	29/04/2021
सूर्य	13/06/2013	चंद्र	07/12/2015	मंगल	03/01/2018	राहु	05/09/2020	शनि	23/05/2021
चंद्र	13/07/2013	मंगल	30/01/2016	राहु	07/05/2018	गुरु	15/01/2021	बुध	13/06/2021

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
13/06/2021		13/08/2022		19/12/2022		20/07/2023		16/12/2023	
13/08/2022		19/12/2022		20/07/2023		16/12/2023		02/01/2025	
शुक्र	23/08/2021	सूर्य	19/08/2022	चंद्र	05/01/2023	मंगल	28/07/2023	राहु	11/02/2024
सूर्य	13/09/2021	चंद्र	30/08/2022	मंगल	18/01/2023	राहु	20/08/2023	गुरु	02/04/2024
चंद्र	18/10/2021	मंगल	06/09/2022	राहु	19/02/2023	गुरु	09/09/2023	शनि	02/06/2024
मंगल	12/11/2021	राहु	25/09/2022	गुरु	19/03/2023	शनि	02/10/2023	बुध	27/07/2024
राहु	15/01/2022	गुरु	13/10/2022	शनि	22/04/2023	बुध	23/10/2023	केतु	18/08/2024
गुरु	13/03/2022	शनि	02/11/2022	बुध	22/05/2023	केतु	01/11/2023	शुक्र	21/10/2024
शनि	20/05/2022	बुध	20/11/2022	केतु	04/06/2023	शुक्र	26/11/2023	सूर्य	09/11/2024
बुध	19/07/2022	केतु	27/11/2022	शुक्र	09/07/2023	सूर्य	03/12/2023	चंद्र	11/12/2024
केतु	13/08/2022	शुक्र	19/12/2022	सूर्य	20/07/2023	चंद्र	16/12/2023	मंगल	02/01/2025

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
02/01/2025		09/12/2025		18/01/2027		15/01/2028		17/05/2031	
09/12/2025		18/01/2027		15/01/2028		17/05/2031		16/05/2032	
गुरु	17/02/2025	शनि	11/02/2026	बुध	10/03/2027	शुक्र	05/08/2028	सूर्य	04/06/2031
शनि	12/04/2025	बुध	10/04/2026	केतु	31/03/2027	सूर्य	05/10/2028	चंद्र	04/07/2031
बुध	30/05/2025	केतु	03/05/2026	शुक्र	31/05/2027	चंद्र	15/01/2029	मंगल	26/07/2031
केतु	19/06/2025	शुक्र	10/07/2026	सूर्य	18/06/2027	मंगल	27/03/2029	राहु	19/09/2031
शुक्र	15/08/2025	सूर्य	30/07/2026	चंद्र	18/07/2027	राहु	25/09/2029	गुरु	06/11/2031
सूर्य	01/09/2025	चंद्र	02/09/2026	मंगल	08/08/2027	गुरु	06/03/2030	शनि	03/01/2032
चंद्र	29/09/2025	मंगल	25/09/2026	राहु	02/10/2027	शनि	15/09/2030	बुध	24/02/2032
मंगल	19/10/2025	राहु	25/11/2026	गुरु	19/11/2027	बुध	07/03/2031	केतु	16/03/2032
राहु	09/12/2025	गुरु	18/01/2027	शनि	15/01/2028	केतु	17/05/2031	शुक्र	16/05/2032

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
16/05/2032		15/01/2034		17/03/2035		17/03/2038		15/11/2040	
15/01/2034		17/03/2035		17/03/2038		15/11/2040		15/01/2044	
चंद्र	06/07/2032	मंगल	09/02/2034	राहु	28/08/2035	गुरु	25/07/2038	शनि	17/05/2041
मंगल	10/08/2032	राहु	14/04/2034	गुरु	21/01/2036	शनि	26/12/2038	बुध	28/10/2041
राहु	10/11/2032	गुरु	09/06/2034	शनि	13/07/2036	बुध	13/05/2039	केतु	03/01/2042
गुरु	30/01/2033	शनि	16/08/2034	बुध	15/12/2036	केतु	09/07/2039	शुक्र	15/07/2042
शनि	06/05/2033	बुध	15/10/2034	केतु	17/02/2037	शुक्र	18/12/2039	सूर्य	11/09/2042
बुध	31/07/2033	केतु	09/11/2034	शुक्र	19/08/2037	सूर्य	05/02/2040	चंद्र	16/12/2042
केतु	05/09/2033	शुक्र	19/01/2035	सूर्य	12/10/2037	चंद्र	26/04/2040	मंगल	22/02/2043
शुक्र	15/12/2033	सूर्य	09/02/2035	चंद्र	12/01/2038	मंगल	22/06/2040	राहु	14/08/2043
सूर्य	15/01/2034	चंद्र	17/03/2035	मंगल	17/03/2038	राहु	15/11/2040	गुरु	15/01/2044

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
15/01/2044		15/11/2046		15/01/2048		04/05/2048		02/11/2048	
15/11/2046		15/01/2048		04/05/2048		02/11/2048		10/03/2049	
बुध	10/06/2044	केतु	10/12/2046	सूर्य	21/01/2048	चंद्र	19/05/2048	मंगल	10/11/2048
केतु	09/08/2044	शुक्र	19/02/2047	चंद्र	30/01/2048	मंगल	30/05/2048	राहु	29/11/2048
शुक्र	29/01/2045	सूर्य	12/03/2047	मंगल	05/02/2048	राहु	26/06/2048	गुरु	16/12/2048
सूर्य	21/03/2045	चंद्र	17/04/2047	राहु	22/02/2048	गुरु	20/07/2048	शनि	05/01/2049
चंद्र	16/06/2045	मंगल	12/05/2047	गुरु	07/03/2048	शनि	18/08/2048	बुध	23/01/2049
मंगल	15/08/2045	राहु	15/07/2047	शनि	25/03/2048	बुध	13/09/2048	केतु	31/01/2049
राहु	17/01/2046	गुरु	09/09/2047	बुध	09/04/2048	केतु	24/09/2048	शुक्र	21/02/2049
गुरु	04/06/2046	शनि	16/11/2047	केतु	16/04/2048	शुक्र	24/10/2048	सूर्य	28/02/2049
शनि	15/11/2046	बुध	15/01/2048	शुक्र	04/05/2048	सूर्य	02/11/2048	चंद्र	10/03/2049

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
10/03/2049		02/02/2050		21/11/2050		03/11/2051		09/09/2052	
02/02/2050		21/11/2050		03/11/2051		09/09/2052		15/01/2053	
राहु	29/04/2049	गुरु	13/03/2050	शनि	15/01/2051	बुध	17/12/2051	केतु	16/09/2052
गुरु	11/06/2049	शनि	28/04/2050	बुध	05/03/2051	केतु	04/01/2052	शुक्र	07/10/2052
शनि	02/08/2049	बुध	09/06/2050	केतु	26/03/2051	शुक्र	25/02/2052	सूर्य	14/10/2052
बुध	18/09/2049	केतु	26/06/2050	शुक्र	22/05/2051	सूर्य	12/03/2052	चंद्र	24/10/2052
केतु	07/10/2049	शुक्र	13/08/2050	सूर्य	09/06/2051	चंद्र	06/04/2052	मंगल	01/11/2052
शुक्र	01/12/2049	सूर्य	28/08/2050	चंद्र	08/07/2051	मंगल	25/04/2052	राहु	20/11/2052
सूर्य	17/12/2049	चंद्र	21/09/2050	मंगल	28/07/2051	राहु	10/06/2052	गुरु	07/12/2052
चंद्र	14/01/2050	मंगल	08/10/2050	राहु	18/09/2051	गुरु	22/07/2052	शनि	27/12/2052
मंगल	02/02/2050	राहु	21/11/2050	गुरु	03/11/2051	शनि	09/09/2052	बुध	15/01/2053

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
15/01/2053		15/01/2054		15/11/2054		16/06/2055		15/12/2056	
15/01/2054		15/11/2054		16/06/2055		15/12/2056		16/04/2058	
शुक्र	16/03/2053	चंद्र	09/02/2054	मंगल	28/11/2054	राहु	06/09/2055	गुरु	18/02/2057
सूर्य	04/04/2053	मंगल	27/02/2054	राहु	30/12/2054	गुरु	18/11/2055	शनि	06/05/2057
चंद्र	04/05/2053	राहु	14/04/2054	गुरु	27/01/2055	शनि	13/02/2056	बुध	14/07/2057
मंगल	25/05/2053	गुरु	24/05/2054	शनि	02/03/2055	बुध	01/05/2056	केतु	12/08/2057
राहु	19/07/2053	शनि	11/07/2054	बुध	01/04/2055	केतु	02/06/2056	शुक्र	01/11/2057
गुरु	06/09/2053	बुध	23/08/2054	केतु	13/04/2055	शुक्र	01/09/2056	सूर्य	25/11/2057
शनि	03/11/2053	केतु	10/09/2054	शुक्र	19/05/2055	सूर्य	28/09/2056	चंद्र	05/01/2058
बुध	24/12/2053	शुक्र	31/10/2054	सूर्य	29/05/2055	चंद्र	13/11/2056	मंगल	02/02/2058
केतु	15/01/2054	सूर्य	15/11/2054	चंद्र	16/06/2055	मंगल	15/12/2056	राहु	16/04/2058

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
16/04/2058		15/11/2059		16/04/2061		15/11/2061		17/07/2063	
15/11/2059		16/04/2061		15/11/2061		17/07/2063		15/01/2064	
शनि	17/07/2058	बुध	28/01/2060	केतु	28/04/2061	शुक्र	24/02/2062	सूर्य	26/07/2063
बुध	07/10/2058	केतु	27/02/2060	शुक्र	03/06/2061	सूर्य	27/03/2062	चंद्र	10/08/2063
केतु	09/11/2058	शुक्र	23/05/2060	सूर्य	13/06/2061	चंद्र	17/05/2062	मंगल	21/08/2063
शुक्र	14/02/2059	सूर्य	18/06/2060	चंद्र	01/07/2061	मंगल	21/06/2062	राहु	17/09/2063
सूर्य	15/03/2059	चंद्र	31/07/2060	मंगल	14/07/2061	राहु	20/09/2062	गुरु	11/10/2063
चंद्र	02/05/2059	मंगल	30/08/2060	राहु	15/08/2061	गुरु	11/12/2062	शनि	09/11/2063
मंगल	05/06/2059	राहु	16/11/2060	गुरु	12/09/2061	शनि	17/03/2063	बुध	05/12/2063
राहु	30/08/2059	गुरु	24/01/2061	शनि	16/10/2061	बुध	11/06/2063	केतु	16/12/2063
गुरु	15/11/2059	शनि	16/04/2061	बुध	15/11/2061	केतु	17/07/2063	शुक्र	15/01/2064

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
15/01/2064		12/06/2064		01/07/2065		07/06/2066		17/07/2067	
12/06/2064		01/07/2065		07/06/2066		17/07/2067		13/07/2068	
मंगल	24/01/2064	राहु	09/08/2064	गुरु	15/08/2065	शनि	10/08/2066	बुध	06/09/2067
राहु	15/02/2064	गुरु	29/09/2064	शनि	08/10/2065	बुध	06/10/2066	केतु	27/09/2067
गुरु	06/03/2064	शनि	29/11/2064	बुध	26/11/2065	केतु	30/10/2066	शुक्र	26/11/2067
शनि	30/03/2064	बुध	22/01/2065	केतु	16/12/2065	शुक्र	05/01/2067	सूर्य	15/12/2067
बुध	20/04/2064	केतु	13/02/2065	शुक्र	10/02/2066	सूर्य	26/01/2067	चंद्र	14/01/2068
केतु	29/04/2064	शुक्र	18/04/2065	सूर्य	27/02/2066	चंद्र	28/02/2067	मंगल	04/02/2068
शुक्र	24/05/2064	सूर्य	08/05/2065	चंद्र	28/03/2066	मंगल	24/03/2067	राहु	29/03/2068
सूर्य	31/05/2064	चंद्र	09/06/2065	मंगल	17/04/2066	राहु	24/05/2067	गुरु	16/05/2068
चंद्र	12/06/2064	मंगल	01/07/2065	राहु	07/06/2066	गुरु	17/07/2067	शनि	13/07/2068

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु	
13/07/2068		09/12/2068		08/02/2070		16/06/2070		15/01/2071	
09/12/2068		08/02/2070		16/06/2070		15/01/2071		27/09/2073	
केतु	22/07/2068	शुक्र	18/02/2069	सूर्य	15/02/2070	चंद्र	04/07/2070	राहु	12/06/2071
शुक्र	15/08/2068	सूर्य	11/03/2069	चंद्र	25/02/2070	मंगल	16/07/2070	गुरु	21/10/2071
सूर्य	23/08/2068	चंद्र	16/04/2069	मंगल	05/03/2070	राहु	17/08/2070	शनि	26/03/2072
चंद्र	04/09/2068	मंगल	11/05/2069	राहु	24/03/2070	गुरु	15/09/2070	बुध	12/08/2072
मंगल	13/09/2068	राहु	14/07/2069	गुरु	10/04/2070	शनि	18/10/2070	केतु	09/10/2072
राहु	05/10/2068	गुरु	08/09/2069	शनि	30/04/2070	बुध	17/11/2070	शुक्र	22/03/2073
गुरु	25/10/2068	शनि	15/11/2069	बुध	18/05/2070	केतु	30/11/2070	सूर्य	10/05/2073
शनि	18/11/2068	बुध	14/01/2070	केतु	26/05/2070	शुक्र	04/01/2071	चंद्र	01/08/2073
बुध	09/12/2068	केतु	08/02/2070	शुक्र	16/06/2070	सूर्य	15/01/2071	मंगल	27/09/2073

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
27/09/2073		21/02/2076		28/12/2078		16/07/2081		04/08/2082	
21/02/2076		28/12/2078		16/07/2081		04/08/2082		03/08/2085	
गुरु	22/01/2074	शनि	04/08/2076	बुध	09/05/2079	केतु	08/08/2081	शुक्र	02/02/2083
शनि	10/06/2074	बुध	29/12/2076	केतु	02/07/2079	शुक्र	10/10/2081	सूर्य	29/03/2083
बुध	12/10/2074	केतु	28/02/2077	शुक्र	04/12/2079	सूर्य	30/10/2081	चंद्र	28/06/2083
केतु	02/12/2074	शुक्र	20/08/2077	सूर्य	20/01/2080	चंद्र	01/12/2081	मंगल	31/08/2083
शुक्र	27/04/2075	सूर्य	11/10/2077	चंद्र	06/04/2080	मंगल	23/12/2081	राहु	12/02/2084
सूर्य	10/06/2075	चंद्र	06/01/2078	मंगल	31/05/2080	राहु	18/02/2082	गुरु	07/07/2084
चंद्र	22/08/2075	मंगल	08/03/2078	राहु	17/10/2080	गुरु	11/04/2082	शनि	27/12/2084
मंगल	12/10/2075	राहु	11/08/2078	गुरु	19/02/2081	शनि	10/06/2082	बुध	31/05/2085
राहु	21/02/2076	गुरु	28/12/2078	शनि	16/07/2081	बुध	04/08/2082	केतु	03/08/2085

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
03/08/2085		28/06/2086		28/12/2087		15/01/2089		05/03/2091	
28/06/2086		28/12/2087		15/01/2089		05/03/2091		15/09/2093	
सूर्य	20/08/2085	चंद्र	13/08/2086	मंगल	19/01/2088	गुरु	28/04/2089	शनि	29/07/2091
चंद्र	16/09/2085	मंगल	14/09/2086	राहु	17/03/2088	शनि	30/08/2089	बुध	07/12/2091
मंगल	05/10/2085	राहु	05/12/2086	गुरु	07/05/2088	बुध	18/12/2089	केतु	30/01/2092
राहु	24/11/2085	गुरु	16/02/2087	शनि	07/07/2088	केतु	02/02/2090	शुक्र	02/07/2092
गुरु	07/01/2086	शनि	14/05/2087	बुध	30/08/2088	शुक्र	11/06/2090	सूर्य	18/08/2092
शनि	28/02/2086	बुध	30/07/2087	केतु	21/09/2088	सूर्य	20/07/2090	चंद्र	03/11/2092
बुध	15/04/2086	केतु	31/08/2087	शुक्र	24/11/2088	चंद्र	23/09/2090	मंगल	27/12/2092
केतु	04/05/2086	शुक्र	01/12/2087	सूर्य	14/12/2088	मंगल	08/11/2090	राहु	15/05/2093
शुक्र	28/06/2086	सूर्य	28/12/2087	चंद्र	15/01/2089	राहु	05/03/2091	गुरु	15/09/2093

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
15/09/2093		22/12/2095		27/11/2096		29/07/2099		17/05/2100	
22/12/2095		27/11/2096		29/07/2099		17/05/2100		16/09/2101	
बुध	10/01/2094	केतु	11/01/2096	शुक्र	08/05/2097	सूर्य	12/08/2099	चंद्र	27/06/2100
केतु	28/02/2094	शुक्र	08/03/2096	सूर्य	26/06/2097	चंद्र	06/09/2099	मंगल	25/07/2100
शुक्र	16/07/2094	सूर्य	25/03/2096	चंद्र	15/09/2097	मंगल	23/09/2099	राहु	06/10/2100
सूर्य	26/08/2094	चंद्र	22/04/2096	मंगल	11/11/2097	राहु	06/11/2099	गुरु	10/12/2100
चंद्र	03/11/2094	मंगल	12/05/2096	राहु	06/04/2098	गुरु	15/12/2099	शनि	25/02/2101
मंगल	21/12/2094	राहु	02/07/2096	गुरु	14/08/2098	शनि	30/01/2100	बुध	05/05/2101
राहु	24/04/2095	गुरु	17/08/2096	शनि	15/01/2099	बुध	12/03/2100	केतु	02/06/2101
गुरु	13/08/2095	शनि	10/10/2096	बुध	02/06/2099	केतु	29/03/2100	शुक्र	23/08/2101
शनि	22/12/2095	बुध	27/11/2096	केतु	29/07/2099	शुक्र	17/05/2100	सूर्य	16/09/2101

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
16/09/2101		23/08/2102		16/01/2105		19/01/2108		28/09/2110	
23/08/2102		16/01/2105		19/01/2108		28/09/2110		07/11/2111	
मंगल	06/10/2101	राहु	01/01/2103	शनि	08/07/2105	बुध	07/06/2108	केतु	22/10/2110
राहु	26/11/2101	गुरु	28/04/2103	बुध	11/12/2105	केतु	03/08/2108	शुक्र	29/12/2110
गुरु	10/01/2102	शनि	14/09/2103	केतु	13/02/2106	शुक्र	14/01/2109	सूर्य	18/01/2111
शनि	05/03/2102	बुध	16/01/2104	शुक्र	15/08/2106	सूर्य	04/03/2109	चंद्र	20/02/2111
बुध	23/04/2102	केतु	07/03/2104	सूर्य	09/10/2106	चंद्र	25/05/2109	मंगल	16/03/2111
केतु	13/05/2102	शुक्र	31/07/2104	चंद्र	09/01/2107	मंगल	21/07/2109	राहु	16/05/2111
शुक्र	08/07/2102	सूर्य	13/09/2104	मंगल	14/03/2107	राहु	16/12/2109	गुरु	09/07/2111
सूर्य	26/07/2102	चंद्र	25/11/2104	राहु	26/08/2107	गुरु	26/04/2110	शनि	11/09/2111
चंद्र	23/08/2102	मंगल	16/01/2105	गुरु	19/01/2108	शनि	28/09/2110	बुध	07/11/2111

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
07/11/2111		07/01/2115		20/12/2115		20/07/2117		29/08/2118	
07/01/2115		20/12/2115		20/07/2117		29/08/2118		05/07/2121	
शुक्र	18/05/2112	सूर्य	24/01/2115	चंद्र	06/02/2116	मंगल	13/08/2117	राहु	01/02/2119
सूर्य	15/07/2112	चंद्र	22/02/2115	मंगल	11/03/2116	राहु	13/10/2117	गुरु	20/06/2119
चंद्र	19/10/2112	मंगल	14/03/2115	राहु	06/06/2116	गुरु	05/12/2117	शनि	02/12/2119
मंगल	26/12/2112	राहु	05/05/2115	गुरु	22/08/2116	शनि	08/02/2118	बुध	27/04/2120
राहु	17/06/2113	गुरु	21/06/2115	शनि	21/11/2116	बुध	06/04/2118	केतु	27/06/2120
गुरु	18/11/2113	शनि	15/08/2115	बुध	11/02/2117	केतु	30/04/2118	शुक्र	17/12/2120
शनि	21/05/2114	बुध	03/10/2115	केतु	17/03/2117	शुक्र	06/07/2118	सूर्य	07/02/2121
बुध	31/10/2114	केतु	23/10/2115	शुक्र	21/06/2117	सूर्य	26/07/2118	चंद्र	05/05/2121
केतु	07/01/2115	शुक्र	20/12/2115	सूर्य	20/07/2117	चंद्र	29/08/2118	मंगल	05/07/2121

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

केतु - गुरु - मंगल	
29/09/2025 17:13	
19/10/2025 14:29	
मंगल	30/09/2025 21:04
राहु	03/10/2025 20:39
गुरु	06/10/2025 12:17
शनि	09/10/2025 15:51
बुध	12/10/2025 11:28
केतु	13/10/2025 15:18
शुक्र	16/10/2025 22:51
सूर्य	17/10/2025 22:43
चंद्र	19/10/2025 14:29

केतु - गुरु - राहु	
19/10/2025 14:29	
09/12/2025 17:43	
राहु	27/10/2025 06:34
गुरु	03/11/2025 02:12
शनि	11/11/2025 04:31
बुध	18/11/2025 10:22
केतु	21/11/2025 09:58
शुक्र	29/11/2025 22:30
सूर्य	02/12/2025 11:52
चंद्र	06/12/2025 18:08
मंगल	09/12/2025 17:43

केतु - शनि - शनि	
09/12/2025 17:43	
11/02/2026 20:02	
शनि	19/12/2025 21:17
बुध	28/12/2025 23:13
केतु	01/01/2026 16:57
शुक्र	12/01/2026 09:20
सूर्य	15/01/2026 14:15
चंद्र	20/01/2026 22:27
मंगल	24/01/2026 16:11
राहु	03/02/2026 06:55
गुरु	11/02/2026 20:02

केतु - शनि - बुध	
11/02/2026 20:02	
10/04/2026 04:25	
बुध	19/02/2026 23:01
केतु	23/02/2026 07:19
शुक्र	04/03/2026 20:42
सूर्य	07/03/2026 17:32
चंद्र	12/03/2026 12:13
मंगल	15/03/2026 20:31
राहु	24/03/2026 10:58
गुरु	01/04/2026 02:29
शनि	10/04/2026 04:25

केतु - शनि - केतु	
10/04/2026 04:25	
03/05/2026 19:10	
केतु	11/04/2026 13:29
शुक्र	15/04/2026 11:56
सूर्य	16/04/2026 16:16
चंद्र	18/04/2026 15:30
मंगल	20/04/2026 00:34
राहु	23/04/2026 13:34
गुरु	26/04/2026 17:08
शनि	30/04/2026 10:52
बुध	03/05/2026 19:10

केतु - शनि - शुक्र	
03/05/2026 19:10	
10/07/2026 06:26	
शुक्र	15/05/2026 01:02
सूर्य	18/05/2026 10:00
चंद्र	24/05/2026 00:57
मंगल	27/05/2026 23:24
राहु	07/06/2026 02:18
गुरु	16/06/2026 02:12
शनि	26/06/2026 18:35
बुध	06/07/2026 07:59
केतु	10/07/2026 06:26

केतु - शनि - सूर्य	
10/07/2026 06:26	
30/07/2026 12:13	
सूर्य	11/07/2026 06:44
चंद्र	12/07/2026 23:12
मंगल	14/07/2026 03:33
राहु	17/07/2026 04:25
गुरु	19/07/2026 21:11
शनि	23/07/2026 02:06
बुध	25/07/2026 22:55
केतु	27/07/2026 03:15
शुक्र	30/07/2026 12:13

केतु - शनि - चंद्र	
30/07/2026 12:13	
02/09/2026 05:51	
चंद्र	02/08/2026 07:41
मंगल	04/08/2026 06:55
राहु	09/08/2026 08:22
गुरु	13/08/2026 20:19
शनि	19/08/2026 04:30
बुध	23/08/2026 23:12
केतु	25/08/2026 22:26
शुक्र	31/08/2026 13:23
सूर्य	02/09/2026 05:51

केतु - शनि - मंगल	
02/09/2026 05:51	
25/09/2026 20:36	
मंगल	03/09/2026 14:55
राहु	07/09/2026 03:56
गुरु	10/09/2026 07:30
शनि	14/09/2026 01:14
बुध	17/09/2026 09:31
केतु	18/09/2026 18:35
शुक्र	22/09/2026 17:02
सूर्य	23/09/2026 21:22
चंद्र	25/09/2026 20:36

केतु - शनि - राहु	
25/09/2026 20:36	
25/11/2026 13:57	
राहु	04/10/2026 23:12
गुरु	13/10/2026 01:31
शनि	22/10/2026 16:16
बुध	31/10/2026 06:43
केतु	03/11/2026 19:44
शुक्र	13/11/2026 22:38
सूर्य	16/11/2026 23:30
चंद्र	22/11/2026 00:56
मंगल	25/11/2026 13:57

केतु - शनि - गुरु	
25/11/2026 13:57	
18/01/2027 13:22	
गुरु	02/12/2026 18:40
शनि	11/12/2026 07:47
बुध	18/12/2026 23:18
केतु	22/12/2026 02:52
शुक्र	31/12/2026 02:46
सूर्य	02/01/2027 19:32
चंद्र	07/01/2027 07:30
मंगल	10/01/2027 11:03
राहु	18/01/2027 13:22

केतु - बुध - बुध	
18/01/2027 13:22	
10/03/2027 20:52	
बुध	25/01/2027 19:50
केतु	28/01/2027 19:40
शुक्र	06/02/2027 08:55
सूर्य	08/02/2027 22:30
चंद्र	13/02/2027 05:07
मंगल	16/02/2027 04:58
राहु	23/02/2027 21:41
गुरु	02/03/2027 17:53
शनि	10/03/2027 20:52

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

केतु - बुध - केतु		केतु - बुध - शुक्र		केतु - बुध - सूर्य		केतु - बुध - चंद्र	
10/03/2027 20:52		31/03/2027 23:58		31/05/2027 08:47		18/06/2027 11:26	
31/03/2027 23:58		31/05/2027 08:47		18/06/2027 11:26		18/07/2027 15:51	
केतु	12/03/2027 02:27	शुक्र	11/04/2027 01:26	सूर्य	01/06/2027 06:31	चंद्र	20/06/2027 23:48
शुक्र	15/03/2027 14:58	सूर्य	14/04/2027 01:52	चंद्र	02/06/2027 18:44	मंगल	22/06/2027 18:04
सूर्य	16/03/2027 16:19	चंद्र	19/04/2027 02:37	मंगल	03/06/2027 20:06	राहु	27/06/2027 06:43
चंद्र	18/03/2027 10:35	मंगल	22/04/2027 15:07	राहु	06/06/2027 13:17	गुरु	01/07/2027 07:19
मंगल	19/03/2027 16:10	राहु	01/05/2027 16:27	गुरु	08/06/2027 23:15	शनि	06/07/2027 02:00
राहु	22/03/2027 20:13	गुरु	09/05/2027 17:37	शनि	11/06/2027 20:04	बुध	10/07/2027 08:38
गुरु	25/03/2027 15:50	शनि	19/05/2027 07:01	बुध	14/06/2027 09:38	केतु	12/07/2027 02:53
शनि	29/03/2027 00:07	बुध	27/05/2027 20:16	केतु	15/06/2027 11:00	शुक्र	17/07/2027 03:38
बुध	31/03/2027 23:58	केतु	31/05/2027 08:47	शुक्र	18/06/2027 11:26	सूर्य	18/07/2027 15:51

केतु - बुध - मंगल		केतु - बुध - राहु		केतु - बुध - गुरु		केतु - बुध - शनि	
18/07/2027 15:51		08/08/2027 18:56		02/10/2027 02:53		19/11/2027 09:56	
08/08/2027 18:56		02/10/2027 02:53		19/11/2027 09:56		15/01/2028 18:19	
मंगल	19/07/2027 21:26	राहु	16/08/2027 22:32	गुरु	08/10/2027 13:25	शनि	28/11/2027 11:52
राहु	23/07/2027 01:29	गुरु	24/08/2027 04:23	शनि	16/10/2027 04:56	बुध	06/12/2027 14:51
गुरु	25/07/2027 21:06	शनि	01/09/2027 18:51	बुध	23/10/2027 01:08	केतु	09/12/2027 23:08
शनि	29/07/2027 05:23	बुध	09/09/2027 11:34	केतु	25/10/2027 20:45	शुक्र	19/12/2027 12:32
बुध	01/08/2027 05:14	केतु	12/09/2027 15:38	शुक्र	02/11/2027 21:56	सूर्य	22/12/2027 09:21
केतु	02/08/2027 10:48	शुक्र	21/09/2027 16:57	सूर्य	05/11/2027 07:53	चंद्र	27/12/2027 04:03
शुक्र	05/08/2027 23:19	सूर्य	24/09/2027 10:09	चंद्र	09/11/2027 08:28	मंगल	30/12/2027 12:21
सूर्य	07/08/2027 00:41	चंद्र	28/09/2027 22:49	मंगल	12/11/2027 04:05	राहु	08/01/2028 02:48
चंद्र	08/08/2027 18:56	मंगल	02/10/2027 02:53	राहु	19/11/2027 09:56	गुरु	15/01/2028 18:19

शुक्र - शुक्र - शुक्र		शुक्र - शुक्र - सूर्य		शुक्र - शुक्र - चंद्र		शुक्र - शुक्र - मंगल	
15/01/2028 18:19		05/08/2028 16:19		05/10/2028 13:19		15/01/2029 00:19	
05/08/2028 16:19		05/10/2028 13:19		15/01/2029 00:19		27/03/2029 00:49	
शुक्र	18/02/2028 13:59	सूर्य	08/08/2028 17:22	चंद्र	14/10/2028 00:14	मंगल	19/01/2029 03:45
सूर्य	28/02/2028 17:29	चंद्र	13/08/2028 19:07	मंगल	19/10/2028 22:17	राहु	29/01/2029 19:26
चंद्र	16/03/2028 15:19	मंगल	17/08/2028 08:21	राहु	04/11/2028 03:32	गुरु	08/02/2029 06:42
मंगल	28/03/2028 11:24	राहु	26/08/2028 11:30	गुरु	17/11/2028 16:12	शनि	19/02/2029 12:34
राहु	27/04/2028 21:54	गुरु	03/09/2028 14:18	शनि	03/12/2028 17:44	बुध	01/03/2029 14:03
गुरु	24/05/2028 23:14	शनि	13/09/2028 05:37	बुध	18/12/2028 02:42	केतु	05/03/2029 17:28
शनि	26/06/2028 02:19	बुध	21/09/2028 20:36	केतु	24/12/2028 00:44	शुक्र	17/03/2029 13:33
बुध	24/07/2028 20:14	केतु	25/09/2028 09:49	शुक्र	09/01/2029 22:34	सूर्य	21/03/2029 02:47
केतु	05/08/2028 16:19	शुक्र	05/10/2028 13:19	सूर्य	15/01/2029 00:19	चंद्र	27/03/2029 00:49

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - शुक्र - राहु		शुक्र - शुक्र - गुरु		शुक्र - शुक्र - शनि		शुक्र - शुक्र - बुध	
27/03/2029 00:49		25/09/2029 15:49		06/03/2030 23:49		15/09/2030 18:19	
25/09/2029 15:49		06/03/2030 23:49		15/09/2030 18:19		07/03/2031 05:49	
राहु	23/04/2029 10:16	गुरु	17/10/2029 07:17	शनि	06/04/2030 12:21	बुध	10/10/2030 04:45
गुरु	17/05/2029 18:40	शनि	12/11/2029 00:09	बुध	03/05/2030 19:46	केतु	20/10/2030 06:13
शनि	15/06/2029 16:39	बुध	05/12/2029 00:05	केतु	15/05/2030 01:39	शुक्र	18/11/2030 00:08
बुध	11/07/2029 13:34	केतु	14/12/2029 11:21	शुक्र	16/06/2030 04:44	सूर्य	26/11/2030 15:07
केतु	22/07/2029 05:15	शुक्र	10/01/2030 12:41	सूर्य	25/06/2030 20:04	चंद्र	11/12/2030 00:04
शुक्र	21/08/2029 15:45	सूर्य	18/01/2030 15:29	चंद्र	11/07/2030 21:36	मंगल	21/12/2030 01:33
सूर्य	30/08/2029 18:54	चंद्र	01/02/2030 04:09	मंगल	23/07/2030 03:29	राहु	15/01/2031 22:28
चंद्र	15/09/2029 00:09	मंगल	10/02/2030 15:25	राहु	21/08/2030 01:27	गुरु	07/02/2031 22:24
मंगल	25/09/2029 15:49	राहु	06/03/2030 23:49	गुरु	15/09/2030 18:19	शनि	07/03/2031 05:49

शुक्र - शुक्र - केतु		शुक्र - सूर्य - सूर्य		शुक्र - सूर्य - चंद्र		शुक्र - सूर्य - मंगल	
07/03/2031 05:49		17/05/2031 06:19		04/06/2031 12:37		04/07/2031 23:07	
17/05/2031 06:19		04/06/2031 12:37		04/07/2031 23:07		26/07/2031 06:28	
केतु	11/03/2031 09:15	सूर्य	18/05/2031 04:14	चंद्र	07/06/2031 01:30	मंगल	06/07/2031 04:57
शुक्र	23/03/2031 05:20	चंद्र	19/05/2031 16:46	मंगल	08/06/2031 20:07	राहु	09/07/2031 09:39
सूर्य	26/03/2031 18:34	मंगल	20/05/2031 18:20	राहु	13/06/2031 09:41	गुरु	12/07/2031 05:50
चंद्र	01/04/2031 16:36	राहु	23/05/2031 12:04	गुरु	17/06/2031 11:05	शनि	15/07/2031 14:48
मंगल	05/04/2031 20:02	गुरु	25/05/2031 22:31	शनि	22/06/2031 06:45	बुध	18/07/2031 15:14
राहु	16/04/2031 11:42	शनि	28/05/2031 19:55	बुध	26/06/2031 14:14	केतु	19/07/2031 21:04
गुरु	25/04/2031 22:58	बुध	31/05/2031 10:00	केतु	28/06/2031 08:51	शुक्र	23/07/2031 10:17
शनि	07/05/2031 04:51	केतु	01/06/2031 11:34	शुक्र	03/07/2031 10:36	सूर्य	24/07/2031 11:52
बुध	17/05/2031 06:19	शुक्र	04/06/2031 12:37	सूर्य	04/07/2031 23:07	चंद्र	26/07/2031 06:28

शुक्र - सूर्य - राहु		शुक्र - सूर्य - गुरु		शुक्र - सूर्य - शनि		शुक्र - सूर्य - बुध	
26/07/2031 06:28		19/09/2031 01:22		06/11/2031 18:10		03/01/2032 14:07	
19/09/2031 01:22		06/11/2031 18:10		03/01/2032 14:07		24/02/2032 07:58	
राहु	03/08/2031 11:42	गुरु	25/09/2031 13:13	शनि	15/11/2031 21:56	बुध	10/01/2032 22:03
गुरु	10/08/2031 19:02	शनि	03/10/2031 06:16	बुध	24/11/2031 02:33	केतु	13/01/2032 22:29
शनि	19/08/2031 11:13	बुध	10/10/2031 03:51	केतु	27/11/2031 11:31	शुक्र	22/01/2032 13:28
बुध	27/08/2031 05:30	केतु	13/10/2031 00:02	शुक्र	07/12/2031 02:51	सूर्य	25/01/2032 03:34
केतु	30/08/2031 10:12	शुक्र	21/10/2031 02:50	सूर्य	10/12/2031 00:15	चंद्र	29/01/2032 11:03
शुक्र	08/09/2031 13:21	सूर्य	23/10/2031 13:16	चंद्र	14/12/2031 19:54	मंगल	01/02/2032 11:29
सूर्य	11/09/2031 07:06	चंद्र	27/10/2031 14:40	मंगल	18/12/2031 04:52	राहु	09/02/2032 05:46
चंद्र	15/09/2031 20:40	मंगल	30/10/2031 10:51	राहु	26/12/2031 21:04	गुरु	16/02/2032 03:21
मंगल	19/09/2031 01:22	राहु	06/11/2031 18:10	गुरु	03/01/2032 14:07	शनि	24/02/2032 07:58

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - सूर्य - केतु		शुक्र - सूर्य - शुक्र		शुक्र - चंद्र - चंद्र		शुक्र - चंद्र - मंगल	
24/02/2032 07:58		16/03/2032 15:19		16/05/2032 12:19		06/07/2032 05:49	
16/03/2032 15:19		16/05/2032 12:19		06/07/2032 05:49		10/08/2032 18:04	
केतु	25/02/2032 13:48	शुक्र	26/03/2032 18:49	चंद्र	20/05/2032 17:47	मंगल	08/07/2032 07:32
शुक्र	29/02/2032 03:01	सूर्य	29/03/2032 19:52	मंगल	23/05/2032 16:48	राहु	13/07/2032 15:22
सूर्य	01/03/2032 04:36	चंद्र	03/04/2032 21:37	राहु	31/05/2032 07:26	गुरु	18/07/2032 09:00
चंद्र	02/03/2032 23:12	मंगल	07/04/2032 10:51	गुरु	07/06/2032 01:46	शनि	23/07/2032 23:57
मंगल	04/03/2032 05:02	राहु	16/04/2032 14:00	शनि	15/06/2032 02:32	बुध	29/07/2032 00:41
राहु	07/03/2032 09:44	गुरु	24/04/2032 16:48	बुध	22/06/2032 07:01	केतु	31/07/2032 02:24
गुरु	10/03/2032 05:55	शनि	04/05/2032 08:07	केतु	25/06/2032 06:02	शुक्र	06/08/2032 00:26
शनि	13/03/2032 14:53	बुध	12/05/2032 23:06	शुक्र	03/07/2032 16:57	सूर्य	07/08/2032 19:03
बुध	16/03/2032 15:19	केतु	16/05/2032 12:19	सूर्य	06/07/2032 05:49	चंद्र	10/08/2032 18:04

शुक्र - चंद्र - राहु		शुक्र - चंद्र - गुरु		शुक्र - चंद्र - शनि		शुक्र - चंद्र - बुध	
10/08/2032 18:04		10/11/2032 01:34		30/01/2033 05:34		06/05/2033 14:49	
10/11/2032 01:34		30/01/2033 05:34		06/05/2033 14:49		31/07/2033 20:34	
राहु	24/08/2032 10:48	गुरु	20/11/2032 21:18	शनि	14/02/2033 11:50	बुध	18/05/2033 20:02
गुरु	05/09/2032 15:00	शनि	03/12/2032 17:44	बुध	28/02/2033 03:33	केतु	23/05/2033 20:46
शनि	20/09/2032 01:59	बुध	15/12/2032 05:42	केतु	05/03/2033 18:29	शुक्र	07/06/2033 05:44
बुध	03/10/2032 00:27	केतु	19/12/2032 23:20	शुक्र	21/03/2033 20:02	सूर्य	11/06/2033 13:13
केतु	08/10/2032 08:17	शुक्र	02/01/2033 12:00	सूर्य	26/03/2033 15:41	चंद्र	18/06/2033 17:42
शुक्र	23/10/2032 13:32	सूर्य	06/01/2033 13:24	चंद्र	03/04/2033 16:28	मंगल	23/06/2033 18:26
सूर्य	28/10/2032 03:07	चंद्र	13/01/2033 07:44	मंगल	09/04/2033 07:24	राहु	06/07/2033 16:54
चंद्र	04/11/2032 17:44	मंगल	18/01/2033 01:22	राहु	23/04/2033 18:23	गुरु	18/07/2033 04:52
मंगल	10/11/2032 01:34	राहु	30/01/2033 05:34	गुरु	06/05/2033 14:49	शनि	31/07/2033 20:34

शुक्र - चंद्र - केतु		शुक्र - चंद्र - शुक्र		शुक्र - चंद्र - सूर्य		शुक्र - मंगल - मंगल	
31/07/2033 20:34		05/09/2033 08:49		15/12/2033 19:49		15/01/2034 06:19	
05/09/2033 08:49		15/12/2033 19:49		15/01/2034 06:19		09/02/2034 02:54	
केतु	02/08/2033 22:17	शुक्र	22/09/2033 06:39	सूर्य	17/12/2033 08:21	मंगल	16/01/2034 17:07
शुक्र	08/08/2033 20:20	सूर्य	27/09/2033 08:24	चंद्र	19/12/2033 21:13	राहु	20/01/2034 10:36
सूर्य	10/08/2033 14:56	चंद्र	05/10/2033 19:19	मंगल	21/12/2033 15:50	गुरु	23/01/2034 18:09
चंद्र	13/08/2033 13:58	मंगल	11/10/2033 17:22	राहु	26/12/2033 05:25	शनि	27/01/2034 16:37
मंगल	15/08/2033 15:41	राहु	26/10/2033 22:37	गुरु	30/12/2033 06:49	बुध	31/01/2034 05:07
राहु	20/08/2033 23:31	गुरु	09/11/2033 11:17	शनि	04/01/2034 02:28	केतु	01/02/2034 15:55
गुरु	25/08/2033 17:09	शनि	25/11/2033 12:49	बुध	08/01/2034 09:58	शुक्र	05/02/2034 19:21
शनि	31/08/2033 08:05	बुध	09/12/2033 21:47	केतु	10/01/2034 04:34	सूर्य	07/02/2034 01:11
बुध	05/09/2033 08:49	केतु	15/12/2033 19:49	शुक्र	15/01/2034 06:19	चंद्र	09/02/2034 02:54

विंशोत्तरी दशा - प्राण

केतु - गुरु - मंगल - सूर्य	
16/10/2025 22:51	
17/10/2025 22:43	
सूर्य	17/10/2025 00:02
चंद्र	17/10/2025 02:02
मंगल	17/10/2025 03:25
राहु	17/10/2025 07:00
गुरु	17/10/2025 10:11
शनि	17/10/2025 13:58
बुध	17/10/2025 17:20
केतु	17/10/2025 18:44
शुक्र	17/10/2025 22:43

केतु - गुरु - मंगल - चंद्र	
17/10/2025 22:43	
19/10/2025 14:29	
चंद्र	18/10/2025 02:01
मंगल	18/10/2025 04:21
राहु	18/10/2025 10:19
गुरु	18/10/2025 15:37
शनि	18/10/2025 21:55
बुध	19/10/2025 03:33
केतु	19/10/2025 05:52
शुक्र	19/10/2025 12:30
सूर्य	19/10/2025 14:29

केतु - गुरु - राहु - राहु	
19/10/2025 14:29	
27/10/2025 06:34	
राहु	20/10/2025 18:06
गुरु	21/10/2025 18:38
शनि	22/10/2025 23:47
बुध	24/10/2025 01:52
केतु	24/10/2025 12:36
शुक्र	25/10/2025 19:17
सूर्य	26/10/2025 04:29
चंद्र	26/10/2025 19:50
मंगल	27/10/2025 06:34

केतु - गुरु - राहु - गुरु	
27/10/2025 06:34	
03/11/2025 02:12	
गुरु	28/10/2025 04:23
शनि	29/10/2025 06:18
बुध	30/10/2025 05:28
केतु	30/10/2025 15:01
शुक्र	31/10/2025 18:17
सूर्य	01/11/2025 02:28
चंद्र	01/11/2025 16:07
मंगल	02/11/2025 01:39
राहु	03/11/2025 02:12

केतु - गुरु - राहु - शनि	
03/11/2025 02:12	
11/11/2025 04:31	
शनि	04/11/2025 08:58
बुध	05/11/2025 12:30
केतु	05/11/2025 23:50
शुक्र	07/11/2025 08:13
सूर्य	07/11/2025 17:56
चंद्र	08/11/2025 10:07
मंगल	08/11/2025 21:27
राहु	10/11/2025 02:36
गुरु	11/11/2025 04:31

केतु - गुरु - राहु - बुध	
11/11/2025 04:31	
18/11/2025 10:22	
बुध	12/11/2025 05:09
केतु	12/11/2025 15:17
शुक्र	13/11/2025 20:16
सूर्य	14/11/2025 04:57
चंद्र	14/11/2025 19:26
मंगल	15/11/2025 05:35
राहु	16/11/2025 07:40
गुरु	17/11/2025 06:51
शनि	18/11/2025 10:22

केतु - गुरु - राहु - केतु	
18/11/2025 10:22	
21/11/2025 09:58	
केतु	18/11/2025 14:33
शुक्र	19/11/2025 02:29
सूर्य	19/11/2025 06:03
चंद्र	19/11/2025 12:01
मंगल	19/11/2025 16:12
राहु	20/11/2025 02:56
गुरु	20/11/2025 12:29
शनि	20/11/2025 23:49
बुध	21/11/2025 09:58

केतु - गुरु - राहु - शुक्र	
21/11/2025 09:58	
29/11/2025 22:30	
शुक्र	22/11/2025 20:03
सूर्य	23/11/2025 06:17
चंद्र	23/11/2025 23:19
मंगल	24/11/2025 11:15
राहु	25/11/2025 17:56
गुरु	26/11/2025 21:12
शनि	28/11/2025 05:36
बुध	29/11/2025 10:34
केतु	29/11/2025 22:30

केतु - गुरु - राहु - सूर्य	
29/11/2025 22:30	
02/12/2025 11:52	
सूर्य	30/11/2025 01:34
चंद्र	30/11/2025 06:41
मंगल	30/11/2025 10:16
राहु	30/11/2025 19:28
गुरु	01/12/2025 03:39
शनि	01/12/2025 13:22
बुध	01/12/2025 22:03
केतु	02/12/2025 01:38
शुक्र	02/12/2025 11:52

केतु - गुरु - राहु - चंद्र	
02/12/2025 11:52	
06/12/2025 18:08	
चंद्र	02/12/2025 20:23
मंगल	03/12/2025 02:21
राहु	03/12/2025 17:41
गुरु	04/12/2025 07:20
शनि	04/12/2025 23:31
बुध	05/12/2025 14:00
केतु	05/12/2025 19:58
शुक्र	06/12/2025 13:01
सूर्य	06/12/2025 18:08

केतु - गुरु - राहु - मंगल	
06/12/2025 18:08	
09/12/2025 17:43	
मंगल	06/12/2025 22:18
राहु	07/12/2025 09:03
गुरु	07/12/2025 18:35
शनि	08/12/2025 05:56
बुध	08/12/2025 16:04
केतु	08/12/2025 20:15
शुक्र	09/12/2025 08:11
सूर्य	09/12/2025 11:45
चंद्र	09/12/2025 17:43

केतु - शनि - शनि - शनि	
09/12/2025 17:43	
19/12/2025 21:17	
शनि	11/12/2025 08:17
बुध	12/12/2025 18:47
केतु	13/12/2025 09:00
शुक्र	15/12/2025 01:36
सूर्य	15/12/2025 13:46
चंद्र	16/12/2025 10:04
मंगल	17/12/2025 00:17
राहु	18/12/2025 12:49
गुरु	19/12/2025 21:17

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

विंशोत्तरी दशा - प्राण

केतु - शनि - शनि - बुध	
19/12/2025 21:17	
28/12/2025 23:13	
बुध	21/12/2025 04:10
केतु	21/12/2025 16:52
शुक्र	23/12/2025 05:12
सूर्य	23/12/2025 16:05
चंद्र	24/12/2025 10:15
मंगल	24/12/2025 22:58
राहु	26/12/2025 07:39
गुरु	27/12/2025 12:43
शनि	28/12/2025 23:13

केतु - शनि - शनि - केतु	
28/12/2025 23:13	
01/01/2026 16:57	
केतु	29/12/2025 04:27
शुक्र	29/12/2025 19:24
सूर्य	29/12/2025 23:53
चंद्र	30/12/2025 07:22
मंगल	30/12/2025 12:36
राहु	31/12/2025 02:04
गुरु	31/12/2025 14:02
शनि	01/01/2026 04:14
बुध	01/01/2026 16:57

केतु - शनि - शनि - शुक्र	
01/01/2026 16:57	
12/01/2026 09:20	
शुक्र	03/01/2026 11:41
सूर्य	04/01/2026 00:30
चंद्र	04/01/2026 21:52
मंगल	05/01/2026 12:49
राहु	07/01/2026 03:17
गुरु	08/01/2026 13:28
शनि	10/01/2026 06:03
बुध	11/01/2026 18:23
केतु	12/01/2026 09:20

केतु - शनि - शनि - सूर्य	
12/01/2026 09:20	
15/01/2026 14:15	
सूर्य	12/01/2026 13:11
चंद्र	12/01/2026 19:35
मंगल	13/01/2026 00:05
राहु	13/01/2026 11:37
गुरु	13/01/2026 21:52
शनि	14/01/2026 10:03
बुध	14/01/2026 20:57
केतु	15/01/2026 01:26
शुक्र	15/01/2026 14:15

केतु - शनि - शनि - चंद्र	
15/01/2026 14:15	
20/01/2026 22:27	
चंद्र	16/01/2026 00:56
मंगल	16/01/2026 08:25
राहु	17/01/2026 03:38
गुरु	17/01/2026 20:44
शनि	18/01/2026 17:02
बुध	19/01/2026 11:11
केतु	19/01/2026 18:40
शुक्र	20/01/2026 16:02
सूर्य	20/01/2026 22:27

केतु - शनि - शनि - मंगल	
20/01/2026 22:27	
24/01/2026 16:11	
मंगल	21/01/2026 03:41
राहु	21/01/2026 17:08
गुरु	22/01/2026 05:06
शनि	22/01/2026 19:19
बुध	23/01/2026 08:01
केतु	23/01/2026 13:15
शुक्र	24/01/2026 04:13
सूर्य	24/01/2026 08:42
चंद्र	24/01/2026 16:11

केतु - शनि - शनि - राहु	
24/01/2026 16:11	
03/02/2026 06:55	
राहु	26/01/2026 02:47
गुरु	27/01/2026 09:33
शनि	28/01/2026 22:05
बुध	30/01/2026 06:47
केतु	30/01/2026 20:14
शुक्र	01/02/2026 10:42
सूर्य	01/02/2026 22:14
चंद्र	02/02/2026 17:28
मंगल	03/02/2026 06:55

केतु - शनि - शनि - गुरु	
03/02/2026 06:55	
11/02/2026 20:02	
गुरु	04/02/2026 10:16
शनि	05/02/2026 18:45
बुध	06/02/2026 23:48
केतु	07/02/2026 11:46
शुक्र	08/02/2026 21:57
सूर्य	09/02/2026 08:13
चंद्र	10/02/2026 01:18
मंगल	10/02/2026 13:16
राहु	11/02/2026 20:02

केतु - शनि - बुध - बुध	
11/02/2026 20:02	
19/02/2026 23:01	
बुध	12/02/2026 23:39
केतु	13/02/2026 11:02
शुक्र	14/02/2026 19:32
सूर्य	15/02/2026 05:17
चंद्र	15/02/2026 21:32
मंगल	16/02/2026 08:54
राहु	17/02/2026 14:09
गुरु	18/02/2026 16:09
शनि	19/02/2026 23:01

केतु - शनि - बुध - केतु	
19/02/2026 23:01	
23/02/2026 07:19	
केतु	20/02/2026 03:42
शुक्र	20/02/2026 17:05
सूर्य	20/02/2026 21:06
चंद्र	21/02/2026 03:47
मंगल	21/02/2026 08:28
राहु	21/02/2026 20:31
गुरु	22/02/2026 07:13
शनि	22/02/2026 19:56
बुध	23/02/2026 07:19

केतु - शनि - बुध - शुक्र	
23/02/2026 07:19	
04/03/2026 20:42	
शुक्र	24/02/2026 21:33
सूर्य	25/02/2026 09:01
चंद्र	26/02/2026 04:08
मंगल	26/02/2026 17:31
राहु	28/02/2026 03:55
गुरु	01/03/2026 10:30
शनि	02/03/2026 22:50
बुध	04/03/2026 07:19
केतु	04/03/2026 20:42

केतु - शनि - बुध - सूर्य	
04/03/2026 20:42	
07/03/2026 17:32	
सूर्य	05/03/2026 00:09
चंद्र	05/03/2026 05:53
मंगल	05/03/2026 09:54
राहु	05/03/2026 20:13
गुरु	06/03/2026 05:24
शनि	06/03/2026 16:18
बुध	07/03/2026 02:02
केतु	07/03/2026 06:03
शुक्र	07/03/2026 17:32

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 6 वर्ष 6 मास 6 दिन

शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष	
14/02/2013		23/08/2019		23/08/2034		23/08/2050		23/08/2067	
23/08/2019		23/08/2034		23/08/2050		23/08/2067		23/08/2085	
	00/00/0000	केतु	01/08/2021	चंद्र	06/11/2036	बुध	18/02/2053	शुक्र	08/06/2070
	00/00/0000	चंद्र	26/08/2023	बुध	13/03/2039	शुक्र	10/10/2055	सूर्य	22/02/2072
	14/02/2013	बुध	06/11/2025	शुक्र	04/09/2041	सूर्य	20/05/2057	मंगल	02/01/2074
बुध	15/02/2013	शुक्र	05/03/2028	सूर्य	13/03/2043	मंगल	22/02/2059	गुरु	09/01/2076
शुक्र	19/04/2015	सूर्य	07/08/2029	मंगल	06/11/2044	गुरु	18/01/2061	शनि	12/03/2078
सूर्य	16/08/2016	मंगल	25/02/2031	गुरु	23/08/2046	शनि	06/02/2063	केतु	09/07/2080
मंगल	27/01/2018	गुरु	31/10/2032	शनि	28/07/2048	केतु	19/04/2065	चंद्र	02/01/2083
गुरु	23/08/2019	शनि	23/08/2034	केतु	23/08/2050	चंद्र	23/08/2067	बुध	23/08/2085

सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष	
23/08/2085		23/08/2096		24/08/2108		24/08/2121	
23/08/2096		24/08/2108		24/08/2121		00/00/0000	
सूर्य	08/09/2086	मंगल	19/11/2097	गुरु	07/02/2110	शनि	03/05/2123
मंगल	28/10/2087	गुरु	25/03/2099	शनि	03/09/2111	केतु	22/02/2125
गुरु	21/01/2089	शनि	05/09/2100	केतु	09/05/2113	चंद्र	28/01/2127
शनि	21/05/2090	केतु	26/03/2102	चंद्र	23/02/2115	बुध	15/02/2129
केतु	22/10/2091	चंद्र	20/11/2103	बुध	19/01/2117		00/00/0000
चंद्र	28/04/2093	बुध	24/08/2105	शुक्र	25/01/2119		00/00/0000
बुध	08/12/2094	शुक्र	05/07/2107	सूर्य	20/04/2120		00/00/0000
शुक्र	23/08/2096	सूर्य	24/08/2108	मंगल	24/08/2121		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु	
14/02/2013		15/02/2013		19/04/2015		16/08/2016		27/01/2018	
15/02/2013		19/04/2015		16/08/2016		27/01/2018		23/08/2019	
	00/00/0000	शुक्र	18/06/2013	सूर्य	04/06/2015	मंगल	10/10/2016	गुरु	01/04/2018
	00/00/0000	सूर्य	01/09/2013	मंगल	24/07/2015	गुरु	08/12/2016	शनि	10/06/2018
	00/00/0000	मंगल	22/11/2013	गुरु	17/09/2015	शनि	10/02/2017	केतु	23/08/2018
	00/00/0000	गुरु	19/02/2014	शनि	14/11/2015	केतु	19/04/2017	चंद्र	10/11/2018
	00/00/0000	शनि	26/05/2014	केतु	16/01/2016	चंद्र	01/07/2017	बुध	02/02/2019
	00/00/0000	केतु	06/09/2014	चंद्र	23/03/2016	बुध	17/09/2017	शुक्र	02/05/2019
	14/02/2013	चंद्र	24/12/2014	बुध	02/06/2016	शुक्र	08/12/2017	सूर्य	25/06/2019
चंद्र	15/02/2013	बुध	19/04/2015	शुक्र	16/08/2016	सूर्य	27/01/2018	मंगल	23/08/2019

केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
23/08/2019		01/08/2021		26/08/2023		06/11/2025		05/03/2028	
01/08/2021		26/08/2023		06/11/2025		05/03/2028		07/08/2029	
केतु	23/11/2019	चंद्र	13/11/2021	बुध	22/12/2023	शुक्र	18/03/2026	सूर्य	24/04/2028
चंद्र	29/02/2020	बुध	04/03/2022	शुक्र	25/04/2024	सूर्य	07/06/2026	मंगल	17/06/2028
बुध	11/06/2020	शुक्र	29/06/2022	सूर्य	10/07/2024	मंगल	03/09/2026	गुरु	14/08/2028
शुक्र	29/09/2020	सूर्य	09/09/2022	मंगल	01/10/2024	गुरु	07/12/2026	शनि	15/10/2028
सूर्य	06/12/2020	मंगल	26/11/2022	गुरु	30/12/2024	शनि	20/03/2027	केतु	22/12/2028
मंगल	17/02/2021	गुरु	19/02/2023	शनि	06/04/2025	केतु	08/07/2027	चंद्र	03/03/2029
गुरु	07/05/2021	शनि	21/05/2023	केतु	19/07/2025	चंद्र	02/11/2027	बुध	18/05/2029
शनि	01/08/2021	केतु	26/08/2023	चंद्र	06/11/2025	बुध	05/03/2028	शुक्र	07/08/2029

केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध	
07/08/2029		25/02/2031		31/10/2032		23/08/2034		06/11/2036	
25/02/2031		31/10/2032		23/08/2034		06/11/2036		13/03/2039	
मंगल	05/10/2029	गुरु	05/05/2031	शनि	19/01/2033	चंद्र	12/12/2034	बुध	12/03/2037
गुरु	07/12/2029	शनि	18/07/2031	केतु	14/04/2033	बुध	09/04/2035	शुक्र	23/07/2037
शनि	14/02/2030	केतु	05/10/2031	चंद्र	14/07/2033	शुक्र	12/08/2035	सूर्य	12/10/2037
केतु	28/04/2030	चंद्र	29/12/2031	बुध	19/10/2033	सूर्य	28/10/2035	मंगल	08/01/2038
चंद्र	15/07/2030	बुध	28/03/2032	शुक्र	30/01/2034	मंगल	19/01/2036	गुरु	14/04/2038
बुध	06/10/2030	शुक्र	01/07/2032	सूर्य	03/04/2034	गुरु	19/04/2036	शनि	27/07/2038
शुक्र	02/01/2031	सूर्य	28/08/2032	मंगल	10/06/2034	शनि	25/07/2036	केतु	14/11/2038
सूर्य	25/02/2031	मंगल	31/10/2032	गुरु	23/08/2034	केतु	06/11/2036	चंद्र	13/03/2039

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
13/03/2039		04/09/2041		13/03/2043		06/11/2044		23/08/2046	
04/09/2041		13/03/2043		06/11/2044		23/08/2046		28/07/2048	
शुक्र	31/07/2039	सूर्य	27/10/2041	मंगल	14/05/2043	गुरु	18/01/2045	शनि	16/11/2046
सूर्य	25/10/2039	मंगल	23/12/2041	गुरु	21/07/2043	शनि	08/04/2045	केतु	15/02/2047
मंगल	27/01/2040	गुरु	23/02/2042	शनि	02/10/2043	केतु	01/07/2045	चंद्र	24/05/2047
गुरु	08/05/2040	शनि	01/05/2042	केतु	19/12/2043	चंद्र	30/09/2045	बुध	04/09/2047
शनि	25/08/2040	केतु	12/07/2042	चंद्र	11/03/2044	बुध	04/01/2046	शुक्र	22/12/2047
केतु	20/12/2040	चंद्र	26/09/2042	बुध	08/06/2044	शुक्र	15/04/2046	सूर्य	27/02/2048
चंद्र	24/04/2041	बुध	17/12/2042	शुक्र	10/09/2044	सूर्य	16/06/2046	मंगल	10/05/2048
बुध	04/09/2041	शुक्र	13/03/2043	सूर्य	06/11/2044	मंगल	23/08/2046	गुरु	28/07/2048

चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल	
28/07/2048		23/08/2050		18/02/2053		10/10/2055		20/05/2057	
23/08/2050		18/02/2053		10/10/2055		20/05/2057		22/02/2059	
केतु	03/11/2048	बुध	03/01/2051	शुक्र	18/07/2053	सूर्य	04/12/2055	मंगल	26/07/2057
चंद्र	15/02/2049	शुक्र	25/05/2051	सूर्य	17/10/2053	मंगल	03/02/2056	गुरु	06/10/2057
बुध	06/06/2049	सूर्य	19/08/2051	मंगल	25/01/2054	गुरु	09/04/2056	शनि	22/12/2057
शुक्र	01/10/2049	मंगल	21/11/2051	गुरु	13/05/2054	शनि	19/06/2056	केतु	15/03/2058
सूर्य	12/12/2049	गुरु	02/03/2052	शनि	06/09/2054	केतु	03/09/2056	चंद्र	12/06/2058
मंगल	28/02/2050	शनि	20/06/2052	केतु	08/01/2055	चंद्र	24/11/2056	बुध	14/09/2058
गुरु	24/05/2050	केतु	15/10/2052	चंद्र	21/05/2055	बुध	18/02/2057	शुक्र	23/12/2058
शनि	23/08/2050	चंद्र	18/02/2053	बुध	10/10/2055	शुक्र	20/05/2057	सूर्य	22/02/2059

बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र	
22/02/2059		18/01/2061		06/02/2063		19/04/2065		23/08/2067	
18/01/2061		06/02/2063		19/04/2065		23/08/2067		08/06/2070	
गुरु	11/05/2059	शनि	18/04/2061	केतु	21/05/2063	चंद्र	15/08/2065	शुक्र	29/01/2068
शनि	03/08/2059	केतु	24/07/2061	चंद्र	08/09/2063	बुध	18/12/2065	सूर्य	04/05/2068
केतु	01/11/2059	चंद्र	04/11/2061	बुध	04/01/2064	शुक्र	30/04/2066	मंगल	18/08/2068
चंद्र	05/02/2060	बुध	22/02/2062	शुक्र	08/05/2064	सूर्य	21/07/2066	गुरु	10/12/2068
बुध	17/05/2060	शुक्र	18/06/2062	सूर्य	23/07/2064	मंगल	17/10/2066	शनि	12/04/2069
शुक्र	02/09/2060	सूर्य	28/08/2062	मंगल	14/10/2064	गुरु	21/01/2067	केतु	22/08/2069
सूर्य	07/11/2060	मंगल	14/11/2062	गुरु	12/01/2065	शनि	05/05/2067	चंद्र	10/01/2070
मंगल	18/01/2061	गुरु	06/02/2063	शनि	19/04/2065	केतु	23/08/2067	बुध	08/06/2070

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु	
08/06/2070		22/02/2072		02/01/2074		09/01/2076		12/03/2078	
22/02/2072		02/01/2074		09/01/2076		12/03/2078		09/07/2080	
सूर्य	07/08/2070	मंगल	02/05/2072	गुरु	26/03/2074	शनि	14/04/2076	केतु	30/06/2078
मंगल	10/10/2070	गुरु	17/07/2072	शनि	23/06/2074	केतु	25/07/2076	चंद्र	25/10/2078
गुरु	19/12/2070	शनि	08/10/2072	केतु	26/09/2074	चंद्र	12/11/2076	बुध	27/02/2079
शनि	04/03/2071	केतु	04/01/2073	चंद्र	05/01/2075	बुध	08/03/2077	शुक्र	09/07/2079
केतु	24/05/2071	चंद्र	07/04/2073	बुध	23/04/2075	शुक्र	09/07/2077	सूर्य	28/09/2079
चंद्र	18/08/2071	बुध	16/07/2073	शुक्र	16/08/2075	सूर्य	22/09/2077	मंगल	25/12/2079
बुध	17/11/2071	शुक्र	30/10/2073	सूर्य	25/10/2075	मंगल	13/12/2077	गुरु	29/03/2080
शुक्र	22/02/2072	सूर्य	02/01/2074	मंगल	09/01/2076	गुरु	12/03/2078	शनि	09/07/2080

शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु	
09/07/2080		02/01/2083		23/08/2085		08/09/2086		28/10/2087	
02/01/2083		23/08/2085		08/09/2086		28/10/2087		21/01/2089	
चंद्र	12/11/2080	बुध	23/05/2083	सूर्य	28/09/2085	मंगल	21/10/2086	गुरु	18/12/2087
बुध	24/03/2081	शुक्र	20/10/2083	मंगल	06/11/2085	गुरु	06/12/2086	शनि	10/02/2088
शुक्र	12/08/2081	सूर्य	19/01/2084	गुरु	19/12/2085	शनि	26/01/2087	केतु	08/04/2088
सूर्य	06/11/2081	मंगल	28/04/2084	शनि	03/02/2086	केतु	20/03/2087	चंद्र	10/06/2088
मंगल	08/02/2082	गुरु	14/08/2084	केतु	24/03/2086	चंद्र	17/05/2087	बुध	15/08/2088
गुरु	21/05/2082	शनि	08/12/2084	चंद्र	16/05/2086	बुध	16/07/2087	शुक्र	23/10/2088
शनि	07/09/2082	केतु	12/04/2085	बुध	11/07/2086	शुक्र	19/09/2087	सूर्य	05/12/2088
केतु	02/01/2083	चंद्र	23/08/2085	शुक्र	08/09/2086	सूर्य	28/10/2087	मंगल	21/01/2089

सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र	
21/01/2089		21/05/2090		22/10/2091		28/04/2093		08/12/2094	
21/05/2090		22/10/2091		28/04/2093		08/12/2094		23/08/2096	
शनि	20/03/2089	केतु	27/07/2090	चंद्र	07/01/2092	बुध	24/07/2093	शुक्र	15/03/2095
केतु	22/05/2089	चंद्र	06/10/2090	बुध	28/03/2092	शुक्र	23/10/2093	सूर्य	13/05/2095
चंद्र	28/07/2089	बुध	22/12/2090	शुक्र	22/06/2092	सूर्य	18/12/2093	मंगल	16/07/2095
बुध	07/10/2089	शुक्र	12/03/2091	सूर्य	13/08/2092	मंगल	17/02/2094	गुरु	24/09/2095
शुक्र	21/12/2089	सूर्य	30/04/2091	मंगल	10/10/2092	गुरु	24/04/2094	शनि	09/12/2095
सूर्य	05/02/2090	मंगल	23/06/2091	गुरु	11/12/2092	शनि	04/07/2094	केतु	27/02/2096
मंगल	27/03/2090	गुरु	20/08/2091	शनि	16/02/2093	केतु	18/09/2094	चंद्र	23/05/2096
गुरु	21/05/2090	शनि	22/10/2091	केतु	28/04/2093	चंद्र	08/12/2094	बुध	23/08/2096

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र	
23/08/2096		19/11/2097		25/03/2099		05/09/2100		26/03/2102	
19/11/2097		25/03/2099		05/09/2100		26/03/2102		20/11/2103	
मंगल	08/10/2096	गुरु	13/01/2098	शनि	28/05/2099	केतु	17/11/2100	चंद्र	17/06/2102
गुरु	28/11/2096	शनि	13/03/2098	केतु	04/08/2099	चंद्र	04/02/2101	बुध	14/09/2102
शनि	22/01/2097	केतु	16/05/2098	चंद्र	16/10/2099	बुध	28/04/2101	शुक्र	17/12/2102
केतु	22/03/2097	चंद्र	23/07/2098	बुध	02/01/2100	शुक्र	25/07/2101	सूर्य	12/02/2103
चंद्र	23/05/2097	बुध	03/10/2098	शुक्र	25/03/2100	सूर्य	16/09/2101	मंगल	16/04/2103
बुध	29/07/2097	शुक्र	18/12/2098	सूर्य	14/05/2100	मंगल	14/11/2101	गुरु	22/06/2103
शुक्र	07/10/2097	सूर्य	02/02/2099	मंगल	08/07/2100	गुरु	16/01/2102	शनि	03/09/2103
सूर्य	19/11/2097	मंगल	25/03/2099	गुरु	05/09/2100	शनि	26/03/2102	केतु	20/11/2103

मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
20/11/2103		24/08/2105		05/07/2107		24/08/2108		07/02/2110	
24/08/2105		05/07/2107		24/08/2108		07/02/2110		03/09/2111	
बुध	23/02/2104	शुक्र	07/12/2105	सूर्य	13/08/2107	गुरु	22/10/2108	शनि	17/04/2110
शुक्र	01/06/2104	सूर्य	10/02/2106	मंगल	25/09/2107	शनि	25/12/2108	केतु	30/06/2110
सूर्य	01/08/2104	मंगल	21/04/2106	गुरु	11/11/2107	केतु	04/03/2109	चंद्र	17/09/2110
मंगल	07/10/2104	गुरु	06/07/2106	शनि	31/12/2107	चंद्र	17/05/2109	बुध	10/12/2110
गुरु	18/12/2104	शनि	26/09/2106	केतु	23/02/2108	बुध	03/08/2109	शुक्र	09/03/2111
शनि	05/03/2105	केतु	23/12/2106	चंद्र	20/04/2108	शुक्र	24/10/2109	सूर्य	02/05/2111
केतु	27/05/2105	चंद्र	27/03/2107	बुध	20/06/2108	सूर्य	14/12/2109	मंगल	01/07/2111
चंद्र	24/08/2105	बुध	05/07/2107	शुक्र	24/08/2108	मंगल	07/02/2110	गुरु	03/09/2111

गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
03/09/2111		09/05/2113		23/02/2115		19/01/2117		25/01/2119	
09/05/2113		23/02/2115		19/01/2117		25/01/2119		20/04/2120	
केतु	21/11/2111	चंद्र	07/08/2113	बुध	05/06/2115	शुक्र	13/05/2117	सूर्य	09/03/2119
चंद्र	14/02/2112	बुध	11/11/2113	शुक्र	21/09/2115	सूर्य	22/07/2117	मंगल	25/04/2119
बुध	14/05/2112	शुक्र	21/02/2114	सूर्य	26/11/2115	मंगल	06/10/2117	गुरु	14/06/2119
शुक्र	17/08/2112	सूर्य	24/04/2114	मंगल	06/02/2116	गुरु	28/12/2117	शनि	07/08/2119
सूर्य	14/10/2112	मंगल	01/07/2114	गुरु	24/04/2116	शनि	26/03/2118	केतु	05/10/2119
मंगल	17/12/2112	गुरु	12/09/2114	शनि	17/07/2116	केतु	30/06/2118	चंद्र	06/12/2119
गुरु	24/02/2113	शनि	30/11/2114	केतु	15/10/2116	चंद्र	09/10/2118	बुध	10/02/2120
शनि	09/05/2113	केतु	23/02/2115	चंद्र	19/01/2117	बुध	25/01/2119	शुक्र	20/04/2120

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 5 वर्ष 3 मास 9 दिन

बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष	
14/02/2013		27/05/2018		25/01/2023		26/05/2036		26/05/2040	
27/05/2018		25/01/2023		26/05/2036		26/05/2040		25/01/2047	
	00/00/0000	केतु	03/09/2018	शुक्र	16/04/2025	सूर्य	07/08/2036	चंद्र	15/12/2040
	00/00/0000	शुक्र	14/06/2019	सूर्य	15/12/2025	चंद्र	07/12/2036	मंगल	06/05/2041
	00/00/0000	सूर्य	07/09/2019	चंद्र	25/01/2027	मंगल	02/03/2037	राहु	06/05/2042
	00/00/0000	चंद्र	28/01/2020	मंगल	05/11/2027	राहु	07/10/2037	गुरु	27/03/2043
	14/02/2013	मंगल	06/05/2020	राहु	05/11/2029	गुरु	20/04/2038	शनि	16/04/2044
मंगल	24/05/2013	राहु	17/01/2021	गुरु	16/08/2031	शनि	08/12/2038	बुध	27/03/2045
राहु	04/02/2015	गुरु	01/09/2021	शनि	25/09/2033	बुध	03/07/2039	केतु	16/08/2045
गुरु	09/08/2016	शनि	29/05/2022	बुध	16/08/2035	केतु	26/09/2039	शुक्र	25/09/2046
शनि	27/05/2018	बुध	25/01/2023	केतु	26/05/2036	शुक्र	26/05/2040	सूर्य	25/01/2047

मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष	
25/01/2047		26/09/2051		26/09/2063		27/05/2074		25/01/2087	
26/09/2051		26/09/2063		27/05/2074		25/01/2087		00/00/0000	
मंगल	05/05/2047	राहु	14/07/2053	गुरु	26/02/2065	शनि	28/05/2076	बुध	03/09/2088
राहु	15/01/2048	गुरु	19/02/2055	शनि	05/11/2066	बुध	15/03/2078	केतु	02/05/2089
गुरु	30/08/2048	शनि	13/01/2057	बुध	10/05/2068	केतु	10/12/2078	शुक्र	23/03/2091
शनि	26/05/2049	बुध	25/09/2058	केतु	23/12/2068	शुक्र	19/01/2081	सूर्य	16/10/2091
बुध	23/01/2050	केतु	08/06/2059	शुक्र	04/10/2070	सूर्य	07/09/2081	चंद्र	25/09/2092
केतु	02/05/2050	शुक्र	08/06/2061	सूर्य	16/04/2071	चंद्र	28/09/2082	मंगल	14/02/2093
शुक्र	10/02/2051	सूर्य	13/01/2062	चंद्र	06/03/2072	मंगल	24/06/2083		00/00/0000
सूर्य	07/05/2051	चंद्र	13/01/2063	मंगल	19/10/2072	राहु	18/05/2085		00/00/0000
चंद्र	26/09/2051	मंगल	26/09/2063	राहु	27/05/2074	गुरु	25/01/2087		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
14/02/2013		24/05/2013		04/02/2015		09/08/2016		27/05/2018	
24/05/2013		04/02/2015		09/08/2016		27/05/2018		03/09/2018	
	00/00/0000	राहु	26/08/2013	गुरु	19/04/2015	शनि	21/11/2016	केतु	02/06/2018
	00/00/0000	गुरु	16/11/2013	शनि	15/07/2015	बुध	22/02/2017	शुक्र	18/06/2018
	00/00/0000	शनि	23/02/2014	बुध	02/10/2015	केतु	01/04/2017	सूर्य	23/06/2018
	14/02/2013	बुध	22/05/2014	केतु	03/11/2015	शुक्र	19/07/2017	चंद्र	01/07/2018
बुध	27/02/2013	केतु	27/06/2014	शुक्र	03/02/2016	सूर्य	21/08/2017	मंगल	07/07/2018
केतु	13/03/2013	शुक्र	08/10/2014	सूर्य	01/03/2016	चंद्र	15/10/2017	राहु	22/07/2018
शुक्र	22/04/2013	सूर्य	08/11/2014	चंद्र	16/04/2016	मंगल	22/11/2017	गुरु	04/08/2018
सूर्य	04/05/2013	चंद्र	30/12/2014	मंगल	19/05/2016	राहु	28/02/2018	शनि	20/08/2018
चंद्र	24/05/2013	मंगल	04/02/2015	राहु	09/08/2016	गुरु	27/05/2018	बुध	03/09/2018

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
03/09/2018		14/06/2019		07/09/2019		28/01/2020		06/05/2020	
14/06/2019		07/09/2019		28/01/2020		06/05/2020		17/01/2021	
शुक्र	21/10/2018	सूर्य	19/06/2019	चंद्र	19/09/2019	मंगल	02/02/2020	राहु	13/06/2020
सूर्य	04/11/2018	चंद्र	26/06/2019	मंगल	28/09/2019	राहु	17/02/2020	गुरु	17/07/2020
चंद्र	27/11/2018	मंगल	01/07/2019	राहु	19/10/2019	गुरु	01/03/2020	शनि	27/08/2020
मंगल	14/12/2018	राहु	13/07/2019	गुरु	07/11/2019	शनि	17/03/2020	बुध	02/10/2020
राहु	26/01/2019	गुरु	25/07/2019	शनि	29/11/2019	बुध	31/03/2020	केतु	17/10/2020
गुरु	04/03/2019	शनि	07/08/2019	बुध	19/12/2019	केतु	06/04/2020	शुक्र	29/11/2020
शनि	18/04/2019	बुध	19/08/2019	केतु	28/12/2019	शुक्र	23/04/2020	सूर्य	11/12/2020
बुध	29/05/2019	केतु	24/08/2019	शुक्र	20/01/2020	सूर्य	28/04/2020	चंद्र	02/01/2021
केतु	14/06/2019	शुक्र	07/09/2019	सूर्य	28/01/2020	चंद्र	06/05/2020	मंगल	17/01/2021

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
17/01/2021		01/09/2021		29/05/2022		25/01/2023		16/04/2025	
01/09/2021		29/05/2022		25/01/2023		16/04/2025		15/12/2025	
गुरु	16/02/2021	शनि	14/10/2021	बुध	02/07/2022	शुक्र	10/06/2023	सूर्य	28/04/2025
शनि	24/03/2021	बुध	21/11/2021	केतु	16/07/2022	सूर्य	20/07/2023	चंद्र	18/05/2025
बुध	25/04/2021	केतु	07/12/2021	शुक्र	25/08/2022	चंद्र	26/09/2023	मंगल	02/06/2025
केतु	08/05/2021	शुक्र	21/01/2022	सूर्य	06/09/2022	मंगल	12/11/2023	राहु	08/07/2025
शुक्र	15/06/2021	सूर्य	03/02/2022	चंद्र	27/09/2022	राहु	13/03/2024	गुरु	10/08/2025
सूर्य	27/06/2021	चंद्र	26/02/2022	मंगल	11/10/2022	गुरु	29/06/2024	शनि	17/09/2025
चंद्र	16/07/2021	मंगल	13/03/2022	राहु	16/11/2022	शनि	05/11/2024	बुध	22/10/2025
मंगल	29/07/2021	राहु	23/04/2022	गुरु	18/12/2022	बुध	28/02/2025	केतु	05/11/2025
राहु	01/09/2021	गुरु	29/05/2022	शनि	25/01/2023	केतु	16/04/2025	शुक्र	15/12/2025

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
15/12/2025		25/01/2027		05/11/2027		05/11/2029		16/08/2031	
25/01/2027		05/11/2027		05/11/2029		16/08/2031		25/09/2033	
चंद्र	18/01/2026	मंगल	11/02/2027	राहु	23/02/2028	गुरु	30/01/2030	शनि	16/12/2031
मंगल	11/02/2026	राहु	25/03/2027	गुरु	30/05/2028	शनि	13/05/2030	बुध	03/04/2032
राहु	13/04/2026	गुरु	02/05/2027	शनि	23/09/2028	बुध	13/08/2030	केतु	18/05/2032
गुरु	06/06/2026	शनि	16/06/2027	बुध	04/01/2029	केतु	20/09/2030	शुक्र	24/09/2032
शनि	09/08/2026	बुध	27/07/2027	केतु	16/02/2029	शुक्र	06/01/2031	सूर्य	02/11/2032
बुध	06/10/2026	केतु	12/08/2027	शुक्र	18/06/2029	सूर्य	08/02/2031	चंद्र	05/01/2033
केतु	29/10/2026	शुक्र	28/09/2027	सूर्य	24/07/2029	चंद्र	03/04/2031	मंगल	19/02/2033
शुक्र	05/01/2027	सूर्य	13/10/2027	चंद्र	23/09/2029	मंगल	11/05/2031	राहु	14/06/2033
सूर्य	25/01/2027	चंद्र	05/11/2027	मंगल	05/11/2029	राहु	16/08/2031	गुरु	25/09/2033

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
25/09/2033		16/08/2035		26/05/2036		07/08/2036		07/12/2036	
16/08/2035		26/05/2036		07/08/2036		07/12/2036		02/03/2037	
बुध	01/01/2034	केतु	02/09/2035	सूर्य	30/05/2036	चंद्र	17/08/2036	मंगल	12/12/2036
केतु	10/02/2034	शुक्र	19/10/2035	चंद्र	05/06/2036	मंगल	25/08/2036	राहु	25/12/2036
शुक्र	05/06/2034	सूर्य	02/11/2035	मंगल	09/06/2036	राहु	12/09/2036	गुरु	05/01/2037
सूर्य	10/07/2034	चंद्र	26/11/2035	राहु	20/06/2036	गुरु	28/09/2036	शनि	19/01/2037
चंद्र	05/09/2034	मंगल	13/12/2035	गुरु	30/06/2036	शनि	17/10/2036	बुध	31/01/2037
मंगल	15/10/2034	राहु	24/01/2036	शनि	12/07/2036	बुध	04/11/2036	केतु	05/02/2037
राहु	27/01/2035	गुरु	02/03/2036	बुध	22/07/2036	केतु	11/11/2036	शुक्र	19/02/2037
गुरु	29/04/2035	शनि	16/04/2036	केतु	26/07/2036	शुक्र	01/12/2036	सूर्य	23/02/2037
शनि	16/08/2035	बुध	26/05/2036	शुक्र	07/08/2036	सूर्य	07/12/2036	चंद्र	02/03/2037

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
02/03/2037		07/10/2037		20/04/2038		08/12/2038		03/07/2039	
07/10/2037		20/04/2038		08/12/2038		03/07/2039		26/09/2039	
राहु	04/04/2037	गुरु	02/11/2037	शनि	27/05/2038	बुध	06/01/2039	केतु	07/07/2039
गुरु	03/05/2037	शनि	03/12/2037	बुध	29/06/2038	केतु	18/01/2039	शुक्र	22/07/2039
शनि	07/06/2037	बुध	31/12/2037	केतु	12/07/2038	शुक्र	21/02/2039	सूर्य	26/07/2039
बुध	08/07/2037	केतु	11/01/2038	शुक्र	20/08/2038	सूर्य	04/03/2039	चंद्र	02/08/2039
केतु	21/07/2037	शुक्र	13/02/2038	सूर्य	31/08/2038	चंद्र	21/03/2039	मंगल	07/08/2039
शुक्र	26/08/2037	सूर्य	22/02/2038	चंद्र	19/09/2038	मंगल	02/04/2039	राहु	20/08/2039
सूर्य	06/09/2037	चंद्र	11/03/2038	मंगल	03/10/2038	राहु	03/05/2039	गुरु	31/08/2039
चंद्र	25/09/2037	मंगल	22/03/2038	राहु	07/11/2038	गुरु	31/05/2039	शनि	14/09/2039
मंगल	07/10/2037	राहु	20/04/2038	गुरु	08/12/2038	शनि	03/07/2039	बुध	26/09/2039

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
26/09/2039		26/05/2040		15/12/2040		06/05/2041		06/05/2042	
26/05/2040		15/12/2040		06/05/2041		06/05/2042		27/03/2043	
शुक्र	05/11/2039	चंद्र	12/06/2040	मंगल	23/12/2040	राहु	30/06/2041	गुरु	19/06/2042
सूर्य	17/11/2039	मंगल	24/06/2040	राहु	14/01/2041	गुरु	18/08/2041	शनि	09/08/2042
चंद्र	08/12/2039	राहु	24/07/2040	गुरु	02/02/2041	शनि	15/10/2041	बुध	24/09/2042
मंगल	22/12/2039	गुरु	20/08/2040	शनि	24/02/2041	बुध	05/12/2041	केतु	13/10/2042
राहु	28/01/2040	शनि	22/09/2040	बुध	16/03/2041	केतु	27/12/2041	शुक्र	06/12/2042
गुरु	29/02/2040	बुध	20/10/2040	केतु	25/03/2041	शुक्र	25/02/2042	सूर्य	22/12/2042
शनि	08/04/2040	केतु	01/11/2040	शुक्र	17/04/2041	सूर्य	16/03/2042	चंद्र	18/01/2043
बुध	12/05/2040	शुक्र	05/12/2040	सूर्य	24/04/2041	चंद्र	15/04/2042	मंगल	06/02/2043
केतु	26/05/2040	सूर्य	15/12/2040	चंद्र	06/05/2041	मंगल	06/05/2042	राहु	27/03/2043

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
27/03/2043		16/04/2044		27/03/2045		16/08/2045		25/09/2046	
16/04/2044		27/03/2045		16/08/2045		25/09/2046		25/01/2047	
शनि	27/05/2043	बुध	04/06/2044	केतु	04/04/2045	शुक्र	22/10/2045	सूर्य	02/10/2046
बुध	21/07/2043	केतु	24/06/2044	शुक्र	28/04/2045	सूर्य	12/11/2045	चंद्र	12/10/2046
केतु	12/08/2043	शुक्र	20/08/2044	सूर्य	05/05/2045	चंद्र	15/12/2045	मंगल	19/10/2046
शुक्र	16/10/2043	सूर्य	06/09/2044	चंद्र	17/05/2045	मंगल	08/01/2046	राहु	06/11/2046
सूर्य	04/11/2043	चंद्र	05/10/2044	मंगल	25/05/2045	राहु	10/03/2046	गुरु	22/11/2046
चंद्र	06/12/2043	मंगल	25/10/2044	राहु	15/06/2045	गुरु	03/05/2046	शनि	12/12/2046
मंगल	28/12/2043	राहु	16/12/2044	गुरु	04/07/2045	शनि	06/07/2046	बुध	29/12/2046
राहु	24/02/2044	गुरु	31/01/2045	शनि	27/07/2045	बुध	02/09/2046	केतु	05/01/2047
गुरु	16/04/2044	शनि	27/03/2045	बुध	16/08/2045	केतु	25/09/2046	शुक्र	25/01/2047

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
25/01/2047		05/05/2047		15/01/2048		30/08/2048		26/05/2049	
05/05/2047		15/01/2048		30/08/2048		26/05/2049		23/01/2050	
मंगल	31/01/2047	राहु	12/06/2047	गुरु	15/02/2048	शनि	11/10/2048	बुध	30/06/2049
राहु	15/02/2047	गुरु	16/07/2047	शनि	22/03/2048	बुध	19/11/2048	केतु	14/07/2049
गुरु	28/02/2047	शनि	26/08/2047	बुध	23/04/2048	केतु	04/12/2048	शुक्र	23/08/2049
शनि	16/03/2047	बुध	01/10/2047	केतु	06/05/2048	शुक्र	18/01/2049	सूर्य	04/09/2049
बुध	30/03/2047	केतु	16/10/2047	शुक्र	13/06/2048	सूर्य	01/02/2049	चंद्र	24/09/2049
केतु	05/04/2047	शुक्र	27/11/2047	सूर्य	24/06/2048	चंद्र	23/02/2049	मंगल	08/10/2049
शुक्र	21/04/2047	सूर्य	10/12/2047	चंद्र	13/07/2048	मंगल	11/03/2049	राहु	14/11/2049
सूर्य	26/04/2047	चंद्र	31/12/2047	मंगल	27/07/2048	राहु	21/04/2049	गुरु	16/12/2049
चंद्र	05/05/2047	मंगल	15/01/2048	राहु	30/08/2048	गुरु	26/05/2049	शनि	23/01/2050

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु	
23/01/2050		02/05/2050		10/02/2051		07/05/2051		26/09/2051	
02/05/2050		10/02/2051		07/05/2051		26/09/2051		14/07/2053	
केतु	29/01/2050	शुक्र	19/06/2050	सूर्य	15/02/2051	चंद्र	19/05/2051	राहु	02/01/2052
शुक्र	14/02/2050	सूर्य	03/07/2050	चंद्र	22/02/2051	मंगल	27/05/2051	गुरु	30/03/2052
सूर्य	19/02/2050	चंद्र	27/07/2050	मंगल	27/02/2051	राहु	17/06/2051	शनि	12/07/2052
चंद्र	28/02/2050	मंगल	12/08/2050	राहु	12/03/2051	गुरु	06/07/2051	बुध	13/10/2052
मंगल	05/03/2050	राहु	24/09/2050	गुरु	23/03/2051	शनि	29/07/2051	केतु	21/11/2052
राहु	20/03/2050	गुरु	01/11/2050	शनि	05/04/2051	बुध	18/08/2051	शुक्र	10/03/2053
गुरु	03/04/2050	शनि	16/12/2050	बुध	18/04/2051	केतु	26/08/2051	सूर्य	12/04/2053
शनि	18/04/2050	बुध	25/01/2051	केतु	22/04/2051	शुक्र	19/09/2051	चंद्र	06/06/2053
बुध	02/05/2050	केतु	10/02/2051	शुक्र	07/05/2051	सूर्य	26/09/2051	मंगल	14/07/2053

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
14/07/2053		19/02/2055		13/01/2057		25/09/2058		08/06/2059	
19/02/2055		13/01/2057		25/09/2058		08/06/2059		08/06/2061	
गुरु	30/09/2053	शनि	08/06/2055	बुध	11/04/2057	केतु	10/10/2058	शुक्र	08/10/2059
शनि	01/01/2054	बुध	15/09/2055	केतु	17/05/2057	शुक्र	22/11/2058	सूर्य	13/11/2059
बुध	24/03/2054	केतु	25/10/2055	शुक्र	28/08/2057	सूर्य	05/12/2058	चंद्र	13/01/2060
केतु	28/04/2054	शुक्र	18/02/2056	सूर्य	28/09/2057	चंद्र	26/12/2058	मंगल	25/02/2060
शुक्र	03/08/2054	सूर्य	24/03/2056	चंद्र	19/11/2057	मंगल	10/01/2059	राहु	13/06/2060
सूर्य	01/09/2054	चंद्र	20/05/2056	मंगल	25/12/2057	राहु	17/02/2059	गुरु	19/09/2060
चंद्र	20/10/2054	मंगल	30/06/2056	राहु	28/03/2058	गुरु	23/03/2059	शनि	13/01/2061
मंगल	23/11/2054	राहु	12/10/2056	गुरु	19/06/2058	शनि	03/05/2059	बुध	26/04/2061
राहु	19/02/2055	गुरु	13/01/2057	शनि	25/09/2058	बुध	08/06/2059	केतु	08/06/2061

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
08/06/2061		13/01/2062		13/01/2063		26/09/2063		26/02/2065	
13/01/2062		13/01/2063		26/09/2063		26/02/2065		05/11/2066	
सूर्य	19/06/2061	चंद्र	12/02/2062	मंगल	28/01/2063	गुरु	04/12/2063	शनि	04/06/2065
चंद्र	07/07/2061	मंगल	06/03/2062	राहु	07/03/2063	शनि	24/02/2064	बुध	30/08/2065
मंगल	20/07/2061	राहु	29/04/2062	गुरु	10/04/2063	बुध	08/05/2064	केतु	05/10/2065
राहु	22/08/2061	गुरु	17/06/2062	शनि	21/05/2063	केतु	07/06/2064	शुक्र	16/01/2066
गुरु	20/09/2061	शनि	14/08/2062	बुध	26/06/2063	शुक्र	02/09/2064	सूर्य	16/02/2066
शनि	24/10/2061	बुध	05/10/2062	केतु	11/07/2063	सूर्य	28/09/2064	चंद्र	08/04/2066
बुध	25/11/2061	केतु	26/10/2062	शुक्र	23/08/2063	चंद्र	10/11/2064	मंगल	14/05/2066
केतु	07/12/2061	शुक्र	26/12/2062	सूर्य	04/09/2063	मंगल	10/12/2064	राहु	15/08/2066
शुक्र	13/01/2062	सूर्य	13/01/2063	चंद्र	26/09/2063	राहु	26/02/2065	गुरु	05/11/2066

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
05/11/2066		10/05/2068		23/12/2068		04/10/2070		16/04/2071	
10/05/2068		23/12/2068		04/10/2070		16/04/2071		06/03/2072	
बुध	22/01/2067	केतु	23/05/2068	शुक्र	10/04/2069	सूर्य	13/10/2070	चंद्र	13/05/2071
केतु	23/02/2067	शुक्र	30/06/2068	सूर्य	13/05/2069	चंद्र	30/10/2070	मंगल	01/06/2071
शुक्र	26/05/2067	सूर्य	12/07/2068	चंद्र	06/07/2069	मंगल	10/11/2070	राहु	20/07/2071
सूर्य	23/06/2067	चंद्र	30/07/2068	मंगल	13/08/2069	राहु	09/12/2070	गुरु	01/09/2071
चंद्र	08/08/2067	मंगल	13/08/2068	राहु	18/11/2069	गुरु	04/01/2071	शनि	23/10/2071
मंगल	09/09/2067	राहु	16/09/2068	गुरु	13/02/2070	शनि	04/02/2071	बुध	08/12/2071
राहु	01/12/2067	गुरु	16/10/2068	शनि	27/05/2070	बुध	04/03/2071	केतु	27/12/2071
गुरु	13/02/2068	शनि	21/11/2068	बुध	27/08/2070	केतु	15/03/2071	शुक्र	19/02/2072
शनि	10/05/2068	बुध	23/12/2068	केतु	04/10/2070	शुक्र	16/04/2071	सूर्य	06/03/2072

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
06/03/2072		19/10/2072		27/05/2074		28/05/2076		15/03/2078	
19/10/2072		27/05/2074		28/05/2076		15/03/2078		10/12/2078	
मंगल	19/03/2072	राहु	15/01/2073	शनि	20/09/2074	बुध	29/08/2076	केतु	30/03/2078
राहु	22/04/2072	गुरु	03/04/2073	बुध	01/01/2075	केतु	06/10/2076	शुक्र	14/05/2078
गुरु	23/05/2072	शनि	04/07/2073	केतु	13/02/2075	शुक्र	24/01/2077	सूर्य	28/05/2078
शनि	28/06/2072	बुध	25/09/2073	शुक्र	15/06/2075	सूर्य	25/02/2077	चंद्र	19/06/2078
बुध	30/07/2072	केतु	29/10/2073	सूर्य	22/07/2075	चंद्र	21/04/2077	मंगल	05/07/2078
केतु	12/08/2072	शुक्र	04/02/2074	चंद्र	21/09/2075	मंगल	29/05/2077	राहु	15/08/2078
शुक्र	19/09/2072	सूर्य	05/03/2074	मंगल	03/11/2075	राहु	05/09/2077	गुरु	20/09/2078
सूर्य	30/09/2072	चंद्र	23/04/2074	राहु	21/02/2076	गुरु	01/12/2077	शनि	01/11/2078
चंद्र	19/10/2072	मंगल	27/05/2074	गुरु	28/05/2076	शनि	15/03/2078	बुध	10/12/2078

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
10/12/2078		19/01/2081		07/09/2081		28/09/2082		24/06/2083	
19/01/2081		07/09/2081		28/09/2082		24/06/2083		18/05/2085	
शुक्र	17/04/2079	सूर्य	30/01/2081	चंद्र	09/10/2081	मंगल	13/10/2082	राहु	06/10/2083
सूर्य	26/05/2079	चंद्र	18/02/2081	मंगल	01/11/2081	राहु	23/11/2082	गुरु	07/01/2084
चंद्र	29/07/2079	मंगल	04/03/2081	राहु	28/12/2081	गुरु	29/12/2082	शनि	26/04/2084
मंगल	12/09/2079	राहु	08/04/2081	गुरु	18/02/2082	शनि	09/02/2083	बुध	02/08/2084
राहु	06/01/2080	गुरु	09/05/2081	शनि	20/04/2082	बुध	20/03/2083	केतु	12/09/2084
गुरु	17/04/2080	शनि	14/06/2081	बुध	13/06/2082	केतु	04/04/2083	शुक्र	05/01/2085
शनि	17/08/2080	बुध	17/07/2081	केतु	06/07/2082	शुक्र	19/05/2083	सूर्य	09/02/2085
बुध	05/12/2080	केतु	30/07/2081	शुक्र	08/09/2082	सूर्य	02/06/2083	चंद्र	08/04/2085
केतु	19/01/2081	शुक्र	07/09/2081	सूर्य	28/09/2082	चंद्र	24/06/2083	मंगल	18/05/2085

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 12 वर्ष 11 मास 10 दिन

शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
14/02/2013		25/01/2026		26/01/2032		25/01/2047		25/01/2055	
25/01/2026		26/01/2032		25/01/2047		25/01/2055		26/01/2072	
	00/00/0000	सूर्य	27/05/2026	चंद्र	25/02/2034	मंगल	30/08/2047	बुध	29/09/2057
	14/02/2013	चंद्र	27/03/2027	मंगल	06/04/2035	बुध	02/12/2048	शनि	27/04/2059
चंद्र	27/03/2013	मंगल	06/09/2027	बुध	16/08/2037	शनि	29/08/2049	गुरु	23/04/2062
मंगल	16/10/2014	बुध	16/08/2028	शनि	05/01/2039	गुरु	25/01/2051	राहु	13/03/2064
बुध	04/02/2018	शनि	07/03/2029	गुरु	26/08/2041	राहु	16/12/2051	शुक्र	03/07/2067
शनि	16/01/2020	गुरु	27/03/2030	राहु	27/04/2043	शुक्र	06/07/2053	सूर्य	12/06/2068
गुरु	26/09/2023	राहु	26/11/2030	शुक्र	27/03/2046	सूर्य	16/12/2053	चंद्र	23/10/2070
राहु	25/01/2026	शुक्र	26/01/2032	सूर्य	25/01/2047	चंद्र	25/01/2055	मंगल	26/01/2072

शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
26/01/2072		25/01/2082		26/01/2101		26/01/2113	
25/01/2082		26/01/2101		26/01/2113		00/00/0000	
शनि	29/12/2072	गुरु	30/05/2085	राहु	28/05/2102	शुक्र	25/02/2117
गुरु	02/10/2074	राहु	10/07/2087	शुक्र	26/09/2104	सूर्य	28/04/2118
राहु	12/11/2075	शुक्र	21/03/2091	सूर्य	28/05/2105	चंद्र	15/02/2121
शुक्र	23/10/2077	सूर्य	09/04/2092	चंद्र	26/01/2107		00/00/0000
सूर्य	13/05/2078	चंद्र	29/11/2094	मंगल	17/12/2107		00/00/0000
चंद्र	03/10/2079	मंगल	26/04/2096	बुध	06/11/2109		00/00/0000
मंगल	29/06/2080	बुध	23/04/2099	शनि	17/12/2110		00/00/0000
बुध	25/01/2082	शनि	26/01/2101	गुरु	26/01/2113		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु	
14/02/2013		27/03/2013		16/10/2014		04/02/2018		16/01/2020	
27/03/2013		16/10/2014		04/02/2018		16/01/2020		26/09/2023	
	00/00/0000	मंगल	08/05/2013	बुध	24/04/2015	शनि	11/04/2018	गुरु	09/09/2020
	00/00/0000	बुध	05/08/2013	शनि	14/08/2015	गुरु	14/08/2018	राहु	06/02/2021
	00/00/0000	शनि	27/09/2013	गुरु	13/03/2016	राहु	01/11/2018	शुक्र	26/10/2021
	00/00/0000	गुरु	05/01/2014	राहु	25/07/2016	शुक्र	19/03/2019	सूर्य	09/01/2022
	00/00/0000	राहु	09/03/2014	शुक्र	17/03/2017	सूर्य	28/04/2019	चंद्र	16/07/2022
	00/00/0000	शुक्र	28/06/2014	सूर्य	23/05/2017	चंद्र	04/08/2019	मंगल	24/10/2022
	14/02/2013	सूर्य	29/07/2014	चंद्र	07/11/2017	मंगल	26/09/2019	बुध	24/05/2023
सूर्य	27/03/2013	चंद्र	16/10/2014	मंगल	04/02/2018	बुध	16/01/2020	शनि	26/09/2023

शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध	
26/09/2023		25/01/2026		27/05/2026		27/03/2027		06/09/2027	
25/01/2026		27/05/2026		27/03/2027		06/09/2027		16/08/2028	
राहु	30/12/2023	सूर्य	01/02/2026	चंद्र	08/07/2026	मंगल	08/04/2027	बुध	30/10/2027
शुक्र	12/06/2024	चंद्र	18/02/2026	मंगल	31/07/2026	बुध	04/05/2027	शनि	01/12/2027
सूर्य	30/07/2024	मंगल	27/02/2026	बुध	17/09/2026	शनि	19/05/2027	गुरु	31/01/2028
चंद्र	25/11/2024	बुध	18/03/2026	शनि	15/10/2026	गुरु	17/06/2027	राहु	09/03/2028
मंगल	27/01/2025	शनि	29/03/2026	गुरु	07/12/2026	राहु	05/07/2027	शुक्र	15/05/2028
बुध	10/06/2025	गुरु	20/04/2026	राहु	10/01/2027	शुक्र	05/08/2027	सूर्य	03/06/2028
शनि	28/08/2025	राहु	03/05/2026	शुक्र	10/03/2027	सूर्य	14/08/2027	चंद्र	21/07/2028
गुरु	25/01/2026	शुक्र	27/05/2026	सूर्य	27/03/2027	चंद्र	06/09/2027	मंगल	16/08/2028

सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
16/08/2028		07/03/2029		27/03/2030		26/11/2030		26/01/2032	
07/03/2029		27/03/2030		26/11/2030		26/01/2032		25/02/2034	
शनि	03/09/2028	गुरु	13/05/2029	राहु	23/04/2030	शुक्र	16/02/2031	चंद्र	10/05/2032
गुरु	09/10/2028	राहु	25/06/2029	शुक्र	09/06/2030	सूर्य	12/03/2031	मंगल	06/07/2032
राहु	01/11/2028	शुक्र	08/09/2029	सूर्य	23/06/2030	चंद्र	10/05/2031	बुध	03/11/2032
शुक्र	10/12/2028	सूर्य	30/09/2029	चंद्र	27/07/2030	मंगल	11/06/2031	शनि	12/01/2033
सूर्य	21/12/2028	चंद्र	22/11/2029	मंगल	14/08/2030	बुध	17/08/2031	गुरु	26/05/2033
चंद्र	19/01/2029	मंगल	21/12/2029	बुध	21/09/2030	शनि	25/09/2031	राहु	18/08/2033
मंगल	03/02/2029	बुध	19/02/2030	शनि	14/10/2030	गुरु	09/12/2031	शुक्र	13/01/2034
बुध	07/03/2029	शनि	27/03/2030	गुरु	26/11/2030	राहु	26/01/2032	सूर्य	25/02/2034

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु	
25/02/2034		06/04/2035		16/08/2037		05/01/2039		26/08/2041	
06/04/2035		16/08/2037		05/01/2039		26/08/2041		27/04/2043	
मंगल	27/03/2034	बुध	20/08/2035	शनि	02/10/2037	गुरु	24/06/2039	राहु	02/11/2041
बुध	30/05/2034	शनि	08/11/2035	गुरु	30/12/2037	राहु	09/10/2039	शुक्र	28/02/2042
शनि	06/07/2034	गुरु	08/04/2036	राहु	24/02/2038	शुक्र	13/04/2040	सूर्य	03/04/2042
गुरु	16/09/2034	राहु	13/07/2036	शुक्र	03/06/2038	सूर्य	06/06/2040	चंद्र	26/06/2042
राहु	31/10/2034	शुक्र	27/12/2036	सूर्य	01/07/2038	चंद्र	18/10/2040	मंगल	10/08/2042
शुक्र	18/01/2035	सूर्य	13/02/2037	चंद्र	10/09/2038	मंगल	28/12/2040	बुध	14/11/2042
सूर्य	09/02/2035	चंद्र	13/06/2037	मंगल	17/10/2038	बुध	29/05/2041	शनि	10/01/2043
चंद्र	06/04/2035	मंगल	16/08/2037	बुध	05/01/2039	शनि	26/08/2041	गुरु	27/04/2043

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि	
27/04/2043		27/03/2046		25/01/2047		30/08/2047		02/12/2048	
27/03/2046		25/01/2047		30/08/2047		02/12/2048		29/08/2049	
शुक्र	20/11/2043	सूर्य	13/04/2046	मंगल	11/02/2047	बुध	10/11/2047	शनि	27/12/2048
सूर्य	18/01/2044	चंद्र	25/05/2046	बुध	17/03/2047	शनि	23/12/2047	गुरु	13/02/2049
चंद्र	14/06/2044	मंगल	17/06/2046	शनि	06/04/2047	गुरु	13/03/2048	राहु	15/03/2049
मंगल	01/09/2044	बुध	04/08/2046	गुरु	14/05/2047	राहु	03/05/2048	शुक्र	06/05/2049
बुध	16/02/2045	शनि	01/09/2046	राहु	07/06/2047	शुक्र	31/07/2048	सूर्य	21/05/2049
शनि	25/05/2045	गुरु	24/10/2046	शुक्र	19/07/2047	सूर्य	26/08/2048	चंद्र	28/06/2049
गुरु	29/11/2045	राहु	27/11/2046	सूर्य	31/07/2047	चंद्र	29/10/2048	मंगल	18/07/2049
राहु	27/03/2046	शुक्र	25/01/2047	चंद्र	30/08/2047	मंगल	02/12/2048	बुध	29/08/2049

मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
29/08/2049		25/01/2051		16/12/2051		06/07/2053		16/12/2053	
25/01/2051		16/12/2051		06/07/2053		16/12/2053		25/01/2055	
गुरु	28/11/2049	राहु	03/03/2051	शुक्र	05/04/2052	सूर्य	15/07/2053	चंद्र	10/02/2054
राहु	24/01/2050	शुक्र	05/05/2051	सूर्य	06/05/2052	चंद्र	07/08/2053	मंगल	12/03/2054
शुक्र	04/05/2050	सूर्य	23/05/2051	चंद्र	24/07/2052	मंगल	19/08/2053	बुध	15/05/2054
सूर्य	01/06/2050	चंद्र	07/07/2051	मंगल	04/09/2052	बुध	13/09/2053	शनि	22/06/2054
चंद्र	12/08/2050	मंगल	31/07/2051	बुध	03/12/2052	शनि	28/09/2053	गुरु	01/09/2054
मंगल	19/09/2050	बुध	20/09/2051	शनि	24/01/2053	गुरु	27/10/2053	राहु	16/10/2054
बुध	09/12/2050	शनि	20/10/2051	गुरु	04/05/2053	राहु	14/11/2053	शुक्र	03/01/2055
शनि	25/01/2051	गुरु	16/12/2051	राहु	06/07/2053	शुक्र	16/12/2053	सूर्य	25/01/2055

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र	
25/01/2055		29/09/2057		27/04/2059		23/04/2062		13/03/2064	
29/09/2057		27/04/2059		23/04/2062		13/03/2064		03/07/2067	
बुध	28/06/2055	शनि	21/11/2057	गुरु	05/11/2059	राहु	09/07/2062	शुक्र	03/11/2064
शनि	27/09/2055	गुरु	02/03/2058	राहु	05/03/2060	शुक्र	20/11/2062	सूर्य	09/01/2065
गुरु	17/03/2056	राहु	05/05/2058	शुक्र	04/10/2060	सूर्य	28/12/2062	चंद्र	26/06/2065
राहु	03/07/2056	शुक्र	25/08/2058	सूर्य	03/12/2060	चंद्र	03/04/2063	मंगल	23/09/2065
शुक्र	09/01/2057	सूर्य	26/09/2058	चंद्र	04/05/2061	मंगल	24/05/2063	बुध	01/04/2066
सूर्य	05/03/2057	चंद्र	15/12/2058	मंगल	24/07/2061	बुध	10/09/2063	शनि	22/07/2066
चंद्र	18/07/2057	मंगल	26/01/2059	बुध	12/01/2062	शनि	13/11/2063	गुरु	19/02/2067
मंगल	29/09/2057	बुध	27/04/2059	शनि	23/04/2062	गुरु	13/03/2064	राहु	03/07/2067

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु	
03/07/2067		12/06/2068		23/10/2070		26/01/2072		29/12/2072	
12/06/2068		23/10/2070		26/01/2072		29/12/2072		02/10/2074	
सूर्य	23/07/2067	चंद्र	10/10/2068	मंगल	26/11/2070	शनि	26/02/2072	गुरु	21/04/2073
चंद्र	08/09/2067	मंगल	13/12/2068	बुध	06/02/2071	गुरु	26/04/2072	राहु	01/07/2073
मंगल	04/10/2067	बुध	28/04/2069	शनि	21/03/2071	राहु	02/06/2072	शुक्र	03/11/2073
बुध	27/11/2067	शनि	17/07/2069	गुरु	10/06/2071	शुक्र	07/08/2072	सूर्य	09/12/2073
शनि	29/12/2067	गुरु	15/12/2069	राहु	31/07/2071	सूर्य	26/08/2072	चंद्र	08/03/2074
गुरु	28/02/2068	राहु	21/03/2070	शुक्र	28/10/2071	चंद्र	12/10/2072	मंगल	25/04/2074
राहु	06/04/2068	शुक्र	05/09/2070	सूर्य	23/11/2071	मंगल	06/11/2072	बुध	04/08/2074
शुक्र	12/06/2068	सूर्य	23/10/2070	चंद्र	26/01/2072	बुध	29/12/2072	शनि	02/10/2074

शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
02/10/2074		12/11/2075		23/10/2077		13/05/2078		03/10/2079	
12/11/2075		23/10/2077		13/05/2078		03/10/2079		29/06/2080	
राहु	17/11/2074	शुक्र	29/03/2076	सूर्य	03/11/2077	चंद्र	23/07/2078	मंगल	23/10/2079
शुक्र	03/02/2075	सूर्य	08/05/2076	चंद्र	01/12/2077	मंगल	29/08/2078	बुध	04/12/2079
सूर्य	26/02/2075	चंद्र	15/08/2076	मंगल	16/12/2077	बुध	17/11/2078	शनि	29/12/2079
चंद्र	23/04/2075	मंगल	06/10/2076	बुध	17/01/2078	शनि	03/01/2079	गुरु	15/02/2080
मंगल	23/05/2075	बुध	26/01/2077	शनि	05/02/2078	गुरु	03/04/2079	राहु	16/03/2080
बुध	26/07/2075	शनि	02/04/2077	गुरु	12/03/2078	राहु	29/05/2079	शुक्र	08/05/2080
शनि	02/09/2075	गुरु	05/08/2077	राहु	04/04/2078	शुक्र	05/09/2079	सूर्य	23/05/2080
गुरु	12/11/2075	राहु	23/10/2077	शुक्र	13/05/2078	सूर्य	03/10/2079	चंद्र	29/06/2080

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
29/06/2080		25/01/2082		30/05/2085		10/07/2087		21/03/2091	
25/01/2082		30/05/2085		10/07/2087		21/03/2091		09/04/2092	
बुध	28/09/2080	गुरु	28/08/2082	राहु	24/08/2085	शुक्र	29/03/2088	सूर्य	11/04/2091
शनि	20/11/2080	राहु	11/01/2083	शुक्र	21/01/2086	सूर्य	12/06/2088	चंद्र	04/06/2091
गुरु	01/03/2081	शुक्र	05/09/2083	सूर्य	05/03/2086	चंद्र	16/12/2088	मंगल	02/07/2091
राहु	04/05/2081	सूर्य	12/11/2083	चंद्र	20/06/2086	मंगल	26/03/2089	बुध	01/09/2091
शुक्र	24/08/2081	चंद्र	29/04/2084	मंगल	16/08/2086	बुध	24/10/2089	शनि	06/10/2091
सूर्य	25/09/2081	मंगल	29/07/2084	बुध	15/12/2086	शनि	26/02/2090	गुरु	13/12/2091
चंद्र	14/12/2081	बुध	06/02/2085	शनि	25/02/2087	गुरु	22/10/2090	राहु	25/01/2092
मंगल	25/01/2082	शनि	30/05/2085	गुरु	10/07/2087	राहु	21/03/2091	शुक्र	09/04/2092

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु	
09/04/2092		29/11/2094		26/04/2096		23/04/2099		26/01/2101	
29/11/2094		26/04/2096		23/04/2099		26/01/2101		28/05/2102	
चंद्र	21/08/2092	मंगल	06/01/2095	बुध	15/10/2096	शनि	22/06/2099	राहु	21/03/2101
मंगल	31/10/2092	बुध	28/03/2095	शनि	24/01/2097	गुरु	13/10/2099	शुक्र	24/06/2101
बुध	01/04/2093	शनि	15/05/2095	गुरु	04/08/2097	राहु	23/12/2099	सूर्य	21/07/2101
शनि	29/06/2093	गुरु	13/08/2095	राहु	04/12/2097	शुक्र	27/04/2100	चंद्र	26/09/2101
गुरु	16/12/2093	राहु	09/10/2095	शुक्र	04/07/2098	सूर्य	02/06/2100	मंगल	02/11/2101
राहु	02/04/2094	शुक्र	17/01/2096	सूर्य	03/09/2098	चंद्र	30/08/2100	बुध	17/01/2102
शुक्र	06/10/2094	सूर्य	15/02/2096	चंद्र	01/02/2099	मंगल	17/10/2100	शनि	03/03/2102
सूर्य	29/11/2094	चंद्र	26/04/2096	मंगल	23/04/2099	बुध	26/01/2101	गुरु	28/05/2102

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध	
28/05/2102		26/09/2104		28/05/2105		26/01/2107		17/12/2107	
26/09/2104		28/05/2105		26/01/2107		17/12/2107		06/11/2109	
शुक्र	10/11/2102	सूर्य	10/10/2104	चंद्र	20/08/2105	मंगल	20/02/2107	बुध	04/04/2108
सूर्य	27/12/2102	चंद्र	13/11/2104	मंगल	04/10/2105	बुध	12/04/2107	शनि	07/06/2108
चंद्र	24/04/2103	मंगल	01/12/2104	बुध	08/01/2106	शनि	12/05/2107	गुरु	06/10/2108
मंगल	27/06/2103	बुध	08/01/2105	शनि	06/03/2106	गुरु	08/07/2107	राहु	22/12/2108
बुध	08/11/2103	शनि	30/01/2105	गुरु	21/06/2106	राहु	13/08/2107	शुक्र	05/05/2109
शनि	26/01/2104	गुरु	14/03/2105	राहु	27/08/2106	शुक्र	15/10/2107	सूर्य	12/06/2109
गुरु	24/06/2104	राहु	10/04/2105	शुक्र	24/12/2106	सूर्य	02/11/2107	चंद्र	16/09/2109
राहु	26/09/2104	शुक्र	28/05/2105	सूर्य	26/01/2107	चंद्र	17/12/2107	मंगल	06/11/2109

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : उल्का 2 वर्ष 9 मास 16 दिन

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
14/02/2013		02/12/2015		01/12/2022		01/12/2030		02/12/2031	
02/12/2015		01/12/2022		01/12/2030		02/12/2031		01/12/2033	
	00/00/0000	सिद्ध	12/04/2017	संक	11/09/2024	मंग	12/12/2030	पिंग	11/01/2032
	14/02/2013	संक	01/11/2018	मंग	01/12/2024	पिंग	01/01/2031	धांय	12/03/2032
संक	02/06/2013	मंग	11/01/2019	पिंग	12/05/2025	धांय	31/01/2031	भ्राम	01/06/2032
मंग	01/08/2013	पिंग	02/06/2019	धांय	11/01/2026	भ्राम	13/03/2031	भद्रि	11/09/2032
पिंग	01/12/2013	धांय	01/01/2020	भ्राम	01/12/2026	भद्रि	03/05/2031	उल्क	10/01/2033
धांय	02/06/2014	भ्राम	11/10/2020	भद्रि	11/01/2028	उल्क	02/07/2031	सिद्ध	02/06/2033
भ्राम	31/01/2015	भद्रि	01/10/2021	उल्क	12/05/2029	सिद्ध	11/09/2031	संक	11/11/2033
भद्रि	02/12/2015	उल्क	01/12/2022	सिद्ध	01/12/2030	संक	02/12/2031	मंग	01/12/2033

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
01/12/2033		01/12/2036		01/12/2040		01/12/2045		02/12/2051	
01/12/2036		01/12/2040		01/12/2045		02/12/2051		01/12/2058	
धांय	02/03/2034	भ्राम	12/05/2037	भद्रि	12/08/2041	उल्क	01/12/2046	सिद्ध	12/04/2053
भ्राम	02/07/2034	भद्रि	01/12/2037	उल्क	12/06/2042	सिद्ध	01/02/2048	संक	01/11/2054
भद्रि	01/12/2034	उल्क	02/08/2038	सिद्ध	02/06/2043	संक	02/06/2049	मंग	11/01/2055
उल्क	02/06/2035	सिद्ध	13/05/2039	संक	12/07/2044	मंग	01/08/2049	पिंग	02/06/2055
सिद्ध	01/01/2036	संक	01/04/2040	मंग	01/09/2044	पिंग	01/12/2049	धांय	01/01/2056
संक	01/09/2036	मंग	12/05/2040	पिंग	11/12/2044	धांय	02/06/2050	भ्राम	11/10/2056
मंग	01/10/2036	पिंग	01/08/2040	धांय	12/05/2045	भ्राम	31/01/2051	भद्रि	01/10/2057
पिंग	01/12/2036	धांय	01/12/2040	भ्राम	01/12/2045	भद्रि	02/12/2051	उल्क	01/12/2058

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
01/12/2058		01/12/2066		02/12/2067		01/12/2069		01/12/2072	
01/12/2066		02/12/2067		01/12/2069		01/12/2072		01/12/2076	
संक	11/09/2060	मंग	12/12/2066	पिंग	11/01/2068	धांय	02/03/2070	भ्राम	12/05/2073
मंग	01/12/2060	पिंग	01/01/2067	धांय	12/03/2068	भ्राम	02/07/2070	भद्रि	01/12/2073
पिंग	12/05/2061	धांय	31/01/2067	भ्राम	01/06/2068	भद्रि	01/12/2070	उल्क	02/08/2074
धांय	11/01/2062	भ्राम	13/03/2067	भद्रि	11/09/2068	उल्क	02/06/2071	सिद्ध	13/05/2075
भ्राम	01/12/2062	भद्रि	03/05/2067	उल्क	10/01/2069	सिद्ध	01/01/2072	संक	01/04/2076
भद्रि	11/01/2064	उल्क	02/07/2067	सिद्ध	02/06/2069	संक	01/09/2072	मंग	12/05/2076
उल्क	12/05/2065	सिद्ध	11/09/2067	संक	11/11/2069	मंग	01/10/2072	पिंग	01/08/2076
सिद्ध	01/12/2066	संक	02/12/2067	मंग	01/12/2069	पिंग	01/12/2072	धांय	01/12/2076

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
01/12/2076		01/12/2081		02/12/2087		01/12/2094		02/12/2102	
01/12/2081		02/12/2087		01/12/2094		02/12/2102		03/12/2103	
भद्रि	12/08/2077	उल्क	01/12/2082	सिद्ध	12/04/2089	संक	11/09/2096	मंग	13/12/2102
उल्क	12/06/2078	सिद्ध	01/02/2084	संक	01/11/2090	मंग	01/12/2096	पिंग	02/01/2103
सिद्ध	02/06/2079	संक	02/06/2085	मंग	11/01/2091	पिंग	12/05/2097	धांय	01/02/2103
संक	12/07/2080	मंग	01/08/2085	पिंग	02/06/2091	धांय	11/01/2098	भ्राम	14/03/2103
मंग	01/09/2080	पिंग	01/12/2085	धांय	01/01/2092	भ्राम	01/12/2098	भद्रि	04/05/2103
पिंग	11/12/2080	धांय	02/06/2086	भ्राम	11/10/2092	भद्रि	11/01/2100	उल्क	03/07/2103
धांय	12/05/2081	भ्राम	31/01/2087	भद्रि	01/10/2093	उल्क	13/05/2101	सिद्ध	12/09/2103
भ्राम	01/12/2081	भद्रि	02/12/2087	उल्क	01/12/2094	सिद्ध	02/12/2102	संक	03/12/2103

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
03/12/2103		02/12/2105		02/12/2108		02/12/2112		02/12/2117	
02/12/2105		02/12/2108		02/12/2112		02/12/2117		00/00/0000	
पिंग	12/01/2104	धांय	03/03/2106	भ्राम	13/05/2109	भद्रि	13/08/2113	उल्क	02/12/2118
धांय	13/03/2104	भ्राम	03/07/2106	भद्रि	02/12/2109	उल्क	13/06/2114	सिद्ध	02/02/2120
भ्राम	02/06/2104	भद्रि	02/12/2106	उल्क	03/08/2110	सिद्ध	03/06/2115	संक	15/02/2121
भद्रि	12/09/2104	उल्क	03/06/2107	सिद्ध	14/05/2111	संक	13/07/2116		00/00/0000
उल्क	11/01/2105	सिद्ध	02/01/2108	संक	02/04/2112	मंग	02/09/2116		00/00/0000
सिद्ध	03/06/2105	संक	02/09/2108	मंग	13/05/2112	पिंग	12/12/2116		00/00/0000
संक	12/11/2105	मंग	02/10/2108	पिंग	02/08/2112	धांय	13/05/2117		00/00/0000
मंग	02/12/2105	पिंग	02/12/2108	धांय	02/12/2112	भ्राम	02/12/2117		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि		संक - उल्क		संक - सिद्ध	
12/05/2025		11/01/2026		01/12/2026		11/01/2028		12/05/2029	
11/01/2026		01/12/2026		11/01/2028		12/05/2029		01/12/2030	
धांय	02/06/2025	भ्राम	16/02/2026	भद्रि	27/01/2027	उल्क	01/04/2028	सिद्ध	31/08/2029
भ्राम	29/06/2025	भद्रि	02/04/2026	उल्क	04/04/2027	सिद्ध	05/07/2028	संक	04/01/2030
भद्रि	01/08/2025	उल्क	26/05/2026	सिद्ध	22/06/2027	संक	21/10/2028	मंग	20/01/2030
उल्क	11/09/2025	सिद्ध	28/07/2026	संक	21/09/2027	मंग	04/11/2028	पिंग	20/02/2030
सिद्ध	28/10/2025	संक	08/10/2026	मंग	02/10/2027	पिंग	01/12/2028	धांय	09/04/2030
संक	21/12/2025	मंग	17/10/2026	पिंग	24/10/2027	धांय	10/01/2029	भ्राम	11/06/2030
मंग	28/12/2025	पिंग	04/11/2026	धांय	27/11/2027	भ्राम	06/03/2029	भद्रि	29/08/2030
पिंग	11/01/2026	धांय	01/12/2026	भ्राम	11/01/2028	भद्रि	12/05/2029	उल्क	01/12/2030

मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय		मंग - भ्राम		मंग - भद्रि	
01/12/2030		12/12/2030		01/01/2031		31/01/2031		13/03/2031	
12/12/2030		01/01/2031		31/01/2031		13/03/2031		03/05/2031	
मंग	02/12/2030	पिंग	13/12/2030	धांय	03/01/2031	भ्राम	05/02/2031	भद्रि	20/03/2031
पिंग	02/12/2030	धांय	14/12/2030	भ्राम	07/01/2031	भद्रि	10/02/2031	उल्क	28/03/2031
धांय	03/12/2030	भ्राम	17/12/2030	भद्रि	11/01/2031	उल्क	17/02/2031	सिद्ध	07/04/2031
भ्राम	04/12/2030	भद्रि	19/12/2030	उल्क	16/01/2031	सिद्ध	25/02/2031	संक	18/04/2031
भद्रि	06/12/2030	उल्क	23/12/2030	सिद्ध	22/01/2031	संक	06/03/2031	मंग	20/04/2031
उल्क	07/12/2030	सिद्ध	27/12/2030	संक	29/01/2031	मंग	07/03/2031	पिंग	23/04/2031
सिद्ध	09/12/2030	संक	31/12/2030	मंग	30/01/2031	पिंग	09/03/2031	धांय	27/04/2031
संक	12/12/2030	मंग	01/01/2031	पिंग	31/01/2031	धांय	13/03/2031	भ्राम	03/05/2031

मंग - उल्क		मंग - सिद्ध		मंग - संक		पिंग - पिंग		पिंग - धांय	
03/05/2031		02/07/2031		11/09/2031		02/12/2031		11/01/2032	
02/07/2031		11/09/2031		02/12/2031		11/01/2032		12/03/2032	
उल्क	13/05/2031	सिद्ध	16/07/2031	संक	30/09/2031	पिंग	04/12/2031	धांय	16/01/2032
सिद्ध	25/05/2031	संक	01/08/2031	मंग	02/10/2031	धांय	07/12/2031	भ्राम	23/01/2032
संक	07/06/2031	मंग	03/08/2031	पिंग	06/10/2031	भ्राम	12/12/2031	भद्रि	01/02/2032
मंग	09/06/2031	पिंग	07/08/2031	धांय	13/10/2031	भद्रि	17/12/2031	उल्क	11/02/2032
पिंग	12/06/2031	धांय	13/08/2031	भ्राम	22/10/2031	उल्क	24/12/2031	सिद्ध	23/02/2032
धांय	17/06/2031	भ्राम	21/08/2031	भद्रि	02/11/2031	सिद्ध	01/01/2032	संक	07/03/2032
भ्राम	24/06/2031	भद्रि	31/08/2031	उल्क	16/11/2031	संक	10/01/2032	मंग	09/03/2032
भद्रि	02/07/2031	उल्क	11/09/2031	सिद्ध	02/12/2031	मंग	11/01/2032	पिंग	12/03/2032

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - भ्राम	पिंग - भद्रि	पिंग - उल्क	पिंग - सिद्ध	पिंग - संक
12/03/2032	01/06/2032	11/09/2032	10/01/2033	02/06/2033
01/06/2032	11/09/2032	10/01/2033	02/06/2033	11/11/2033
भ्राम 21/03/2032	भद्रि 15/06/2032	उल्क 01/10/2032	सिद्ध 07/02/2033	संक 08/07/2033
भद्रि 01/04/2032	उल्क 02/07/2032	सिद्ध 25/10/2032	संक 11/03/2033	मंग 12/07/2033
उल्क 15/04/2032	सिद्ध 22/07/2032	संक 21/11/2032	मंग 15/03/2033	पिंग 21/07/2033
सिद्ध 01/05/2032	संक 14/08/2032	मंग 24/11/2032	पिंग 23/03/2033	धांय 04/08/2033
संक 19/05/2032	मंग 16/08/2032	पिंग 01/12/2032	धांय 03/04/2033	भ्राम 22/08/2033
मंग 21/05/2032	पिंग 22/08/2032	धांय 11/12/2032	भ्राम 19/04/2033	भद्रि 13/09/2033
पिंग 26/05/2032	धांय 30/08/2032	भ्राम 25/12/2032	भद्रि 09/05/2033	उल्क 10/10/2033
धांय 01/06/2032	भ्राम 11/09/2032	भद्रि 10/01/2033	उल्क 02/06/2033	सिद्ध 11/11/2033

पिंग - मंग	धांय - धांय	धांय - भ्राम	धांय - भद्रि	धांय - उल्क
11/11/2033	01/12/2033	02/03/2034	02/07/2034	01/12/2034
01/12/2033	02/03/2034	02/07/2034	01/12/2034	02/06/2035
मंग 11/11/2033	धांय 09/12/2033	भ्राम 16/03/2034	भद्रि 23/07/2034	उल्क 01/01/2035
पिंग 13/11/2033	भ्राम 19/12/2033	भद्रि 02/04/2034	उल्क 18/08/2034	सिद्ध 05/02/2035
धांय 14/11/2033	भद्रि 01/01/2034	उल्क 22/04/2034	सिद्ध 16/09/2034	संक 18/03/2035
भ्राम 16/11/2033	उल्क 16/01/2034	सिद्ध 16/05/2034	संक 20/10/2034	मंग 23/03/2035
भद्रि 19/11/2033	सिद्ध 03/02/2034	संक 12/06/2034	मंग 24/10/2034	पिंग 02/04/2035
उल्क 23/11/2033	संक 23/02/2034	मंग 15/06/2034	पिंग 02/11/2034	धांय 17/04/2035
सिद्ध 27/11/2033	मंग 25/02/2034	पिंग 22/06/2034	धांय 14/11/2034	भ्राम 08/05/2035
संक 01/12/2033	पिंग 02/03/2034	धांय 02/07/2034	भ्राम 01/12/2034	भद्रि 02/06/2035

धांय - सिद्ध	धांय - संक	धांय - मंग	धांय - पिंग	भ्राम - भ्राम
02/06/2035	01/01/2036	01/09/2036	01/10/2036	01/12/2036
01/01/2036	01/09/2036	01/10/2036	01/12/2036	12/05/2037
सिद्ध 13/07/2035	संक 24/02/2036	मंग 01/09/2036	पिंग 04/10/2036	भ्राम 19/12/2036
संक 30/08/2035	मंग 02/03/2036	पिंग 03/09/2036	धांय 09/10/2036	भद्रि 10/01/2037
मंग 05/09/2035	पिंग 15/03/2036	धांय 06/09/2036	भ्राम 16/10/2036	उल्क 07/02/2037
पिंग 17/09/2035	धांय 05/04/2036	भ्राम 09/09/2036	भद्रि 25/10/2036	सिद्ध 10/03/2037
धांय 04/10/2035	भ्राम 02/05/2036	भद्रि 13/09/2036	उल्क 04/11/2036	संक 15/04/2037
भ्राम 28/10/2035	भद्रि 05/06/2036	उल्क 18/09/2036	सिद्ध 16/11/2036	मंग 20/04/2037
भद्रि 27/11/2035	उल्क 15/07/2036	सिद्ध 24/09/2036	संक 29/11/2036	पिंग 29/04/2037
उल्क 01/01/2036	सिद्ध 01/09/2036	संक 01/10/2036	मंग 01/12/2036	धांय 12/05/2037

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : वृष 4 वर्ष 7 मास 4 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : रेवती - 3 सव्य
देह : वृष जीव : मिथुन

वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष	
14/02/2013		20/09/2017		19/09/2024		20/09/2034		20/09/2038	
20/09/2017		19/09/2024		20/09/2034		20/09/2038		20/09/2042	
	00/00/0000	मेष	23/04/2018	मीन	04/12/2025	कुंभ	29/11/2034	मक	29/11/2038
	00/00/0000	मीन	25/02/2019	कुंभ	29/05/2026	मक	08/02/2035	धनु	24/05/2039
	00/00/0000	कुंभ	29/06/2019	मक	21/11/2026	धनु	03/08/2035	मेष	25/09/2039
	00/00/0000	मक	30/10/2019	धनु	04/02/2028	मेष	04/12/2035	वृष	02/07/2040
	00/00/0000	धनु	02/09/2020	मेष	08/12/2028	वृष	11/09/2036	मिथु	08/12/2040
	00/00/0000	मेष	05/04/2021	वृष	12/11/2030	मिथु	16/02/2037	वृष	15/09/2041
	14/02/2013	वृष	11/08/2022	मिथु	13/12/2031	वृष	25/11/2037	मेष	17/01/2042
वृष	26/12/2015	मिथु	16/05/2023	वृष	16/11/2033	मेष	28/03/2038	मीन	12/07/2042
मिथु	20/09/2017	वृष	19/09/2024	मेष	20/09/2034	मीन	20/09/2038	कुंभ	20/09/2042

धनु 10 वर्ष		मेष 7 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष	
20/09/2042		19/09/2052		20/09/2059		20/09/2075		19/09/2084	
19/09/2052		20/09/2059		20/09/2075		19/09/2084		00/00/0000	
धनु	04/12/2043	मेष	23/04/2053	वृष	21/10/2062	मिथु	11/09/2076	वृष	21/10/2087
मेष	07/10/2044	वृष	29/08/2054	मिथु	15/07/2064	वृष	06/06/2078	मेष	25/02/2089
वृष	11/09/2046	मिथु	02/06/2055	वृष	16/08/2067	मेष	11/03/2079	मीन	30/01/2091
मिथु	12/10/2047	वृष	07/10/2056	मेष	21/12/2068	मीन	10/04/2080	कुंभ	08/11/2091
वृष	15/09/2049	मेष	11/05/2057	मीन	25/11/2070	कुंभ	15/09/2080	मक	15/08/2092
मेष	20/07/2050	मीन	15/03/2058	कुंभ	03/09/2071	मक	20/02/2081	धनु	20/07/2094
मीन	03/10/2051	कुंभ	16/07/2058	मक	10/06/2072	धनु	24/03/2082	मेष	25/11/2095
कुंभ	27/03/2052	मक	16/11/2058	धनु	15/05/2074	मेष	26/12/2082	वृष	15/02/2096
मक	19/09/2052	धनु	20/09/2059	मेष	20/09/2075	वृष	19/09/2084		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मीन - मीन		मीन - कुंभ		मीन - मक		मीन - धनु		मीन - मेष	
19/09/2024		04/12/2025		29/05/2026		21/11/2026		04/02/2028	
04/12/2025		29/05/2026		21/11/2026		04/02/2028		08/12/2028	
मीन	11/11/2024	कुंभ	12/12/2025	मक	06/06/2026	धनु	13/01/2027	मेष	01/03/2028
कुंभ	03/12/2024	मक	20/12/2025	धनु	27/06/2026	मेष	19/02/2027	वृष	29/04/2028
मक	24/12/2024	धनु	11/01/2026	मेष	12/07/2026	वृष	15/05/2027	मिथु	01/06/2028
धनु	15/02/2025	मेष	26/01/2026	वृष	15/08/2026	मिथु	01/07/2027	वृष	31/07/2028
मेष	24/03/2025	वृष	28/02/2026	मिथु	03/09/2026	वृष	24/09/2027	मेष	26/08/2028
वृष	17/06/2025	मिथु	20/03/2026	वृष	07/10/2026	मेष	31/10/2027	मीन	02/10/2028
मिथु	04/08/2025	वृष	22/04/2026	मेष	22/10/2026	मीन	23/12/2027	कुंभ	17/10/2028
वृष	27/10/2025	मेष	07/05/2026	मीन	12/11/2026	कुंभ	13/01/2028	मक	01/11/2028
मेष	04/12/2025	मीन	29/05/2026	कुंभ	21/11/2026	मक	04/02/2028	धनु	08/12/2028

मीन - वृष		मीन - मिथु		मीन - वृष		मीन - मेष		कुंभ - कुंभ	
08/12/2028		12/11/2030		13/12/2031		16/11/2033		20/09/2034	
12/11/2030		13/12/2031		16/11/2033		20/09/2034		29/11/2034	
वृष	22/04/2029	मिथु	25/12/2030	वृष	27/04/2032	मेष	12/12/2033	कुंभ	23/09/2034
मिथु	08/07/2029	वृष	11/03/2031	मेष	25/06/2032	मीन	18/01/2034	मक	27/09/2034
वृष	20/11/2029	मेष	13/04/2031	मीन	18/09/2032	कुंभ	02/02/2034	धनु	05/10/2034
मेष	19/01/2030	मीन	31/05/2031	कुंभ	22/10/2032	मक	17/02/2034	मेष	11/10/2034
मीन	14/04/2030	कुंभ	19/06/2031	मक	25/11/2032	धनु	26/03/2034	वृष	25/10/2034
कुंभ	18/05/2030	मक	08/07/2031	धनु	17/02/2033	मेष	21/04/2034	मिथु	01/11/2034
मक	21/06/2030	धनु	25/08/2031	मेष	18/04/2033	वृष	19/06/2034	वृष	15/11/2034
धनु	13/09/2030	मेष	27/09/2031	वृष	01/09/2033	मिथु	23/07/2034	मेष	21/11/2034
मेष	12/11/2030	वृष	13/12/2031	मिथु	16/11/2033	वृष	20/09/2034	मीन	29/11/2034

कुंभ - मक		कुंभ - धनु		कुंभ - मेष		कुंभ - वृष		कुंभ - मिथु	
29/11/2034		08/02/2035		03/08/2035		04/12/2035		11/09/2036	
08/02/2035		03/08/2035		04/12/2035		11/09/2036		16/02/2037	
मक	03/12/2034	धनु	01/03/2035	मेष	13/08/2035	वृष	27/01/2036	मिथु	28/09/2036
धनु	11/12/2034	मेष	16/03/2035	वृष	06/09/2035	मिथु	27/02/2036	वृष	28/10/2036
मेष	17/12/2034	वृष	19/04/2035	मिथु	19/09/2035	वृष	21/04/2036	मेष	11/11/2036
वृष	31/12/2034	मिथु	08/05/2035	वृष	13/10/2035	मेष	15/05/2036	मीन	30/11/2036
मिथु	07/01/2035	वृष	11/06/2035	मेष	23/10/2035	मीन	18/06/2036	कुंभ	07/12/2036
वृष	21/01/2035	मेष	26/06/2035	मीन	07/11/2035	कुंभ	01/07/2036	मक	15/12/2036
मेष	27/01/2035	मीन	17/07/2035	कुंभ	13/11/2035	मक	15/07/2036	धनु	03/01/2037
मीन	04/02/2035	कुंभ	25/07/2035	मक	19/11/2035	धनु	18/08/2036	मेष	17/01/2037
कुंभ	08/02/2035	मक	03/08/2035	धनु	04/12/2035	मेष	11/09/2036	वृष	16/02/2037

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कुंभ - वृष		कुंभ - मेष		कुंभ - मीन		मक - मक		मक - धनु	
16/02/2037		25/11/2037		28/03/2038		20/09/2038		29/11/2038	
25/11/2037		28/03/2038		20/09/2038		29/11/2038		24/05/2039	
वृष	11/04/2037	मेष	05/12/2037	मीन	18/04/2038	मक	23/09/2038	धनु	21/12/2038
मेष	05/05/2037	मीन	20/12/2037	कुंभ	27/04/2038	धनु	02/10/2038	मेष	04/01/2039
मीन	08/06/2037	कुंभ	26/12/2037	मक	05/05/2038	मेष	08/10/2038	वृष	07/02/2039
कुंभ	22/06/2037	मक	01/01/2038	धनु	26/05/2038	वृष	21/10/2038	मिथु	26/02/2039
मक	05/07/2037	धनु	16/01/2038	मेष	10/06/2038	मिथु	29/10/2038	वृष	01/04/2039
धनु	08/08/2037	मेष	26/01/2038	वृष	14/07/2038	वृष	12/11/2038	मेष	16/04/2039
मेष	01/09/2037	वृष	19/02/2038	मिथु	02/08/2038	मेष	17/11/2038	मीन	07/05/2039
वृष	25/10/2037	मिथु	04/03/2038	वृष	05/09/2038	मीन	26/11/2038	कुंभ	16/05/2039
मिथु	25/11/2037	वृष	28/03/2038	मेष	20/09/2038	कुंभ	29/11/2038	मक	24/05/2039

मक - मेष		मक - वृष		मक - मिथु		मक - वृष		मक - मेष	
24/05/2039		25/09/2039		02/07/2040		08/12/2040		15/09/2041	
25/09/2039		02/07/2040		08/12/2040		15/09/2041		17/01/2042	
मेष	04/06/2039	वृष	18/11/2039	मिथु	19/07/2040	वृष	31/01/2041	मेष	26/09/2041
वृष	28/06/2039	मिथु	18/12/2039	वृष	19/08/2040	मेष	24/02/2041	मीन	11/10/2041
मिथु	11/07/2039	वृष	11/02/2040	मेष	01/09/2040	मीन	30/03/2041	कुंभ	16/10/2041
वृष	04/08/2039	मेष	05/03/2040	मीन	20/09/2040	कुंभ	12/04/2041	मक	22/10/2041
मेष	14/08/2039	मीन	08/04/2040	कुंभ	28/09/2040	मक	26/04/2041	धनु	06/11/2041
मीन	29/08/2039	कुंभ	22/04/2040	मक	06/10/2040	धनु	30/05/2041	मेष	17/11/2041
कुंभ	04/09/2039	मक	06/05/2040	धनु	25/10/2040	मेष	22/06/2041	वृष	10/12/2041
मक	10/09/2039	धनु	08/06/2040	मेष	07/11/2040	वृष	16/08/2041	मिथु	24/12/2041
धनु	25/09/2039	मेष	02/07/2040	वृष	08/12/2040	मिथु	15/09/2041	वृष	17/01/2042

मक - मीन		मक - कुंभ		धनु - धनु		धनु - मेष		धनु - वृष	
17/01/2042		12/07/2042		20/09/2042		04/12/2043		07/10/2044	
12/07/2042		20/09/2042		04/12/2043		07/10/2044		11/09/2046	
मीन	07/02/2042	कुंभ	15/07/2042	धनु	12/11/2042	मेष	30/12/2043	वृष	20/02/2045
कुंभ	15/02/2042	मक	18/07/2042	मेष	19/12/2042	वृष	27/02/2044	मिथु	07/05/2045
मक	24/02/2042	धनु	27/07/2042	वृष	14/03/2043	मिथु	01/04/2044	वृष	20/09/2045
धनु	17/03/2042	मेष	02/08/2042	मिथु	01/05/2043	वृष	30/05/2044	मेष	18/11/2045
मेष	01/04/2042	वृष	15/08/2042	वृष	24/07/2043	मेष	25/06/2044	मीन	11/02/2046
वृष	05/05/2042	मिथु	23/08/2042	मेष	31/08/2043	मीन	01/08/2044	कुंभ	17/03/2046
मिथु	24/05/2042	वृष	06/09/2042	मीन	23/10/2043	कुंभ	16/08/2044	मक	20/04/2046
वृष	27/06/2042	मेष	11/09/2042	कुंभ	13/11/2043	मक	31/08/2044	धनु	14/07/2046
मेष	12/07/2042	मीन	20/09/2042	मक	04/12/2043	धनु	07/10/2044	मेष	11/09/2046

चर दशा

भोग्य दशा काल : कर्क 4 वर्ष 0 मास 0 दिन

कर्क 4 वर्ष	
14/02/2013	
14/02/2017	
मिथु	16/06/2013
वृष	16/10/2013
मेष	14/02/2014
मीन	16/06/2014
कुंभ	16/10/2014
मक	15/02/2015
धनु	16/06/2015
वृश्चि	16/10/2015
तुला	15/02/2016
कन्या	16/06/2016
सिंह	15/10/2016
कर्क	14/02/2017

मिथुन 8 वर्ष	
14/02/2017	
14/02/2025	
वृष	16/10/2017
मेष	16/06/2018
मीन	15/02/2019
कुंभ	16/10/2019
मक	16/06/2020
धनु	14/02/2021
वृश्चि	16/10/2021
तुला	16/06/2022
कन्या	15/02/2023
सिंह	16/10/2023
कर्क	16/06/2024
मिथु	14/02/2025

वृष 8 वर्ष	
14/02/2025	
14/02/2033	
मेष	16/10/2025
मीन	16/06/2026
कुंभ	15/02/2027
मक	16/10/2027
धनु	16/06/2028
वृश्चि	14/02/2029
तुला	16/10/2029
कन्या	16/06/2030
सिंह	15/02/2031
कर्क	16/10/2031
मिथु	16/06/2032
वृष	14/02/2033

मेष 10 वर्ष	
14/02/2033	
15/02/2043	
वृष	16/12/2033
मिथु	16/10/2034
कर्क	16/08/2035
सिंह	16/06/2036
कन्या	16/04/2037
तुला	14/02/2038
वृश्चि	16/12/2038
धनु	16/10/2039
मक	16/08/2040
कुंभ	16/06/2041
मीन	16/04/2042
मेष	15/02/2043

मीन 10 वर्ष	
15/02/2043	
14/02/2053	
मेष	16/12/2043
वृष	15/10/2044
मिथु	16/08/2045
कर्क	16/06/2046
सिंह	17/04/2047
कन्या	15/02/2048
तुला	15/12/2048
वृश्चि	16/10/2049
धनु	16/08/2050
मक	16/06/2051
कुंभ	16/04/2052
मीन	14/02/2053

कुम्भ 4 वर्ष	
14/02/2053	
14/02/2057	
मीन	16/06/2053
मेष	16/10/2053
वृष	14/02/2054
मिथु	16/06/2054
कर्क	16/10/2054
सिंह	15/02/2055
कन्या	16/06/2055
तुला	16/10/2055
वृश्चि	15/02/2056
धनु	16/06/2056
मक	15/10/2056
कुंभ	14/02/2057

मकर 3 वर्ष	
14/02/2057	
15/02/2060	
धनु	16/05/2057
वृश्चि	16/08/2057
तुला	15/11/2057
कन्या	14/02/2058
सिंह	17/05/2058
कर्क	16/08/2058
मिथु	15/11/2058
वृष	15/02/2059
मेष	17/05/2059
मीन	16/08/2059
कुंभ	16/11/2059
मक	15/02/2060

धनु 5 वर्ष	
15/02/2060	
14/02/2065	
वृश्चि	16/07/2060
तुला	15/12/2060
कन्या	16/05/2061
सिंह	16/10/2061
कर्क	17/03/2062
मिथु	16/08/2062
वृष	15/01/2063
मेष	16/06/2063
मीन	16/11/2063
कुंभ	16/04/2064
मक	15/09/2064
धनु	14/02/2065

वृश्चिक 3 वर्ष	
14/02/2065	
15/02/2068	
तुला	16/05/2065
कन्या	16/08/2065
सिंह	15/11/2065
कर्क	14/02/2066
मिथु	17/05/2066
वृष	16/08/2066
मेष	15/11/2066
मीन	15/02/2067
कुंभ	17/05/2067
मक	16/08/2067
धनु	16/11/2067
वृश्चि	15/02/2068

तुला 3 वर्ष	
15/02/2068	
15/02/2071	
वृश्चि	16/05/2068
धनु	16/08/2068
मक	15/11/2068
कुंभ	14/02/2069
मीन	16/05/2069
मेष	16/08/2069
वृष	15/11/2069
मिथु	14/02/2070
कर्क	17/05/2070
सिंह	16/08/2070
कन्या	15/11/2070
तुला	15/02/2071

कन्या 7 वर्ष	
15/02/2071	
14/02/2078	
तुला	16/09/2071
वृश्चि	16/04/2072
धनु	15/11/2072
मक	16/06/2073
कुंभ	15/01/2074
मीन	16/08/2074
मेष	17/03/2075
वृष	16/10/2075
मिथु	16/05/2076
कर्क	15/12/2076
सिंह	16/07/2077
कन्या	14/02/2078

सिंह 6 वर्ष	
14/02/2078	
15/02/2084	
कन्या	16/08/2078
तुला	15/02/2079
वृश्चि	16/08/2079
धनु	15/02/2080
मक	16/08/2080
कुंभ	14/02/2081
मीन	16/08/2081
मेष	14/02/2082
वृष	16/08/2082
मिथु	15/02/2083
कर्क	16/08/2083
सिंह	15/02/2084

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृष - मीन		वृष - कुंभ		वृष - मक		वृष - धनु		वृष - वृश्चि	
16/10/2025		16/06/2026		15/02/2027		16/10/2027		16/06/2028	
16/06/2026		15/02/2027		16/10/2027		16/06/2028		14/02/2029	
मेष	05/11/2025	मीन	06/07/2026	धनु	07/03/2027	वृश्चि	05/11/2027	तुला	06/07/2028
वृष	25/11/2025	मेष	27/07/2026	वृश्चि	27/03/2027	तुला	26/11/2027	कन्या	26/07/2028
मिथु	16/12/2025	वृष	16/08/2026	तुला	17/04/2027	कन्या	16/12/2027	सिंह	16/08/2028
कर्क	05/01/2026	मिथु	05/09/2026	कन्या	07/05/2027	सिंह	05/01/2028	कर्क	05/09/2028
सिंह	25/01/2026	कर्क	26/09/2026	सिंह	27/05/2027	कर्क	26/01/2028	मिथु	25/09/2028
कन्या	14/02/2026	सिंह	16/10/2026	कर्क	16/06/2027	मिथु	15/02/2028	वृष	15/10/2028
तुला	07/03/2026	कन्या	05/11/2026	मिथु	07/07/2027	वृष	06/03/2028	मेष	05/11/2028
वृश्चि	27/03/2026	तुला	26/11/2026	वृष	27/07/2027	मेष	27/03/2028	मीन	25/11/2028
धनु	16/04/2026	वृश्चि	16/12/2026	मेष	16/08/2027	मीन	16/04/2028	कुंभ	15/12/2028
मक	07/05/2026	धनु	05/01/2027	मीन	06/09/2027	कुंभ	06/05/2028	मक	05/01/2029
कुंभ	27/05/2026	मक	25/01/2027	कुंभ	26/09/2027	मक	26/05/2028	धनु	25/01/2029
मीन	16/06/2026	कुंभ	15/02/2027	मक	16/10/2027	धनु	16/06/2028	वृश्चि	14/02/2029

वृष - तुला		वृष - कन्या		वृष - सिंह		वृष - कर्क		वृष - मिथु	
14/02/2029		16/10/2029		16/06/2030		15/02/2031		16/10/2031	
16/10/2029		16/06/2030		15/02/2031		16/10/2031		16/06/2032	
वृश्चि	06/03/2029	तुला	05/11/2029	कन्या	06/07/2030	मिथु	07/03/2031	वृष	05/11/2031
धनु	27/03/2029	वृश्चि	25/11/2029	तुला	27/07/2030	वृष	27/03/2031	मेष	26/11/2031
मक	16/04/2029	धनु	16/12/2029	वृश्चि	16/08/2030	मेष	17/04/2031	मीन	16/12/2031
कुंभ	06/05/2029	मक	05/01/2030	धनु	05/09/2030	मीन	07/05/2031	कुंभ	05/01/2032
मीन	27/05/2029	कुंभ	25/01/2030	मक	26/09/2030	कुंभ	27/05/2031	मक	26/01/2032
मेष	16/06/2029	मीन	14/02/2030	कुंभ	16/10/2030	मक	16/06/2031	धनु	15/02/2032
वृष	06/07/2029	मेष	07/03/2030	मीन	05/11/2030	धनु	07/07/2031	वृश्चि	06/03/2032
मिथु	27/07/2029	वृष	27/03/2030	मेष	26/11/2030	वृश्चि	27/07/2031	तुला	27/03/2032
कर्क	16/08/2029	मिथु	16/04/2030	वृष	16/12/2030	तुला	16/08/2031	कन्या	16/04/2032
सिंह	05/09/2029	कर्क	07/05/2030	मिथु	05/01/2031	कन्या	06/09/2031	सिंह	06/05/2032
कन्या	25/09/2029	सिंह	27/05/2030	कर्क	25/01/2031	सिंह	26/09/2031	कर्क	26/05/2032
तुला	16/10/2029	कन्या	16/06/2030	सिंह	15/02/2031	कर्क	16/10/2031	मिथु	16/06/2032

वृष - वृष		मेष - वृष		मेष - मिथु		मेष - कर्क		मेष - सिंह	
16/06/2032		14/02/2033		16/12/2033		16/10/2034		16/08/2035	
14/02/2033		16/12/2033		16/10/2034		16/08/2035		16/06/2036	
मेष	06/07/2032	मेष	12/03/2033	वृष	10/01/2034	मिथु	10/11/2034	कन्या	11/09/2035
मीन	26/07/2032	मीन	06/04/2033	मेष	04/02/2034	वृष	06/12/2034	तुला	06/10/2035
कुंभ	16/08/2032	कुंभ	01/05/2033	मीन	02/03/2034	मेष	31/12/2034	वृश्चि	31/10/2035
मक	05/09/2032	मक	27/05/2033	कुंभ	27/03/2034	मीन	25/01/2035	धनु	26/11/2035
धनु	25/09/2032	धनु	21/06/2033	मक	21/04/2034	कुंभ	20/02/2035	मक	21/12/2035
वृश्चि	15/10/2032	वृश्चि	16/07/2033	धनु	17/05/2034	मक	17/03/2035	कुंभ	15/01/2036
तुला	05/11/2032	तुला	11/08/2033	वृश्चि	11/06/2034	धनु	11/04/2035	मीन	10/02/2036
कन्या	25/11/2032	कन्या	05/09/2033	तुला	06/07/2034	वृश्चि	07/05/2035	मेष	06/03/2036
सिंह	15/12/2032	सिंह	30/09/2033	कन्या	01/08/2034	तुला	01/06/2035	वृष	01/04/2036
कर्क	05/01/2033	कर्क	26/10/2033	सिंह	26/08/2034	कन्या	27/06/2035	मिथु	26/04/2036
मिथु	25/01/2033	मिथु	20/11/2033	कर्क	21/09/2034	सिंह	22/07/2035	कर्क	21/05/2036
वृष	14/02/2033	वृष	16/12/2033	मिथु	16/10/2034	कर्क	16/08/2035	सिंह	16/06/2036

चर दशा - प्रत्यन्तर

मेष - कन्या		मेष - तुला		मेष - वृश्चि		मेष - धनु		मेष - मक	
16/06/2036		16/04/2037		14/02/2038		16/12/2038		16/10/2039	
16/04/2037		14/02/2038		16/12/2038		16/10/2039		16/08/2040	
तुला	11/07/2036	वृश्चि	11/05/2037	तुला	12/03/2038	वृश्चि	10/01/2039	धनु	11/11/2039
वृश्चि	05/08/2036	धनु	06/06/2037	कन्या	06/04/2038	तुला	05/02/2039	वृश्चि	06/12/2039
धनु	31/08/2036	मक	01/07/2037	सिंह	02/05/2038	कन्या	02/03/2039	तुला	31/12/2039
मक	25/09/2036	कुंभ	27/07/2037	कर्क	27/05/2038	सिंह	27/03/2039	कन्या	26/01/2040
कुंभ	21/10/2036	मीन	21/08/2037	मिथु	21/06/2038	कर्क	22/04/2039	सिंह	20/02/2040
मीन	15/11/2036	मेष	15/09/2037	वृष	17/07/2038	मिथु	17/05/2039	कर्क	16/03/2040
मेष	10/12/2036	वृष	11/10/2037	मेष	11/08/2038	वृष	11/06/2039	मिथु	11/04/2040
वृष	05/01/2037	मिथु	05/11/2037	मीन	05/09/2038	मेष	07/07/2039	वृष	06/05/2040
मिथु	30/01/2037	कर्क	30/11/2037	कुंभ	01/10/2038	मीन	01/08/2039	मेष	31/05/2040
कर्क	24/02/2037	सिंह	26/12/2037	मक	26/10/2038	कुंभ	26/08/2039	मीन	26/06/2040
सिंह	22/03/2037	कन्या	20/01/2038	धनु	20/11/2038	मक	21/09/2039	कुंभ	21/07/2040
कन्या	16/04/2037	तुला	14/02/2038	वृश्चि	16/12/2038	धनु	16/10/2039	मक	16/08/2040

मेष - कुंभ		मेष - मीन		मेष - मेष		मीन - मेष		मीन - वृष	
16/08/2040		16/06/2041		16/04/2042		15/02/2043		16/12/2043	
16/06/2041		16/04/2042		15/02/2043		16/12/2043		15/10/2044	
मीन	10/09/2040	मेष	11/07/2041	वृष	12/05/2042	वृष	12/03/2043	मेष	10/01/2044
मेष	05/10/2040	वृष	06/08/2041	मिथु	06/06/2042	मिथु	06/04/2043	मीन	05/02/2044
वृष	31/10/2040	मिथु	31/08/2041	कर्क	01/07/2042	कर्क	02/05/2043	कुंभ	01/03/2044
मिथु	25/11/2040	कर्क	25/09/2041	सिंह	27/07/2042	सिंह	27/05/2043	मक	27/03/2044
कर्क	20/12/2040	सिंह	21/10/2041	कन्या	21/08/2042	कन्या	22/06/2043	धनु	21/04/2044
सिंह	15/01/2041	कन्या	15/11/2041	तुला	15/09/2042	तुला	17/07/2043	वृश्चि	16/05/2044
कन्या	09/02/2041	तुला	10/12/2041	वृश्चि	11/10/2042	वृश्चि	11/08/2043	तुला	11/06/2044
तुला	06/03/2041	वृश्चि	05/01/2042	धनु	05/11/2042	धनु	06/09/2043	कन्या	06/07/2044
वृश्चि	01/04/2041	धनु	30/01/2042	मक	01/12/2042	मक	01/10/2043	सिंह	31/07/2044
धनु	26/04/2041	मक	25/02/2042	कुंभ	26/12/2042	कुंभ	26/10/2043	कर्क	26/08/2044
मक	22/05/2041	कुंभ	22/03/2042	मीन	20/01/2043	मीन	21/11/2043	मिथु	20/09/2044
कुंभ	16/06/2041	मीन	16/04/2042	मेष	15/02/2043	मेष	16/12/2043	वृष	15/10/2044

मीन - मिथु		मीन - कर्क		मीन - सिंह		मीन - कन्या		मीन - तुला	
15/10/2044		16/08/2045		16/06/2046		17/04/2047		15/02/2048	
16/08/2045		16/06/2046		17/04/2047		15/02/2048		15/12/2048	
वृष	10/11/2044	मिथु	10/09/2045	कन्या	12/07/2046	तुला	12/05/2047	वृश्चि	11/03/2048
मेष	05/12/2044	वृष	06/10/2045	तुला	06/08/2046	वृश्चि	06/06/2047	धनु	06/04/2048
मीन	31/12/2044	मेष	31/10/2045	वृश्चि	31/08/2046	धनु	02/07/2047	मक	01/05/2048
कुंभ	25/01/2045	मीन	25/11/2045	धनु	26/09/2046	मक	27/07/2047	कुंभ	26/05/2048
मक	19/02/2045	कुंभ	21/12/2045	मक	21/10/2046	कुंभ	21/08/2047	मीन	21/06/2048
धनु	17/03/2045	मक	15/01/2046	कुंभ	15/11/2046	मीन	16/09/2047	मेष	16/07/2048
वृश्चि	11/04/2045	धनु	09/02/2046	मीन	11/12/2046	मेष	11/10/2047	वृष	10/08/2048
तुला	06/05/2045	वृश्चि	07/03/2046	मेष	05/01/2047	वृष	05/11/2047	मिथु	05/09/2048
कन्या	01/06/2045	तुला	01/04/2046	वृष	30/01/2047	मिथु	01/12/2047	कर्क	30/09/2048
सिंह	26/06/2045	कन्या	26/04/2046	मिथु	25/02/2047	कर्क	26/12/2047	सिंह	26/10/2048
कर्क	21/07/2045	सिंह	22/05/2046	कर्क	22/03/2047	सिंह	21/01/2048	कन्या	20/11/2048
मिथु	16/08/2045	कर्क	16/06/2046	सिंह	17/04/2047	कन्या	15/02/2048	तुला	15/12/2048

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	4
मित्र अंक	3, 5, 9, 4
शत्रु अंक	2, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	97%	भाग्योदय, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	77%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	66%	दुर्घटना से बचाव, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	66%	सुख, दम्पति
हीरा	शुक्र	59%	दम्पति, धनार्जन, सुख
लहसुनिया	केतु	34%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना
माणिक्य	सूर्य	22%	दुर्घटना, धन हानि
नीलम	शनि	16%	ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
पन्ना	बुध	0%	दुर्घटना, व्यय, पराक्रम हानि

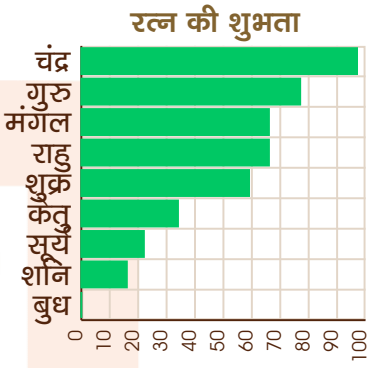

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	15/01/2021	34%	84%	66%	0%	77%	66%	16%	66%	34%
केतु	15/01/2028	0%	84%	72%	0%	77%	66%	0%	53%	55%
शुक्र	15/01/2048	0%	84%	66%	0%	77%	72%	28%	72%	47%
सूर्य	15/01/2054	47%	100%	72%	0%	83%	44%	0%	53%	9%
चंद्र	15/01/2064	34%	100%	66%	0%	77%	59%	16%	53%	9%
मंगल	15/01/2071	34%	100%	78%	0%	83%	59%	16%	53%	47%
राहु	15/01/2089	0%	84%	53%	0%	77%	66%	28%	78%	9%
गुरु	16/01/2105	34%	100%	72%	0%	89%	44%	16%	66%	34%
शनि	16/01/2124	0%	84%	53%	0%	77%	66%	41%	72%	9%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मोती व पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पुखराज आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मूंगा, गोमेद एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

माणिक्य, नीलम व पन्ना रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र नवम भाव में स्थित है। चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। मोती रत्न शुभता से आप विद्वान और साहसी बनेंगे। भाग्य वृद्धि में भी मोती रत्न अनुकूल फल प्रदान करेगा। रत्न शुभता से आप अपने जीवनकाल में पर्याप्त संपत्ति अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपको यात्राओं के माध्यम से भी लाभ प्राप्त हो सकते है। मोती रत्न की शुभता से आपकी धार्मिक विचारधारा प्रबल होगी। धर्म क्रियाओं में पहले से अधिक श्रद्धा और विश्वास बनेगा। मोती रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको विदेश यात्राओं से लाभ देगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में चंद्र लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश चंद्र का रत्न मोती धारण कर आप अपने जीवन को दीर्घकालिन बना सकते है। मोती रत्न आपके स्वास्थ्य को अनुकूल, तेज एवं स्फूर्ति दे सकता है। मोती रत्न की शुभता से आप को प्रयासों में सफलता, यश-सम्मान एवं भावुकता में कमी कर सकता है। रत्न शुभता से आप व्यवहारिक बनेंगे तथा आपका मनोबल उच्च रहेगा। मोती रत्न आपको यशस्वी बनाकर व्यवसाय में सफलता दे सकता है। इसके साथ ही रत्न की शुभता आपके दांपत्य जीवन को सुखी रख सकती है। आपके स्वभाव की अस्थिरता को नियंत्रित करने में भी मोती रत्न अहम भूमिका निभा सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। रत्न शुभता से आप कुशाग्र और विचारवान बनेंगे। आप सत्यवक्ता बनेंगे तथा आपको सज्जन एवं श्रेष्ठ व्यक्तियों की संगति प्राप्त होगी। पुखराज रत्न श्रीमान और कुलीन लोगों से आपकी मित्रता बनाएगा। रत्न की शक्तियां आपकी आशाओं और महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में सहयोग करेंगी। आपको अर्थलाभ और धन की प्राप्ति देगी। पुखराज रत्न से

आपकी आमदनी के अनेक साधन होंगे। यह रत्न आपको पराक्रमी, पिता का सहायक और शत्रुओं को पराजित करने वाला बनाएगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में गुरु षष्ठ भाव एवं नवम भाव के स्वामी है। गुरु लग्नेश चंद्र के मित्र एवं त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए शुभ ग्रह होते है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न धारण कर आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली बन सकता है। आप विद्या, बुद्धि व संतान से युक्त हो सकते है। आपके कार्यो में जो बाधाएं आती है वो रत्न शुभता से दूर हो सकती है। छठे भाव का रत्न होने के कारण यह रत्न रोग, शत्रु तथा ऋणों पर नियन्त्रण बनाये रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। शत्रुओं पर विजय, भाग्य व धर्म को प्रबलता मिल सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। मंगल की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपके जीवन क्षेत्र की बाधाओं को दूर करेगा। रत्न शुभता से आपके अनेक कार्य आपके शुभचिन्तकों के द्वारा पूर्ण होंगे। आप नियम-कानून का सख्ती से पालन करेंगे। मूंगा रत्न आपको दुर्घटना, अप्रत्याशित घटनाओं से बचाएगा। यह रत्न आपके धन संचय के लिए भी अनुकूल है। रत्न शुभता से आपको आमदनी भी बहुत अच्छी होगी। मूंगा रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। मूंगा रत्न की शुभता से आपकी वाणी में मधुरता आएगी।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में मंगल पंचम भाव एवं दशम भाव के स्वामी तथा मंगल लग्नेश चंद्र के मित्र भी है। यह मंगल योगकारक ग्रह होने के कारण आपके लिए सबसे अधिक शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए अतिउत्तम रत्न है। संतान सुख और शैक्षिक जीवन में अनुकूल सफलता पाने के लिए आपको यह रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको संतान प्राप्ति के योग, पिता एवं आजीविका क्षेत्र से लाभ दिला सकता है। रत्न की शुभता से आपको भूमि, भवन, दैनिक व्यवसाय, परिश्रम से सम्मान प्राप्ति हो सकती है। मंगल रत्न मूंगा आपके ग्रहस्थ जीवन को भी सुखमय बनाए रख सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। गोमेद रत्न धारण करने से आपके साहस भाव में वृद्धि होगी। सरकारी पक्ष से सहयोग प्राप्त होगा। प्रशासनिक व्यक्तियों के द्वार आपका हित साधन हो सकता है। यह रत्न आपको माता से सुख देगा। भ्रम की स्थिति दूर होगी। आपके पास भौतिक सुख-सुविधाओं का भंड़ार हो सकता है। विदेश प्रवास अनुकूल होगा। नौकरी के क्षेत्र में राहु ग्रह की शुभता प्राप्त होगी। गोमेद रत्न आजीविका क्षेत्र में शुभता बनाये रखेगा।

राहु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण कर आप श्रेष्ठ व्यक्तियों से स्नेह करने वाले भाग्यवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप चंचल, विलासी और संगीत को पसंद करने वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप एक श्रेष्ठ कलाकार हो सकते हैं। गायन और अभिनय में आपकी रुचि जागृत करने में भी हीरा रत्न लाभदायक साबित हो सकता है। हीरा रत्न वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में उपयोगी रहेगा। रत्न शुभता से आपको विदेश यात्राओं अथवा दूर की यात्राओं के अवसर प्राप्त हो सकते है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं आयेश है। शुक्र ग्रह की शुभता प्राप्त करने के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। हीरे की शुभता आपको घर, जमीन-जायदाद, वाहन, प्रतिष्ठा और माता के सुख प्राप्त हो सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। आय, उन्नति, सफलता के अतिरिक्त यह रत्न आपको बडी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी, दोस्त एवं उत्तम शुभ चिन्तक दे सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण कर आप की बौद्धिक योग्यता में कमी आ सकती है। रत्न प्रभाव से आपकी दार्शनिक प्रवृति का ह्रास हो सकता है। दूसरों के लिए आपमें ईर्ष्या का भाव आ सकता है। अयोग्य पात्र को भी आप आश्रय दे सकते है। जीवन में आपको उत्तम संपदा की कमी हो सकती है। आपके कारण स्वजनों को भी कष्ट हो सकता है। लहसुनिया रत्न आपके दुर्भाग्य में वृद्धि कर सकता है। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में दुर्घटनाएं दे सकता है। इस रत्न के कारण आपके पिता से अच्छे संबंधों में कमी हो सकती है। लहसुनिया रत्न आपके विरोधियों को बढ़ा सकता है। यात्राओं की अधिकता से कष्ट दे सकता है। आप मानसिक रूप से असंतुष्ट रह सकते हैं।

केतु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल आठवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरूसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य पहनने पर आपको समय समय पर सरकारी क्षेत्रों में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। पिता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपको पित्त संबंधी रोग हो सकते है। ह्रदय रोग भी यह रत्न आपक दे सकता है। यह रत्न आपकी धैर्य शक्ति में कमी कर क्रोध भाव में वृद्धि कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप पर कार्य भार बढ़ सकता है। आपको आंखों से संबंधित रोग परेशान कर सकते है। पिता से संबंध मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव के स्वामी है। द्वितीय भाव के स्वामी सूर्य का माणिक्य रत्न धारण आपकी तेजस्विता में कमी का कारण बन सकता है। यह रत्न आर्थिक और कौटुम्बिक सम्पन्नता में भी कमी करेगा। रत्न प्रभाव से आपका दांपत्य जीवन असंतोषप्रद हो सकता है। समाज में प्रतिष्ठा प्रभावित हो सकती है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आपको नेत्र रोग हो सकते है। आपको सगे संबंधियों से विरोध का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपको व्यापार की अपेक्षा नौकरी की ओर आकर्षित कर सकता है। सरकारी क्षेत्रों में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपमें अतिस्वाभिमान और अंहकार भाव दे सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने से आपमें धैर्य की कमी और लोभ भावना जन्म ले सकती है है। रत्न प्रभाव से नौकरी, विवाह एवं संतान सुख में कमी हो सकती है। नीलम रत्न आपको शत्रुओं के द्वारा हानि करा सकता है। शारीरिक रुप से कम सुख मिल सकते है। आपकी संगति खराब लोगों के साथ हो सकती है। मानसिक चिंताएं या कष्ट आपको परेशान कर सकते है। यह नीलम रत्न आपके वैवाहिक जीवन में प्रतिकूल फल दे सकता है। जन्म स्थान से दूर रहने के योग अधिक बना सकता है। इस रत्न से माता को बीच-बीच में कष्ट रह सकता है। रत्न प्रभाव से आपको अपने पिता की संपत्ति से वंचित होना पड़ सकता है.

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शनि सप्तमेश एवं अष्टमेश है। शनि का रत्न नीलम धारण करना आपके लिए सुख फलदायक नहीं रहेगा। नीलम रत्न आपके भाग्योदय में रुकावट ला सकता है। संतान, जीवन साथी व माता के कष्ट रत्न प्रभाव से बढ़ सकते है। यह रत्न आपको पेशाब से संबंधित रोग दे सकता है। शत्रु आपको शारीरिक कष्ट दे सकते है। रत्न प्रभाव से आपका मन चंचल रहेगा। मित्रों से मित्रताएं बनती बिगड़ती रहेंगी। यह रत्न आपकी आयु में कमी का कारण बन सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य कमजोर होगा। गुप्त रोग भी रत्न प्रभाव से प्रभावी हो सकते है। यह रत्न आपकी शारीरिक अस्वस्थता को बढ़ाएगा। कलह और अपयश की स्थिति आपके लिए यह रत्न बना सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको त्वचा संबंधी रोग दीर्घकाल के लिए परेशान कर सकते है। आपके कष्ट दूसरों के कारण बढ़ सकते है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर कठिनाई से विजय प्राप्त कर सकेंगे। पन्ना रत्न प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति कमजोर हो सकती है। शैक्षिक पक्ष से इस रत्न को धारण करने पर आपकी रुचि गुप्त विद्या और आध्यात्म के प्रति हो सकती हैं। यह रत्न आपको विलासिता के अवसर दे सकता है। आपको मस्तिषक और नसों से संबंधित रोग या कष्ट हो सकते हैं।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में बुध तीसरे भाव एवं द्वादश भाव के स्वामी है। बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको बंधु बांधवों का सुख कम प्राप्त हो सकता है। पराक्रम भाव के पक्ष से भी यह रत्न आपके लिए अनुकूल फलदायक नहीं रहेगा। भाई-बहनों से संबंधों की मधुरता में कमी हो सकती है। बौद्धिक बल से धनार्जन करने में पन्ना रत्न आपको सहयोग नहीं करेगा। व्यावसायिक यात्राओं में असफलता का सामना आपको करना पड़ सकता है। पन्ना रत्न आपके भाग्योदय में बाधक का कार्य कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यय व्यर्थ हो सकते है। व्ययों को नियंत्रित रखने में आपको कष्ट हो सकते है। विद्या और बौद्धिक विषयों में आपके साथ परेशानियां बनी रहेंगी।

दशानुसार रत्न विचार

केतु
(15/01/2021 - 15/01/2028)

केतु की दशा में आपका मोती व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, हीरा, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(15/01/2028 - 15/01/2048)

शुक्र की दशा में आपका मोती व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, गोमेद व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व नीलम रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(15/01/2048 - 15/01/2054)

सूर्य की दशा में आपका मोती व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व हीरा रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(15/01/2054 - 15/01/2064)

चन्द्र की दशा में आपका मोती व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और नीलम, लहसुनिया व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(15/01/2064 - 15/01/2071)

मंगल की दशा में आपका मोती, पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और नीलम व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(15/01/2071 - 15/01/2089)

राहु की दशा में आपका मोती, गोमेद व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, माणिक्य व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(15/01/2089 - 16/01/2105)

गुरु की दशा में आपका मोती व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा, माणिक्य व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और नीलम व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(16/01/2105 - 16/01/2124)

शनि की दशा में आपका मोती व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, हीरा व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, माणिक्य व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

बुध - 15/01/2021

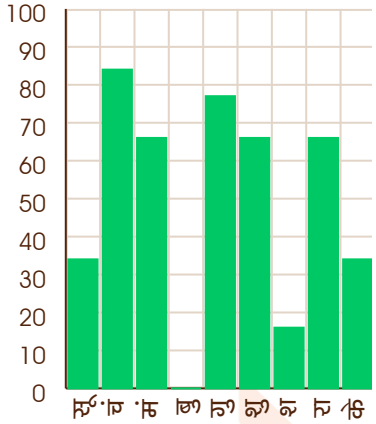

केतु - 15/01/2028

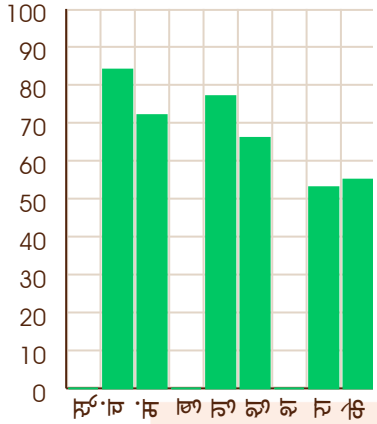

शुक्र - 15/01/2048

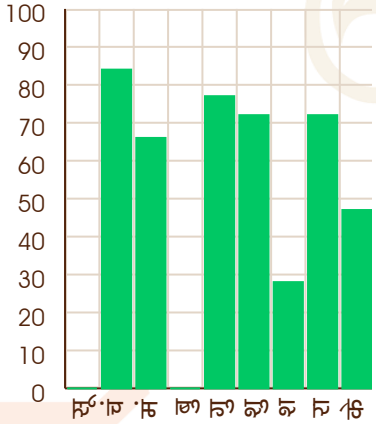

सूर्य - 15/01/2054

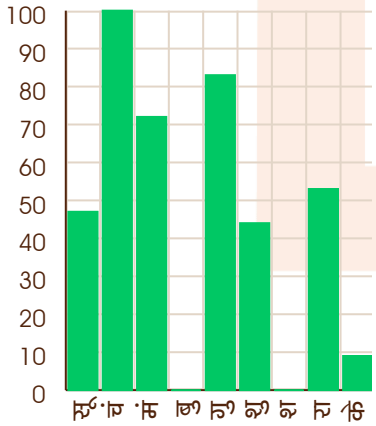

चन्द्र - 15/01/2064

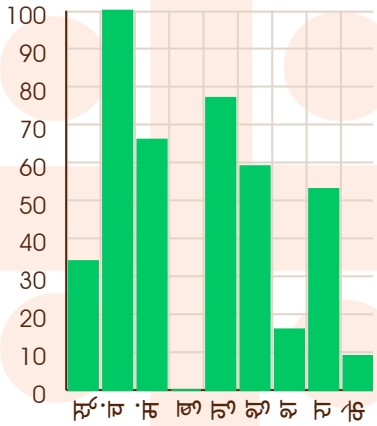

मंगल - 15/01/2071

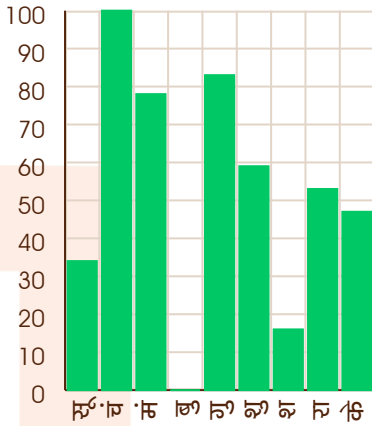

राहु - 15/01/2089

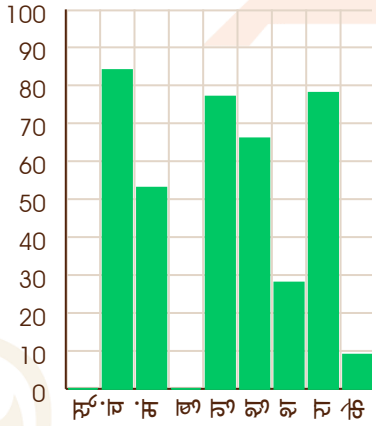

गुरु - 16/01/2105

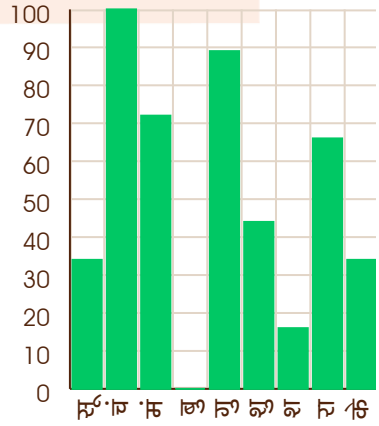

शनि - 16/01/2124

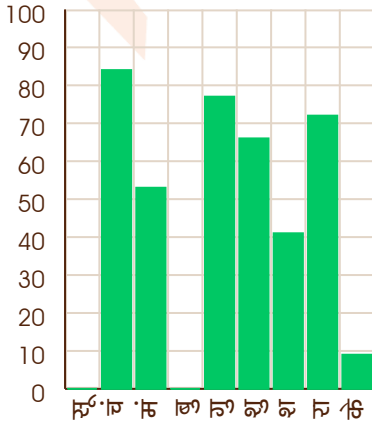

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - मोती

आपका जन्म कर्क राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी चंद्रमा होता है। चंद्रमा सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कर्क राशि के लग्न वाले जातकों को कर्क राशि के स्वामी ग्रह चंद्रमा को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। चंद्र ग्रह के लिये मोती रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी चंद्र मंत्री पद व जनता का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को माता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। चंद्रमा ग्रह मन एवं माता का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको मानसिक रोग या ठंड से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा डिप्रेशन की स्थिति में डिप्रेशन से मुक्ति दिलाता है।

मोती रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है तथा चंद्र ग्रह बुध को अपना मित्र ग्रह मानता है। मोती रत्न चंद्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात सोमवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल चंद्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। सोमवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय चंद्र की होरा का होता है। मोती को यदि सोमवार के साथ-साथ चंद्र के नक्षत्र अर्थात् रोहिणी, हस्त और श्रवण में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

मोती को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, चंद्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चंद्र का मंत्र - ऊँ सों सोमाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि चंद्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चीनी, दही, सवा मीटर सफेद कपड़े का दान करें तो मोती रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन चंद्र का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या शिवलिंग पर जल चढ़ायें और शिव आराधना करें तो यह मोती रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक सोमवार को शिव चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

कर्क लग्न वाले जातक यदि मोती रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कर्क लग्न की हैं। कर्क लग्न आपको संवेदनशील बना रहा है। चर लग्न आपको लगातार कार्य करने का स्वभाव दे रहा हैं। आपको जलीय स्थानों के नजदीकरहना अधिक प्रिय हो सकता हैं। लगातार कार्य करना आपका स्वभाव , बिना थके निरन्तर कार्य करना आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालता है। आप भावुक, धैर्यवान है,और कठिन से कठिन समय में भी घबराते नहीं हैं। कुछ विषयों पर आप जिद्धी भी हो जाते हैं। अपने स्वभाव के नकारात्मक पक्ष को छोड़ने का प्रयास आपको करना चाहिए। साथ ही आपको अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करना चाहिए। कार्य के घण्टो में से थोडा समय आराम के लिए भी निकालें। आप अत्यधिक भावनात्मक हैं इसलिए आपके निर्णय कई बार गलत भी हो जाते हैं।

फिर भी आप जब किसी काम को करने की ठान लेते है, तो उसे करके ही बैठते हैं।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। तथा इन भावों के स्वामियों को त्रिक भावेश के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भाव, भावेश व इन भावों में बैठे ग्रह स्वयं में किसीन किसी प्रकार की अशुभता लिये होते हैं। यहीं कारण है की ये सभी आपके जीवन में कष्ट और बाधाओं का कारण बन सकते है। जिसमें छठा भाव रोग, ऋण और शत्रुओं सेकष्ट देता है, इसका स्वामी जिस भाव में जाता है, उसके शुभ फलों में कुछ न कुछ कमी अवश्य करता हैं। जिसके फलस्वरूप आपको षष्ट भाव के स्वामी या इस भाव में स्थितग्रहों की महादशा-अन्तर्दशाओं में भाव सम्बंधित रोग, ऋण या शत्रुओं के द्वारा शारीरिक या मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं।

6, 8 व 12 भावों में अष्टम भाव विशेष अशुभता लिए होते हैं। इस भाव का स्वामी अष्टमेश, जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता हैं। अष्टम भाव अशुभता, बाधा और पाप का भाव हैं। और इस भाव या इस भाव के स्वामी से किसी भी भावेश का सम्बन्ध होना, भावेश की शुभता में कमी कर अशुभता को बढाता है। तीसरा और अंतिम त्रिक भाव, द्वादश भाव है जिसे व्यय भाव भी कहा जाता हैं। द्वादश भाव से हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष का विचार किया जाता हैं। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव के विषयों में अशुभता लाते हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न में षष्ठ भाव व नवम भाव के स्वामी गुरु हैं। षष्टेश गुरु आपका मामा-मौसी से बैर करा सकता हैं। संतान सुख में कमी कर सकता है तथा संतान रोगों के प्रभाव में शीघ्र आ सकती हैं, बुद्धि और विवेक का समय पर उपयोग नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त ऋण आदि विषयों में शत्रु बाधक हो सकते हैं।

सप्तम व अष्ठम भाव के शनि की यह स्थिति जीवन साथी से प्राप्त होने वाले सुखों में कमी, सरकारी क्षेत्रों व आजीविका क्षेत्रों से अल्प लाभ, धन संचय कठिन, कुटुंबका न्यून सुख, विद्या बुद्धि से अल्प लाभ व संतान सुख में बाधक बनता हैं।

द्वादश व तृतीय भाव के स्वामी बुध हैं। बुध आपके लग्न के लिए अशुभ ग्रहों की श्रेणी में आते हैं। बुध की यह स्थिति आपको अधिक व्ययों से परेशान, पारिवारिक सुख में न्यूनता, धन संचय दुष्कर, शत्रु संघर्ष से हानि के योग बना सकता हैं।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा हैं। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती हैं। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते है।

यह आपके शारीरिक सौन्दर्य में न्यूनता, आय क्षेत्र में बाधाएं, अल्प आय, आर्थिक चिंता, कुटुंब से अल्प सुख, पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। दीर्घकालीन रोग आपकी चिंताएं बढ़ा सकते हैं। मंगल का अष्टम भाव में स्थित होने से आप मांगलिक योग से पीड़ित है। दाम्पत्य जीवन कष्टकारी हो सकता है। संतान को भी कष्ट की संभावनाएं, प्रवास में धन हानि, मुख, नेत्र व कान के रोग, ऋण ग्रस्तता बढ़ोतरी हो रही है।

अष्टम भाव आयु, पुरातत्व और अन्वेषण का भाव हैं। आपकी यात्राओं में विध्न बाधाएं दे सकता हैं। अष्टम भाव से बुध धन भाव को दृष्ट करता हैं। इससे धन संग्रह में कठिनाइयाँ आती हैं। बुध की यह स्थिति आपके छोटे भाई बहन को पिताधिक्य, तेज बुखार और दुर्बल देह का कारण बन सकती हैं। बुध की स्थिति अष्टम भाव में आपको बुद्धिबल से धन संग्रह की योग्यता दे रही है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/02/2013-02/11/2014	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	कम खर्च

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुण्डली में जन्म के समय मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु नियमानुसार आपका मांगलिक दोष भंग हो रहा है। अतः यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं विवाह के उपरान्त पति का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। यदा कदा वे सामान्य रूप से अस्वस्थ रह सकते हैं लेकिन इससे कोई विशेष हानि नहीं होगी। साथ ही इसके शुभ प्रभाव से आप विद्याध्ययन में सफल होंगी तथा उच्च शिक्षा भी प्राप्त कर सकेंगी। भाई बहनों से भी आप युक्त रहेंगी जीवन में उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगी।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए अनुकूल फलदायक होगा तथापि इसके प्रभाव से आपकी शादी में अल्प मात्रा में विलम्ब हो सकता है। विवाह शान्ति पूर्ण ढंग से सम्पन्न होगा एवं इसमें आपको किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं या व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाहोपरान्त दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। यदा कदा पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा जिससे अल्प मात्रा में दाम्पत्य सुख में कष्टानुभूति प्राप्त कर सकती हैं। परन्तु सामान्यतया आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक ही व्यतीत होगा।

आपकी कुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होते रहेंगे तथा मांगल्य स्थान होने से पति का स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा एवं दाम्पत्य सुख में किसी भी प्रकार की बाधा नहीं होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप की आय उत्तम होगी एवं धनैश्वर्य का अभाव नहीं होगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप एक शिक्षित महिला होंगी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भी सफल

हो सकती हैं। आपका पारिवारिक जीवन भी शान्ति एवं वैभव से परिपूर्ण रहेगा। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप भाई बहनों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में उनका वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त कर सकेंगी। इस प्रकार जीवन में आप प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में सफल हो सकेंगी तथा हमेशा प्रसन्न चित्त रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को और अधिक सुख एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमंगली या ऐसे मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष नियमानुसार समाप्त हो रहा हो। इस प्रकार से यदि आप अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगी तो जीवन में पूर्ण सौभाग्य धनैश्वर्य एवं मान सम्मान प्राप्त करके समाज में यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगी।

इसके अतिरिक्त जन्मपत्री मिलान के समय अष्टम भाव में ही स्थित पुरुष की कुण्डली में यदि मंगल स्थित हो तो ऐसे में विवाह की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल स्थित होने से आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य विलम्ब या व्यवधानों से युक्त होंगे तथा पति के स्वास्थ्य के लिए भी विशेष अशुभ सिद्ध होगा। अन्य भावों में स्थित मंगल से शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी तथा आपका सम्पूर्ण दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सावधानी एवं सर्तकता पूर्वक कुण्डली मिलान करें जिससे जीवन में अनावश्यक कठिनाईयां एवं समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखपाल नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्ण रूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप घर-द्वार जमीन-जायदाद, चल-अचल सम्बन्धी वस्तुओं पर थोड़ा बहुत कठिनाईयाँ आती हैं और उससे जातक को बेवजह चिन्ता कभी-कभी घेर लेती है तथा विद्या प्राप्ति में आंशिक रूप से तकलीफ उठानी पड़ती है।

माता से कोई न कोई किसी समय आंशिक रूप में तकलीफ मिलती है। सवारी एवं नौकरों से भी कोई न कोई परेशानियाँ उपस्थित होती रहती हैं। जिसमें थोड़ा बहुत नुकसान उठाने पड़ते हैं। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी तनावग्रस्त हो जाता है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक समय-समय मानसिक रूप से परेशान रहता है। कार्य के क्षेत्र में अनेक विघ्न आते हैं। पर वे सब विघ्न कालान्तर में स्वतः नष्ट हो जाते हैं। बहुत सारे कामों को एक साथ करने के कारण कोई भी काम प्रायः पूरा नहीं हो पाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का आर्थिक संतुलन थोड़ा बहुत बिगड़ जाता है, जिस कारण आर्थिक संकट उपस्थित हो जाता है। लेकिन इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी जातक के व्यवसाय, नौकरी तथा राजनीति के क्षेत्र में बहुत सफलताएँ प्राप्त होती हैं एवं सामाजिक पद प्रतिष्ठा भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 14 है। एक एवं चार के योग से आपका मूलांक पाँच होता है। मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह है। एक अंक का सूर्य तथा चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु तथा पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह है। इन सभी ग्रहों का न्यूनाधिक मात्रा में आपके ऊपर प्रभाव रहेगा। मूलांक स्वामी बुध के प्रभाववश आप नौकरी की अपेक्षा व्यापार मार्ग का चुनाव करना अधिक पसन्द करेंगी। रोजगार आप ऐसा चुनेंगी जहाँ लेखा, लेन-देन, वाणिज्य, यांत्रिकी जैसे कार्य संपादित हों। फैक्ट्री, कम्पनी, उच्च व्यापार जगत आपको रास आयेगा।

बुध वाणी का दाता है। सूर्य प्रसिद्धि का, हर्षल परिवर्तन का। अतः आपके अंन्दर वाक् पटुता, बुद्धि-विवेक अच्छा रहेगा एवं आपकी सामाजिक स्थिति भी अच्छी रहेगी। मूलांक के प्रभाव से आपकी आर्थिक, सामाजिक स्थितियाँ परिवर्तनशील रहेंगी एवं परिवर्तन करते रहना आपको अच्छा लगेगा।

परिवर्तनशील गुण होने से आपके विचारों में समयानुसार, अवस्थानुसार बदलाव आता रहेगा। जो कि आपकी अन्तिम अवस्था तक चलेगा। इस क्रिया का अन्त में आपको लाभ अच्छा मिलेगा और आपका यश, नाम इत्यादि दीर्घकाल तक याद किया जाता रहेगा। आप अपनी कमियों का निरन्तर निरीक्षण करती रहेंगी तो निश्चित ही आप उक्त ग्रहों के प्रभाववश एक सफल व्यक्तित्व की धनी हो जायेंगी।

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की हिमायती होंगी एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़ी दूर तथा आधुनिक होंगी।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगी। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

आपका मूलांक 5 है तथा आपका भाग्यांक 4 है। मूलांक 5 का स्वामी बुध है तथा भाग्यांक 4 का स्वामी हर्षल है। मूलांक 5 और भाग्यांक 4 के बीच शत्रु संबंध है। इसके प्रभाववश मूलांक-भाग्यांक में विरोधाभास होने से कभी आपको इनका अच्छा फल प्राप्त होगा, तो कभी खराब फल मिलेगा। आपको मूलांक का यदाकदा अच्छा फल प्राप्त होगा, तो कभी भाग्यांक का, तो कभी-कभी दोनो का ही खराब फल मिलेगा। साधारणः इनके प्रभाववश आप शीघ्रातिशीघ्र गति से अपने रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करना पसंद करेंगी, जिसके

फलस्वरूप कई बार आपको अच्छी सफलताएं प्राप्त होंगी, तो एकाध बार असफलता का सामना करना पड़ेगा। आपकी आर्थिक स्थिति अधिक मजबूत नही रहेगी एवं धन संग्रह के लिए आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। भौतिक सुख-साधन आपको उचित मात्रा में प्राप्त होगें। आपका संपत्ति योग मध्यम श्रेणी का रहेगा एवं अपनी मेहनत के द्वारा जीवन के मध्य भाग से आप संपत्ति अर्जित करना प्रारंभ करेंगी तथा अंतिम अवस्था तक अच्छी संपत्ति एकत्रित करने में सफल होंगी।

आपके भाग्य का उदय 22 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 31 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 40 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

मूलांक 5 की 3 एवं 9 से मिलता है तथा भाग्यांक 4 की 1 एवं 8 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 5, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनमें आपके जीवन की कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से शत्रु संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के शुभ फलों में थोड़ी-बहुत न्यूनता आएगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्ही अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष, या दिन घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, मई, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 5 एवं भाग्यांक 4 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 3, 4 ,5, 8, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 5, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
5 . 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68

8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

बुध दिनांक 22 मई से 21 जून एवं 24 अगस्त से 23 सितंबर तक, पाश्चात्य मत से, सूर्य मिथुन एवं कन्या राशि में रहता है तथा भारतीय मतानुसार 15 जून से 15 जुलाई तक एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर तक सूर्य मिथुन तथा कन्या राशि में रहता है। मिथुन बुध की स्वराशि तथा कन्या उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक पांच के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार के दिन आप अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार व्यापार संबंधी कार्य प्रारंभ करें तो यह आपके लिए अच्छा रहेगा। इन दिवसो में अनुकूल तारीखें भी हों तो आपके लिए श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होगा।

शुभ तारीखें

अंग्रेजी के किसी भी माह की 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखें आपके लिए कोई कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगी। इन तारीखों में आपके लिए अपना कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उच्च अधिकारी या किसी विशिष्ट व्यक्ति से मिलना, पत्र लेखन इत्यादि विशेष लाभप्रद रहेगा।

अशुभ तारीखें

अंग्रेजी माह की 2, 4, 11, 13, 20, 22, 29 एवं 31 तारीखों में किसी भी प्रकार का व्यापार संबंधी कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, अथवा पत्र व्यवहार संबंधी कार्य करना आपके लिए प्रतिकूल है। अतः आप इन तिथियों में कोई भी शुभ कार्य संपन्न न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखों अथवा 15 जून से 15 जुलाई एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर के मध्य हुआ है, ऐसे व्यक्तियों से आपकी मित्रता अच्छी रहेगी तथा ये लोग रोजगार-व्यवसाय के क्षेत्र में भी आपके सफल मित्र साबित होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

कोई भी महिला जिसका मूलांक 3, 5, 9 होता है तथा जिसका जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 दिनांको में हुआ हो वे आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगी तथा इन महिलाओं से आप स्नेहपूर्ण संबंध रख सकते हैं।

अनुकूल रंग

मूलांक के अनुसार आपके लिए हल्का खाकी, सफेद चमकीला उज्जवल रंग उत्तम रहेंगे। अतः ये आपके स्वास्थ्य आदि के लिए ठीक रहेंगे। हो सके तो आप इन रंगों का रुमाल हर समय अपने साथ रखें और यदि आप अपने ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग का पसंद करेंगे तो और भी अच्छा रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए उपयुक्त दिशा उत्तर है। इसलिए आपके लिए ऐसा मकान या फ्लैट शुभ रहेगा जिसका मूलांक तथा नामांक 5 हो। उत्तर दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। आप अपने घर की बैठक उत्तर दिशा में ही करें एवं घर के फर्नीचर आदि का रंग खाकी, सफेद चमकीला होना चाहिए, जो आपके लिए अच्छे फल देने वाले होंगे।

शुभ वाहन नं

अगर आप स्वयं का वाहन खरीदना चाहते हैं तो उसके लिए आपको पहले अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करने वाले अंकों के अनुसार पंजीकरण क्रमांक लेना हितकर रहेगा। आपका मूलांक 5 है एवं मित्रांक 3 एवं 9 हैं। अतः आपके लिए शुभ पंजीकरण क्रमांक 5234 = 5 आदि होना चाहिए। आपके वाहन का नंबर 104 = 5 इत्यादि हो तभी आपके लिए यह शुभ फलदायक रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आती है तथा आप चर्म रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक चिंता, दुर्बलता, शारीरिक कमजोरी तथा मानसिक दुर्बलता से ग्रसित हो जाते हैं। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय विष्णु की पूजा, पूर्णिमा का व्रत कर के, केले का प्रसाद लें।

व्यवसाय

तार और टेलीफोन विभाग, ज्योतिष, सेल्समैन, डाकघर, पोस्टमैन, बीमा विभाग, बैंकिंग, बजट निर्माण, रेलवे इंजीनियरी, संपादक, तंबाकू व्यवसाय, रेडियो व्यवसाय, लेखक, पत्रकार, अनुवादक, राजनीति संबंधी कार्य, मुद्रणालय, संचार व्यवस्था, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालय, लाइब्रेरियन, यातायात संबंधी कार्य, इतिहास, खोज एवं पुरातत्व विभाग, आविष्कारक, मुनीम, पर्यटक एवं बुद्धि बल के समस्त कार्य।

व्रतोपवास

बुधवार को बुध अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। पैंतालीस या सत्रह बुधवारों को यह व्रत करें। हरे रंग के कपड़े पहनें एवं हरे पदार्थों का दान करें। तुलसी के पत्ते खाना एवं चढ़ाना लाभप्रद रहता है। पन्ना या मरगज की माला पर बुध मंत्र का जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए पन्ना शुभ रत्न है। उसके न मिलने पर उपरत्न मरगज, ओनेक्स, ग्रीन पेरनीडाट धारण करें। इसे आप सोने या चांदी में तीन से छह रत्ती में बनवा कर, बुधवार के दिन, शुक्ल पक्ष में दायें हाथ की कनिष्ठा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप बुध ग्रह की उपासना करें भगवान लक्ष्मी नारायण की आराधना करें। भगवान लक्ष्मी नारायण के चतुर्दशाक्षरी मंत्र "ओम् ह्रीं ह्रीं श्री श्री लक्ष्मी वासुदेवाय नमः" का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगी तो आप विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगी। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान लक्ष्मी नारायण के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए बुध के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु बुध के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

बुध गायत्री मंत्र – ऊँ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप बुध का ध्यान करें, मन में बुध की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ बुध को अनुकूल बनाने हेतु बुध के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान नब्बे माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।। जप संख्या 9000।।

वनस्पति धारण

आप बुधवार के दिन विधारा की एक इंच लंबी जड़ ला कर, हरे धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या सोने या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे बुधवार के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक बुधवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, गोमय, चावल, गोरोचन, स्वर्ण, आंवला और मधु आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ बुध के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

बुध की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को बुध के पदार्थ कांसी, हाथी दांत, हरा वस्त्र, मूंगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शास्त्रा, पफल, षट्रस भोजन, घृत, सर्व पुष्प आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

बुध को अनुकूल बनाए रखने हेतु बुध यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, बुधवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र के चत्तुर्थ चरण में कर्क लग्न, कर्क नवमांश एवं कर्क राशि के द्रेशकाण में हुआ है। जन्मकाल वर्गोत्तम गुण से युक्त एवं अनुकूल जन्म लग्नोदयादि उदित था जिसके प्रभाव से आप भाग्यशाली, अनेक अनुकूलताओं से युक्त, आरामदायक जीवन व्यतीत करनेवाली है। समाज में आपकी स्थिति समृद्धियुक्त एवं जीवन का श्रेय वर्गोत्तम का प्रभाव भगवान की देन प्रमाणित करता है।

आपके जीवन का मुख्य सबक यह है कि आप मस्तिष्क में यह बात सोच लें कि आप निश्चित रूप से उन्नति प्राप्त करेंगी एवं आप किसी भी विषय अथवा कार्य योजना पर निश्चित समय पर निर्णय लेकर, कार्यरूप देना, यह आपका स्वाभाविक जन्मजात विशेषता है। यदि आप तत्क्षण कार्य की सुनिश्चितता नहीं प्राप्त कर सकी तो परिणामस्वरूप अनेकानेक सुअवसर का लाभ आपको हस्तगत नहीं हो सकेगा। अस्तु आपको दृढ़तापूर्वक चिन्तन करके कार्य कला नीति लागू करनी चाहिए। ताकि आप लाभ प्राप्ति के परिणाम के अनुसार विजय श्री प्राप्त कर सकें।

आपको दो अन्य अपेक्षित सावधानी के सम्बन्ध में ध्यान देना आवश्यक है। आप जितनी संख्या में सन्तान की प्राप्ति चाहेंगे-उतनी संतान का सुख अवश्य प्राप्त होगा।

आपके शरीर का उपरी भाग बहुत उन्नत एवं प्रभावशाली रहेगा। जबकि कुछ वर्षों के बाद उदर बड़ा होकर शरीर का निचला भाग दुर्बल हो जायगा। यदि आप बैल की भॉति उदर बढ़ाने की प्रवृति का त्याग करें। अन्य दूसरी बात यह है कि आप अपने पारिवारिक आकृति के सम्बन्ध में सचेत रहे। क्योंकि छोटा परिवार द्वारा उत्तम सुख प्राप्त होता है। इसलिए परिवार के प्रति समर्पित एवं पति के साथ अनुकूलतापूर्वक सम्बंधित रहकर परिवार नियोजन के सिद्धान्त के अनुसार अधिक मात्रा में सन्तानोत्पत्ति पर नियंत्रण रख सकती हैं। यह स्वभाव आप दोनों में किसी का भी आपके पारिवारिक जीवन अथवा देशीय प्रथा के लिए ठीक नहीं है। यह झलक आपके जन्म प्रभाव से परिलक्षित होता है।

आपके लिए उत्तम तो यह है कि आप समझौता पूर्वक सचेत रहकर पारिवारिक सुख एवं बच्चों के सुख एवं लाभ के लिए सुनिश्चित कर लें कि आपका परिवारिक जीवन नियंत्रित हो।

सामान्यतया आप पूर्णरूपेण स्वस्थ्य रहने के लिए सचेष्ट रहें, तथा स्वास्थ्य का सम्पोषण करती रहेंगी।

आप अपने स्वस्थ्य के लिए तथा कुछ रोगादि के प्रति सावधान रहें क्योंकि आप मूर्छा रोग, सफेद दाग, हिस्ट्रीया, फोड़ा फुन्सी तथा गले की दिक्कतें सम्बंधी रोग से आक्रान्त हो सकते हैं।

आपके लिए अनुकूल कर्म व्यवसायों में आयात-निर्यात, पर्यटन कार्य, ट्रान्सपोर्ट का कार्य तथा सामुदायिक कार्य करना उत्तम होगा। इसके अतिरिक्त कृषि कार्य, फैक्ट्री

चलाना, यांत्रिक, रेस्टोरेन्ट खेल सामग्री सुरक्षा एवं पुलिस की नौकरी से सम्बंधित कार्य कर सकती हैं। आप राजनीति के लिए उपयुक्त एवं पूर्ण समर्थ है। सम्बंधित कार्य आपके लिए लाभदायक प्रमाणित होगा।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में शुक्रवार एवं शनिवार पूर्ण आनन्द प्रदायक नही होगा। मंगलवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन सफलता प्रदायक होगा। बुधवार का दिन चिन्तनीय एवं व्ययकारी होगा। परन्तु रविवार का दिन सचेत रहने योग्य है।

आपके लिए अंक 4 एवं 6 अंक अनुकूल एवं कम्पनशील है।

अंक 3 एवं 5 अंक आपके लिए प्रतिकूल है अतः इस अंक के व्यवहार का त्याग करें।

आपके लिए अनुकूल रंग सफेद एवं क्रीम रंग, पीला एवं लाल रंग प्रमाणित हो सकता है। हरा एवं ब्लू रंग का सर्वथा त्याग करें।

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरें से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए

शुभ रहेंगी।

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सट्टे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराक्रमी, सद्व्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, घ्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं कूर होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

मेष राशि में केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शांत स्वभाव एवं दृढ़तापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करने वाले होते हैं। इनकी प्रवृति भावुक होती है तथा प्रेम एवं स्नेह का निश्छल भाव इनके अंदर विद्यमान रहता है। जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते है तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। धर्म के प्रति ये श्रद्धालु होते हैं तथा समाज एवं देश सेवा के कार्य में इनकी इच्छा रहती है। दूसरे लोगों की आंतरिक भावनाओं को समझने में ये चतुर होते हैं। साथ ही राजनीति या सरकारी क्षेत्र में उच्चाधिकार प्राप्त सम्मानित पद को अर्जित करने में सफलता प्राप्त करते हैं जिससे समाज में इनको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका स्वरूप सुदंर एवं दर्शनीय होगा तथा अन्य जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगी। आप एक विदुषी तथा बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी प्रायः अच्छी रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा।

लग्न में लग्नेश चन्द्रमा की राशि के प्रभाव से आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी एवं अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उत्साह तथा परिश्रम से करेंगी। इनमें आपको सफलताएं भी प्राप्त होगीं जिससे आपके सर्वत्र उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। धन एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आपकी बुद्धि श्रेष्ठ होगी तथा उत्कृष्ट कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर होंगी।

आप एक कर्तव्यपरायण महिला होंगी तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी। इससे आपके कार्य क्षेत्र के प्रभाव में सतत वृद्धि होगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे लोग आपसे प्रभावित होंगी। साथ ही मित्रों में भी आप आदरणीय एवं सम्माननीय समझीं जाएंगी तथा मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत होगा। संतति से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आप में कृतज्ञता की भावना भी विद्यमान रहेगी फलतः अन्य जनों के उपकार को आप स्वीकार करेंगी तथा उनका हार्दिक आभार प्रकट करेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा होगी तथा नियमित रूप से धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अवसरानुकूल सम्पन्न करती रहेंगी। जल क्रीड़ा के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इससे आपको आनंद की अनुभूति होगी। ज्यौतिष के प्रति भी आपकी श्रद्धा होगी तथा इसके ज्ञानार्जन में भी रूचिशील होंगी।

इस प्रकार आप शांत, दृढ़-प्रतिज्ञ, कर्तव्यपरायण, परिश्रमी एवं साहसी महिला होंगी तथा जीवन में सर्व सुखों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में सिंह राशि उदित हुई है जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप कम बोलना पसंद करेंगी तथा सामान्यतया शान्त रहना ही आपको अच्छा लगेगा। आप आवश्यकता एवं अवसरानुकूल ही सार्थक वार्तालाप करेंगी। जीवन में वैभव शाली पदार्थों की प्राप्ति तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेगी। आपकी प्रवृति शीघ्र क्रोधित होने की रहेगी परन्तु शीघ्र क्रोधित होकर शीघ्र शान्त भी हो जाएंगी। परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी तथा यत्नपूर्वक पारिवारिक जनों को सुख सुविधाएं प्रदान करेंगी। आपको पैतृक सम्पति की भी प्राप्ति होगी तथा अन्य मूल्यवान धातु एवं द्रव्यों से भी युक्त रहेंगी।

जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप समय समय पर प्राप्त करती रहेंगी। साथ ही गृह एवं वाहन आदि का स्वामित्व भी आपको प्राप्त होगा। आपकी वाणी स्पष्ट रहेगी तथा अन्य जन आपकी मृदुवाणी से प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। आपके ठोस तर्को से सभी लोग आपसे सामान्यतया सहमत रहेंगे। परिवार की सुख शान्ति पर आप यथोचित व्यय करेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा धार्मिक कार्य कलापों का भी समय समय पर आयोजन करती रहेंगी। परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का पालन करने में भी समर्थ रहेंगी। इस प्रकार आप तथा भाग्यशाली, परोपकारी, धार्मिक प्रवृति से युक्त तथा समाज में सम्मान जनक स्थान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति तीव्र रहेगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दार्शनिक या बौद्धिक कार्यो को करने में प्रवृत रहेंगी। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही अवसरानुकूल उनकी भलाई के कार्यो को सम्पन्न करती रहेंगी। पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए परस्पर एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे तथा यदा कदा अधिक वार्तालाप भी करेंगी। आपको अपने क्षेत्र में श्रेष्ठता या नेतृत्व प्राप्त होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही आप एक कुशल वक्ता होंगी तथा भाषा पर भी पूर्ण अधिकार रहेगा।

आधुनिक संचार की सुख सुविधाओं से आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक टेलीफोन, दूरदर्शन या वाहन आदि का उपभोग करेंगी। आप संगीत प्रिय होंगी तथा कला के प्रति भी आपके मन में आकर्षण रहेगा आपका कंठ मधुर रहेगा फलतः अन्य लोग आपकी मधुर आवाज से प्रभावित रहेंगे। लेकिन सर्वप्रथम अपने सांसारिक कार्यो को पूर्ण करेंगी उसके बाद ही संगीत संबंधी कार्य सम्पन्न करेंगी। समय समय पर आपकी समीपस्थ यात्राएं होती रहेगी तथा इनसे आपको ख्याति तथा लाभ अर्जित होगा तथा पड़ोसियों से भी आप अच्छे संबंध स्थापित करेंगी । नीति की भी आप ज्ञाता होंगी तथा आम चुनाव, लेख लिखने या पुस्तक प्रकाशन आदि से लाभ तथा ख्याति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप शस्त्र विद्या की ज्ञाता, अच्छे शील स्वभाव एवं मित्रों से युक्त, सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा शनि भी अपनी उच्चराशि में चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः शनि की उच्स्थ स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आजीवन इसका उपभोग करने में समर्थ होंगी। आप एक परिश्रमी महिला होंगी तथा अपने परिश्रम से धन एवं वैभव की वृद्धि करने में सदैव तत्पर होंगी। इससे आपकी सामाजिक स्तर में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगी।

जीवन में आपको चल एवं अचल संपत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा दादा या दादी से भी सम्पत्ति अर्जित हो सकती है। विवाह के उपरांत पति के सहयोग एवं प्रभाव से आप प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगी। यदि आप जायदाद या वाहन आदि के क्षेत्र में पूंजीनिवेश करें तो इससे आपको शीघ्र लाभ होगा एवं चल एवं अचल संपत्ति में भी वृद्धि होगी लेकिन विवादित संपत्ति से आपको दूर ही रहना चाहिए।

आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में उत्तम गृह से युक्त रहेंगी। आपका घर सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा इसमें स्थान काफी होगा। यह किसी अच्छी कालोनी में स्थित होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगी परंतु आपसी संबंधों में यदा कदा तनाव उत्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी युक्त होंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगी। आपके वाहनो की संख्या भी एक से अधिक हो सकती है।

आपकी माता जी शिक्षित बुद्धिमती तेजस्वी एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा पारिवारिक जनों का लालन-पालन करने में तत्पर होंगी। परिवार के सभी सदस्य उनका सम्मान एवं आज्ञापालन करेंगी तथा वह भी अपनी ओर से किसी को कोई कष्ट नहीं होने देंगी। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उन्नति में उनका विशेष योगदन रहेगा तथा अवसरानुकूल आर्थिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगी जिससे आपसी संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन के प्रति प्रारंभ से ही आपकी रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से परीक्षाओं में अच्छे अंको को अर्जित करेंगी। आप स्नातक परीक्षा भी अच्छे अंको से उतीर्ण करेंगी। इससे आपमें आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए परिश्रम करेंगी। आप तकनीकी या व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में भी वांछित डिग्री प्राप्त कर सकती है तथा इस ओर आपका झुकाव भी अधिक होगा।

सप्तमेश एवं अष्टमेश शनि की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको मध्यावस्था के बाद रक्त चाप था हृदय संबंधी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अतः यदि आप युवावस्था से ही खान-पान का विशेष ध्यान रखें तथा ऐसे पदार्थो का उपभोग न करें जिससे रक्तचाप या हृदय प्रभावित होता है तो आपको उपरोक्त समस्याओं में कमी आएगी तथा सुख पूर्वक जीवन व्यतीत होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी परन्तु बुद्धि में तीक्ष्णता के भाव की न्यूनता होगी जिससे समस्याओं के समाधान में किंचित विलम्ब हो सकता है। अतः आपको सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए तथा शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। नीचस्थ चन्द्र के प्रभाव से वैदिक एवं धर्मशास्त्रों में आपकी रूचि अल्प मात्रा में होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान एवं भौतिक शास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी एवं इस क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम से वांछित ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप कोई शोध कार्य भी आप सम्पन्न कर सकती हैं। इससे आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग एक विदुषी के रूप में आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे।

पंचमभाव में वृश्चिक राशि के प्रभाव से प्रेम प्रसंगो में आप की काफी रूचि होगी तथा मनोरंजन एवं दिल बहलाने का आप इसे साधन समझेंगे। इसमें मर्यादा एवं आदर्श की भावना भी कम ही होगी जिससे आपको समय समय पर अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त भावात्मक लगाव की अपेक्षा शारीरिक लगाव अधिक होगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा कन्या सन्तति अधिक होगी। आपकी सन्तति बुद्धिमान, योग्य एवं तेजस्वी प्रवृति के होंगे तथा अपने इन गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे वे माता-पिता की आज्ञा का पालन करेंगे परंतु रदा कदा अपनी मर्जी के कार्य भी करेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता-पिता की सलाह लेंगे वे व्यावहारिक बुद्धि के होंगे अतः आपको उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देने चाहिए तथा उन पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं डालना चालिए। इससे आपके सम्बन्धों में अनुकूलता बनी रहेगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति काफी परिश्रम एवं पराक्रम से ही सन्तोषजनक उन्नति करने में समर्थ होगे। यद्यपि आप उनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करेंगी लेकिन वे इसका पूर्ण लाभ उठाने में समर्थ होंगी परन्तु वे व्यावहारिक प्रवृति के होंगे तथा अपनी चतुराई से आजीविका अर्जन में समर्थ रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त तेजस्वी प्रवृति होने के कारण यदा-कदा अन्य सामाजिक जनों से उनका विवाद भी हो सकता है लेकिन सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक विदुषी तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा शत्रुता के भाव की सामान्यतया उपेक्षा ही करेंगी। यद्यपि आप शान्ति पूर्वक समय व्यतीत करने की इच्छुक रहेंगी परन्तु आपके शत्रु एवं विरोधी लोग इसमें व्यवधान उत्पन्न करेंगे तथा आपके सम्मान में न्यूनता एवं सामाजिक स्तर पर उपेक्षा करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। अतः उनकी ऐसी प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने के लिए कोर्ट में मुकद्दमे दायर कर सकती हैं। इस प्रकार आप दृढ़ता तथा बहादुरी से शत्रु वर्ग का सामना करेंगी तथा उनको पराजित करने में समर्थ रहेंगी। इस कार्य में आपकी बुद्धिमता तथा सहमित्रों का मंडल भी सहयोग प्रदान करेगा। यदा कदा परिवार या बन्धु वर्ग से भी आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अन्ततोगत्वा इसमें आपको ही सफलता प्राप्त होगी। आप नैतिकता का अनुपालन करेंगी अतः शत्रु पक्ष का दमन करने के लिए नकारात्मक साधनों का कभी भी प्रयोग नहीं करेंगी। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति बनाने के लिए सर्वत्र यत्नशील रहेंगी।

आपका सेवक वर्ग भी आज्ञाकारी रहेगा तथा आपको पूर्ण सम्मान प्रदान करेगा। अपने सेवकों तथा सहायकों के प्रति आपका दृष्टिकोण सकारात्मक तथा अपनत्व का रहेगा। जीवन में ऐसे अवसर अल्प मात्रा में ही आएंगे जबकि आपको ऋण की आवश्यकता पड़ेगी यदि आ भी गई तो आप ऋण से शीघ्र ही मुक्ति पा जाएंगी। आपको अपने मामा मामियों से अच्छे संबंध रखने चाहिए क्योंकि मामा से जीवन में आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी लेकिन मामियों के स्वभाव में भिन्नता के कारण यदा कदा इसमें न्यूनता आएगी तथा वे आपको अल्प मात्रा में ही सहयोग प्रदान करेंगी।

यदा कदा जीवन में आपको मुकद्दमों आदि का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंत में विजय आपको ही होगी। इस प्रकार आप समाज में एक आदरणीय तथा सम्मानीय समझी जाएंगी तथा अपने अच्छे संबंधों से अन्य जनों से उचित सहयोग एवं आदर प्राप्त करेंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा शुक्र भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया सप्तम भाव में मकर राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी चंचल वात प्रकृति एवं धनवान होता है परन्तु शुक्र के प्रभाव से वह शिक्षित बुद्धिमान तथा आधुनिक विचारों से युक्त रहता है एवं भौतिकता से युक्त जीवन व्यतीत करने में उसे आनंद की अनुभूति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति शिक्षित एवं सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा चंचलता का भाव भी विद्यमान रहेगा। सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह दक्ष होंगे एवं अपने उत्कृष्ट कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आधुनिकता के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण होगा एवं पाश्चात्य शास्त्र एवं संस्कृति के अनुशरण में प्रवृत रहेंगे। लेकिन कर्तव्य परायणता का भाव उनमें विद्यमान होगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करेंगे जिससे सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

आपके पति सुंदर आकर्षक एवं गौरवर्ण के व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर में पुष्टता एवं सुडौलता बनी रहेगी जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। इसके अतिरिक्त कला संगीत एवं कविता आदि में भी उनका आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह किसी व्यक्ति संबंधी के योगदान से सम्पन्न होगा परन्तु शुक्र के प्रभाव से आप प्रेम विवाह भी कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं सर्म्पण का भाव होगा एवं सांसारिक कार्यो को परस्पर सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे जिससे दाम्पत्य संबंधों में मधुरता बनी रहेगी। लेकिन यदा कदा पति की चंचलता एवं भ्रमण प्रियता से आपको असुविधा की अनुभूति हो सकती है परन्तु सांमजस्य स्थापित करने में आप समर्थ होंगी।

आपका ससुराल किसी धनाढ्य एवं समृद्ध परिवार से सम्पन्न होगा। सास ससुर के प्रति आपके मन में मान सम्मान की भावना रहेगी तथा वे भी आपको पुत्रीवत स्नेह प्रदान करेंगे। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यो में एक दूसरे की सलाह एवं सहमति लेंगे जिससे आपसी विश्वास का भाव बना रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपके पति की श्रद्धा एवं सेवा की भावना रहेगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे साथ ही अपने ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। साले एवं सालियों को भी वे अपने सद्व्यवहार एवं मृदुवाणी से प्रसन्न रखेंगे तथा वे भी उन्हें पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा साझेदारी से विशेष लाभ एवं उन्नति के योग बनेंगे।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अध्यात्म, ज्यौतिष अथवा तंत्र मंत्र आदि पर विश्वास कम ही करेंगी क्योंकि आप एक व्यावहारिक महिला तथा अनावश्यक समय बर्बाद करना या स्वप्न देखना आपको उचित नहीं लगता तथा अपने पराक्रम एवं कार्य पर आपका पूर्ण विश्वास रहेगा। पैतृक सम्पत्ति की आपको प्राप्ति होगी लेकिन यह अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु इसका आप पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि आपके पास पहले ही प्रचुर मात्रा में धनऐश्वर्य रहेगा तथा आवश्यक सुख संसाधनों से भी युक्त रहेंगी। आप एक सिद्धांतवादी महिला होगी तथा दाम्पत्य जीवन भी अच्छा रहेगा।

जीवन में आपकी कुंडली के अनुसार आपके घर में चोरी आदि की भी संभावना रहेगी लेकिन इससे कोई विशेष हानि नहीं होगी क्योंकि पुलिस या अन्य सूत्रों से आपको अपना सामान सही सलामत वापस मिल जाएगा। बीमा आदि करने से भी आपको कोई विशेष लाभ नहीं होगा। अतः इस क्षेत्र में अनावश्यक पूंजी निवेश न करें तथा अन्यत्र उसका सदुपयोग करें।

शारीरिक सुरक्षा के प्रति आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए तथा यत्नपूर्वक दुर्घटना आदि की उपेक्षा करनी चाहिए तथा इससे बचने के लिए आवश्यक रूप से तैयार रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सम्पूर्ण सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से धर्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगी तथा इसके प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी। साथ ही ध्यान या समाधि आदि में भी रूचिशील रहेंगी तथा अन्तदृष्टि भी प्रबल रहेंगी। ज्योतिष या तंत्र मंत्र के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा इसका न्यूनाधिक ज्ञान भी रहेगा। आप नियमित रूप से पूजा अर्चना करेंगी तथा आध्यात्मिक विषयों का पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा इन पर धारा प्रवाह भाषण करने में भी समर्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी धार्मिक संस्था से सम्बन्धित हो सकती है तथा उसमें कोई उच्च या सम्मान्नीय पद भी प्राप्त कर सकती हैं ।

अपने व्यवसाय में आप कुशल रहेंगी तथा इससे समाज में इच्छित मान सम्मान एवं ख्याति अर्जित करेंगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही परिश्रम एवं लगन के द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी तथा धार्मिक विषयों का व्यक्तिगत रूप से ज्ञान प्राप्त करेंगी। दैनिक पूजन सम्पन्न करने से आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति विकसित होगी तथा आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां सही सिद्ध होंगी।

लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको लाभ ऐश्वर्य एवं ख्याति प्राप्त होगी। साथ ही आप किसी दूसरे शहर या देश में किसी धार्मिक संस्था की स्थापना भी कर सकती हैं। आप परोपकार तथा सामाजिक जनों के हित कार्यो को करने में भी हमेशा तत्पर रहेंगी। पौत्रों से आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होगा तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों से इस जीवन में सुख ऐश्वर्य को अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक सन्तों के प्रति श्रद्धालु , मन्दिर, तालाब आदि परोपकार के कार्य करने वाली तथा आर्थिक रूप से समृद्ध रहकर अपना जीवन यापन करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही केतु भी दशम भाव में ही स्थित है। मेष राशि अग्नितत्व एवं केतु वायुतत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन करने के भी इच्छुक होंगी। इस परिवर्तन से आपको यथोचित लाभ भी अवसरानुकूल प्राप्त होता रहेगा जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

दशमभावस्थ केतु के प्रभाव से आपके लिए उचित आजीविका क्षेत्र वायुसेना, हवाई सेवाएं, विद्युत इंजीनियरी, रासायनिक क्षेत्र, राजनीति, होटल प्रबंधन या कर्मचारी तथा अन्य कार्य उपयुक्त रहेंगे तथा इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित लाभ एवं उन्नति होगी तथा अपने भविष्य को सुरक्षित करने में समर्थ होंगी। अतः यदि आप कार्य क्षेत्र में वांछित उन्नति सफलता एवं सम्मान प्राप्त करना चाहती है तो आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही आजीविका का चुनाव करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में लोहे का कार्य, खनिज पदार्थ, विद्युत उपकरण, वाहन संबंधी व्यापार खेती या जायदाद संबंधी कार्य, ट्रेवल एजेंसी, खेती बागवानी एवं श्रमसाध्य व्यापार से वांछित लाभ एवं उन्नति अर्जित करने में समर्थ होंगी। इन क्षेत्रों में व्यापार करने से आपको वांछित सफलता की प्राप्ति होगी तथा भविष्य के लिए भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे जिससे आजीवन आर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी तथा आपके कार्यक्षेत्र में भी विस्तार होगा।

दशमभाव में मेष राशि में केतु की स्थिति के प्रभाव से जीवन में आप वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगी। साथ ही आपको सामाजिक यश की भी प्राप्ति होगी। आप एक अधिकार प्राप्त महिला होंगी तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। नैसर्गिक पापी ग्रह केतु के प्रभाव से आप को उपरोक्त मान सम्मान प्रतिष्ठा एवं यश की विलम्ब से प्राप्ति होगी तथा इससे अनावश्यक व्यवधानों तथा समस्याओं का भी सामना करना पड़ेगा लेकिन इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता एक तेजस्वी पराक्रमी एवं मेधावी व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा एवं सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे लेकिन उनमें क्रोध के भाव की भी अधिकता होगी। आपके प्रति वे पूर्ण वात्सल्य भाव से युक्त होंगे तथा शिक्षा दीक्षा का उचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा उनके प्रभाव से आप यथोचित कार्यक्षेत्र प्राप्त करने में समर्थ होंगे। आप भी अपने कार्यकलापों से उनकी प्रतिष्ठा भी वृद्धि करेंगी। लेकिन आपके परस्पर संबंधों में मधुरता कम ही रहेगी तथा वैचारिक तथा सैद्धान्तिक मतभेदों की प्रबलता के कारण इसमें तनाव उत्पन्न होंगे। अतः आप दोनों को चाहिए कि ऐसे अवसरों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करें।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपकी जन्म कुंडली में एकादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपके मन में विभिन्न प्रकार की सांसारिक इच्छाएं विद्यमान रहेंगी तथा महत्वाकांक्षा के भाव की भी प्रबलता दृष्टिगोचर होगी। जीवन में अपनी इच्छाओं तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति परिश्रम एवं पराक्रम से करने में सफल रहेंगी। आपका धनार्जन उत्तम रहेगा तथा आय स्रोतों की भी अधिकता रहेगी। यद्यपि आपका धनार्जन उत्तम रहेगा लेकिन बचत की प्रवृत्ति भी आप में रहेगी। अतः आर्थिक रूप से आपको कभी कोई परेशानी नहीं होगी। आपको ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से इच्छित लाभ सहयोग एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा आप भी उनको इच्छित मान सम्मान प्रदान करती रहेंगी।

आप सक्रिय प्रवृत्ति के लोगों को मित्र बनाने की इच्छुक रहेंगी तथा वे आपके लिए विश्वसनीय भी रहेंगे। मित्र मंडल में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा अपने कलात्मक कार्य कलापों से आप उनका मनोंरजन करने में तत्पर रहेंगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र कला संगीत या नाटक आदि के ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों से अधिक होगा तथा इन्हीं क्षेत्रों से जीवन में आपको इच्छित धनार्जन एवं लाभ भी होगा। इस प्रकार मित्रों से युक्त होकर प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा समाज में आदरणीया तथा प्रतिष्ठित महिला समझी जाएंगी। अन्य सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करना आप अपना परमप्रिय कर्तव्य समझेंगी तथा इसी परिपेक्ष्य में किसी विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति भी होने की संभावना रहेगी। आप कभी कभी स्वयं ही एकाकीपन की अनुभूति करेंगी लेकिन आपका सामान्य जीवन भौतिक सुख संसाधनों से तथा अन्य वैभव से युक्त रहकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत का अनुपालन करने वाली महिला होंगी तथा जीवन में इसका अनुकरण करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आपकी सतर्कता बनी रहेगी। साथ ही ईमानदार होगी अतः बेईमानी करने वालों से आपको घृणा रहेगी। आपका धनार्जन स्वयं की योग्यता तथा परिश्रम से ही अर्जित होगा। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से भाग्यशाली महिला होंगी।

जीवन में आपको आर्थिक कष्ट की अनुभूति अल्प मात्रा में ही होगी वास्तव में आपकी आवश्यकताएं सीधी सादी एवं सीमित मात्रा में रहेंगी तथा भौतिकता पर आपका विशेष आकर्षण नहीं रहेगा। इससे आपका व्यय सीमित तथा नियंत्रित रहेगा। आप शीघ्र लाभ अर्जित की अपेक्षा दीर्घावधि लाभ की अधिक इच्छुक रहेंगी। धन संग्रह के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा व्यय के साथ बचत भी अवश्य करेंगी। इस प्रकार आपके समस्त पारिवारिक तथा अन्य व्यय आवश्यकता के अनुसार ही रहेंगे एवं इनमें अनावश्यक व्यय नहीं होगा जिससे आर्थिक सुदृढ़ता प्रायः बनी रहेगी साथ ही अपनी समृद्धि के द्वारा भविष्य के लिए कल्याणकारी योजनाओं पर भी व्यय करेंगी। इस प्रकार आप अपना धन बड़ी बड़ी कंपनियों पर लगाएंगी जहां से उचित लाभ प्राप्त होगा।

आपकी दूर समीप की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी जिनसे प्रारंभ में व्यय होकर भविष्य में लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इसके साथ ही आपकी विदेश संबंधी कोई लाभदायक एवं उन्नतिकारक यात्रा भी सम्पन्न होगी। इस प्रकार आप धन-वैभव से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करेंगी।

नक्षत्रफल

आप रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि गज, वर्ण ब्राहमण, गण देव, वर्ग मेष तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "च" या "चा" अक्षर से होगा। यथा चन्द्रावती आदि

आप नैसर्गिक रूप से अच्छे स्वभाव से युक्त रहेंगी तथा अन्य लोगों के साथ आपका व्यवहार विनम्र रहेगा। इससे सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे। जीवन में विविध प्रकार के धनैश्वर्य से आप सम्पन्न रहेंगी एवं सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। आप एक संयमशील महिला होंगी तथा समस्त इन्द्रियों को वश में रखने में सफल रहेंगी। आप में ईमानदारी का भाव सदैव विद्यमान रहेगा एवं अपने समस्त कार्यों को इसी गुण से सम्पन्न करेंगी। साथ ही व्यापारादि में भी आप निर्मल मन से लाभ अर्जित करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमान महिला होंगी एवं एक धनाढ्य महिला के रूप में समाज में जानी जाएंगी।

चारुशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वभाव वाला, ऐश्वर्य युक्त, जितेन्द्रिय, नेक नीयत से द्रव्य लाभ करने वाला तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

आप के सभी शारीरिक अंग पूर्ण सुन्दरता से युक्त रहेंगे। आप समाज में सभी लोगों के मध्य समान रूप से लोकप्रियता अर्जित करेंगी तथा सभी लोगों को समान रूप से सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आप शौर्योचित गुणों से भी युक्त रहेंगी तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। आपका मन भी निर्मल रहेगा एवं अन्य जनों से आपका निस्वार्थ स्नेह तथा मित्रता का व्यवहार रहेगा।

सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक शारीरिक अंगो से पूर्ण सम्पन्न, सर्वसमाजप्रिय, रणप्रिय, हृदय से शुद्ध एवं धन से सुसम्पन्न होता है।

आप कई प्रकार के कार्यों को करने में निपुण रहेंगी तथा अपने सभी महत्वपूर्ण कार्यों को प्रवीणता से सम्पन्न करेंगी। आप नाना प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने में सफल होंगी एवं एक विदुषी के रूप में सामाजिक प्रतिष्ठा तथा ख्याति अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त धन वैभव से भी आप सुसम्पन्न रहकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवती सम्भवे लोके धनधान्यैरलंकृतः।।
मानसागरी

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सब अंगों से पूर्ण, पवित्र, कार्यों में दक्ष, साधु, शूरवीर, पंडित एवं धन धान्यों से सर्वथा अलंकृत रहता है।

आपके जानु में कोई निशान या चिन्ह भी अंकित हो सकता हैं। आप सलाह देने आदि कार्यों में अत्यन्त ही दक्ष होंगी फलतः सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप सुन्दर पति तथा गुण सम्पन्न पुत्रों से सर्वथा युक्त रहेंगी तथा आपके मित्र भी सद्गुणों से सुसम्पन्न तथा शिक्षित होंगे। आप दृढ़ निश्चयी महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को दृढता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही आपके पास धन सम्पति भी प्रायः स्थिर रूप से विद्यमान रहेगी।

रेवत्या मुरूलांच्छनोपगतनुः कामातुरः सुन्दरो।
मंत्री पुत्रकलत्रमित्रसहितो जातः स्थिरः श्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य जाघों में चिन्ह वाला, कामातुर, सुन्दर, मंत्री या सलाह देने वाला, दृढ़, श्रीयुत, स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से युक्त होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में सपरिवार धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने के लिए भी आप नित्य तत्पर एवं उत्सुक रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित रहेंगे तथा तीर्थयात्रा करने के लिए भी सदैव यत्नशील एवं उद्यत रहेंगी। आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं ऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। साहित्य या काव्यशास्त्रादि के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा एवं समयानुसार आप इनका अध्ययन भी करेंगी। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य प्रथम प्रयत्न में ही सफल हो जाया करेंगे। बन्धुवर्ग से आपका विशेष स्नेह का भाव रहेगा एवं उनसे नित्य सहयोग एवं सहायता प्राप्त करती रहेंगी। आप एक सौभाग्यशाली महिला भी होंगी एवं धार्मिक तथा देव पितृ संबंधी कार्यों में नित्य निष्ठावान होंगी। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी एवं गुणवान पुत्रों से प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

आप समुद्र से उत्पन्न द्रव्यों तथा शंख मोती आदि रत्नों से सुसम्पन्न रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी अर्जित होगा। जीवन में आप किसी अन्य व्यक्ति की धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करेंगी तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगी। आपका सुन्दर तथा नवीन वस्त्रों के प्रति अत्याधिक ही अनुराग रहेगा एवं इनको प्राप्त करने के लिए आप अत्यन्त ही लालयित भी रहेंगी। इसके अतिरिक्त शारीरिक रूप से आप मध्यम कद की महिला रहेंगी।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।

अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप दिन में कई बार जल पीने की इच्छा प्रकट करेंगी तथा इसका अधिक मात्रा में उपयोग करेंगी। अपने पति के ऊपर आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनसे आप पूर्ण रूपेण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। अतः आपका गृहस्थ जीवन अत्यन्त सुखमय एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक उच्चकोटि की महिला होंगी एवं समाज में पूर्ण रूप से सम्मानित रहेंगी। आप कृतज्ञता के गुण से भी सुशोभित रहेंगी एवं अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा हार्दिक आभार भी व्यक्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा अपने अधिकांश महत्वपूर्ण कार्यों पर भाग्यबल से ही सफलता अर्जित करेंगी।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा संयमित जीवन व्यतीत करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक चतुर तथा बुद्धिमती महिला होंगी एवं अपने अधिकांश कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमतापूर्ण ढंग से ही सम्पन्न करेंगी। जल क्रीड़ा में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा इससे आपको अत्यन्त ही प्रसन्नानुभूति प्राप्त होगी। आप स्वच्छ बुद्धि से युक्त रहेंगी एवं धोखा किसी से भी नहीं करेंगी।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप उदरपोषण संबंधी कार्यों में अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी। साथ ही कभी कभी लाभमार्ग अवरूद्ध होने पर आर्थिक संकट का भी आपको सामना करना पड़ेगा। आप कान्तिमय शरीर से सुशोभित रहेंगी एवं इससे आपके सौन्दर्य में नित्य अभिवृद्धि होगी। आप पिता से भी धन सम्पति अर्जित करेंगी एवं उसका जीवन में सुखपूर्वक उपभोग करेंगी। आप में साहस का भाव भी रहेगा एवं साहसिक कार्यों को करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप में सन्तोष का भाव भी विद्यमान रहेगा।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारुकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप स्वभाव से गम्भीर होंगी तथा वीरता एवं पराक्रम के गुणों से सर्वदा सुशोभित रहेंगी। समाज में आप एक गणमान्य तथा प्रतिष्ठित महिला रहेंगी तथा सभी सामाजिक लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आप में कृपणता का भाव भी रहेगा। अतः धन संचय में अधिक रूचिशील रहेंगी। कुल या परिवार में आप प्रिय रहेंगी तथा सभी परिवारिक जनों से आप यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगी। सेवाकार्यों में भी आप हमेशा यत्नशील रहेंगी एवं इनको सम्पन्न करके आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगी। आपको शीघ्र गति से चलना पसन्द होगा। आपका चाल चलन भी श्रेष्ठ रहेगा तथा अन्य जनों के लिए अनुकरणनीय तथा प्रशंसनीय रहेगा। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार अपने आकर्षक सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व तथा विद्वता के कारण आप समाज में सम्मानित महिला होंगी तथा कई अन्य लोगों से आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध भी रहेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

देव गण में जन्म लेने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त मधुर तथा प्रिय रहेंगी जिससे अन्य लोग आपसे सर्वथा प्रसन्न रहेंगे। आपकी बुद्धि भी सरलता के गुण से युक्त होगी तथा अपने विचारों को सादगी से प्रकट करना एवं अन्य की बातों को सुगमता से ग्रहण करना आपकी मुख्य विशेषता रहेगी। आपको अल्प मात्रा में शुद्ध तथा सात्विक भोजन करना अच्छा लगेगा। दूसरे लोगों के गुणों का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा एवं अच्छे बुरे की पहचान करने में भी आप सफल रहेंगी। साथ ही श्रेष्ठ लोगों द्वारा प्रतिपादित उत्तम गुणों से सुशोभित रहेंगी। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य तथा सम्पति से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

देखने में आप अत्यन्त ही सुन्दर होंगी एवं आपके मन में दानशीलता की प्रवृति विद्यमान रहेगी जिसका आप जीवन में यथाशक्ति अनुपालन करती रहेंगी। आप बुद्धिमान होंगी एवं हमेशा सादगीयुक्त जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगी अनावश्यक भौतिकता से आप दूर ही रहना चाहेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक महान विदुषी के रूप में भी समाज में ख्याति अर्जित करेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

गज योनि में उत्पन्न होने के कारण आप उच्चाधिकारी वर्ग में प्रिय तथा आदरणीय रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित होता रहेगा। आप एक बलशाली महिला होंगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को स्वभुजबल से ही सिद्ध करने में सफल रहेंगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगी तथा सुखपूर्वक उनका उपभोग भी करेंगी। आप किसी उच्चाधिकारी की सहयोगी या स्वयं भी कोई उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में सफल हो सकती हैं। आप एक उत्साही महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को उत्साह पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगी।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरें से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए शुभ रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा

सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल देने वाले होगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मन में चिन्ता, शरीर में अस्वस्थता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए। साथ ही वृहस्पतिवार के भी नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान से कम से कम 16000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपकी समस्त चिन्ताएं दूर होंगी एवं समस्त अशुभ प्रभाव समाप्त होकर अन्यत्र शुभ प्रभावो में वृद्धि होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य आठवें खाने में है। इसकी वजह से आप बहुत गुस्सा करेंगी। आप अधीर, पुरुषों के लिए लालायित, सच्चाई से आगे बढ़ने वाली, तपस्विनी होंगी। मरने के वक्त आपको भयानक रोग या कष्ट नहीं होगा। आपकी आयु की रक्षा होगी। बहन की ससुराल में रह कर चोरी न करें तो अच्छा फल मिलेगा। यदि आप चोरी न करें तो भाग्यशाली होंगी। आपके सामने किसी की मौत नहीं होगी। आप बीमार व्यक्ति के पास बैठें तो रोगी स्वस्थ हो जाएगा। आमतौर पर आपका जीवन सुखी रहेगा। आप सच्चे और नर्म स्वभाव की होंगी। कभी तिरस्कृत भी होना पड़ सकता है। आप हर काम करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। आपके धन का दूसरे लोग भी उपयोग करेंगे। आपका साधू स्वभाव होगा तो अपने लिये किये कार्यों को संसार को समर्पित करने की आप में भावना रहेगी।

यदि आपने पुरुषों से झगड़ा किया, माता-पिता, बहन-भाई को धन के लिए तंग किया, चोरी ठगी की नियत रखी, दक्षिण दिशा के मुख्य दरवाजे वाले मकान में रिहाईश की तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से गुप्त रोग से दुःखी/अस्वस्थ रहेंगी। सरकारी विभाग से परेशानी आर्थिक स्थिति खराब और आंखों की रोशनी कम हो सकती है। गंदी सोहबत में पड़ कर आप तबाह हो जाएंगी। आप पति के अलावा दूसरे पुरुष से संबंध रखेंगी तो आपके भाग्य में धोखा लिखा है। जहरीले जीव-जंतुओं से सावधान रहें ये आपके मौत के कारण हो सकते हैं। आपको पीठ में दर्द, रक्तचाप की बीमारी हो सकती है। आपको आर्थिक नुकसान की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. रसोई को अपवित्र न बनायें।
2. परपुरुष से अनैतिक संबंध न रखें।

उपाय :
1. बड़े भाई या गाय की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में नौंवे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से आप दुःखियों की हमदर्द, समाज में आदरणीय, पैतृक/ससुराल जायदाद मिलेगी और उससे अधिक लाभ होगा। हर प्रकार से जीवन उत्तम बीतेगा। आपके जीवन के 24वें वर्ष में चंद्रमा का अच्छा फल मिलेगा। आप घूमने-फिरने की शौकीन होंगी। तीर्थयात्रा भी करेंगी। आपका स्वभाव सरल, संगीत में रुचि रखने वाला, धार्मिक और कुशल कार्यकर्त्ता होंगी। आप गणित विद्या में माहिर

होंगी। आप धर्म का पालन करेंगी। आपको अच्छी संतान का सुख नसीब होगा। आपके धन-दौलत में बरकत होगी। 34 वर्ष की आयु के बाद साधारण लेकिन 48 वर्ष की आयु के बाद आर्थिक हालत अच्छी हो जाएगी। आप विदेश का सफर करेंगी। दान-धर्म के कार्यो में पूरी दिलचस्पी रखेंगी। पिता/ससुर के प्रति अच्छा व्यवहार रहेगा। पिता/ससुर का पूरा सुख नसीब होगा। कभी-कभी आपसे गलत काम भी हो सकते हैं इसका विशेष ध्यान रखें। स्वभाव से साधू तथा व्यवहार में नम्र होंगी। यदि सिंह बन कर रहना चाहें तो उथल-पुथल होती रहेगी। आपके लिए नम्र बन कर रहना ही शुभकारक है। आप जीवन में तरक्की की चोटी तक पहुंच जाएंगी।

यदि आपने धार्मिक कार्यों के विरुद्ध कार्य किया या धर्म के नाम पर चंदा मांगा, माता/सास को कष्ट दिया या माता/सास का विरोध किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी अक्ल धोखा देगी, आपका छोटा दिल होगा और आवारा घूमने से हानि होगी। चांदी-पानी-चावल आदि सफेद वस्तुओं का कार्य हानि देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परपुरुष से अनैतिक संबंध न रखें।
2. झूठ-झूठ से दूर रहें।

उपाय :

1. तीर्थ यात्रा करें या धार्मिक कार्य करें।
2. चंद्र ग्रहण के समय 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल आठवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से लाल किताब के अनुसार आठवें खाने में मंगल हो तो महिला मंगलीक होती है। आप मंगलीक महिला हैं। आपको माता-पिता/सास-ससुर का पूरा सहारा मिलेगा। आपको गृहस्थी का पूरा सुख मिलेगा। आपका हौसला बुलंद रहेगा। आप दृढ़ निश्चयी महिला होंगी। आप बिना नतीजा सोचे-समझे, हिम्मत के साथ कष्टों का मुकाबला करेंगी। आप अपने काम-काज में मन लगा कर काम करने की आदी होंगी। आप इंसाफ पाने के लिए लड़ने को तैयार रहेंगी। आपके जीवन की रक्षा होती रहेगी। आप जीवन में बाधाओं को हंस कर सह लेंगी। ससुराल से संपत्ति का लाभ होगा। शत्रुओं पर जीत हासिल करेंगी या शत्रु भय से सामने न आयेगा।

यदि आपने विधुर पुरुष के साथ झगड़ा करके उसकी बद्दुआ ली, घर में जमीन के अंदर रहने वाली तंदूर-भट्टी हुई, लोगों से बिना कारण झगड़ा-फसाद किया, हर समय आपने गुस्सैल स्वभाव रखा तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपके छोटे भाई के लिए बेहद बुरा एवं भाई के कारण लड़ाई-झगड़े होंगे। आपका भाई/देवर आपका बेड़ा गर्क कर सकता है। अचानक दुर्घटना से रक्त

विकार हो सकता है या नाखून के दोष की आशंका है। किसी आदमी पर बेवजह गुस्सा करना, पछतावा का कारण बन सकता है। आप गुस्सा करके नुकसान भी उठा सकती हैं। आप पर कोई आक्रमण हो इस बात की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. घर के अंदर जमीन में तंदूर/भट्टी न रखें।
2. तोता या मैना न पालें।

उपाय :
1. विधुर पुरुष का आर्शीवाद लेवें।
2. तंदूर में मीठी रोटी लगा कर कुत्तों को खिलावें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली के आठवें खाने में बुध पड़ा है। इसकी वजह से आपको परिश्रम करते रहना पड़ेगा। आप गुप्त विद्या की जानकार या गुप्त विद्या से लगाव रखने वाली हैं। 34 वर्ष के बाद समय अच्छा हो जाएगा। राजदरबार से सम्मान मिलेगा, ससुराल से लाभ मिलेगा।

यदि आपके घर में लाल, गुलाबी, महरून आदि रंग के कोरे कपड़े होंगे या मिट्टी का कोरा बर्तन होगा, घर की सीढ़ियां टूटी हुई होंगी, परपुरुष से संबंध रखेंगी तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपका धन रोग-बीमारी में बहुत खर्च होगा। गुप्त रूप से तबाह होती रहेंगी। कुछ हानिकारक समय आ सकता है। आपको काफी सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए अन्यथा जेल भी जाना पड़ सकता है। अस्पताल, वीरान अथवा घर से बाहर समय बिताना पड़ सकता है। नौकरी या व्यवसाय में अचानक बाधा आ सकती है। आय में आधे की क्षति हो जाएगी जो समझ में नहीं आएगी। दंत या नाड़ियों में बीमारी हो सकती है। पति का मारक योग या दो विवाह योग है। धन-दौलत भी खतरे में पड़ सकती है। स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। 16 से 21 वर्ष तक की आयु का समय एकदम बेकार रहेगा। 32 से 34 वर्ष तक की आयु में धनाभाव के कारण आय स्रोत में रुकावट ही होगी। उम्र के 34 वर्ष तक अच्छा विकास नहीं होगा। धन-सम्पत्ति पर बुरा असर पड़ेगा। आलस्य के कारण उल्टा प्रभाव पड़ेगा और आर्थिक नुकसान होगा। जीवन में दीमक लग जाएगा अर्थात् आपके सुख के साधन खराब हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. लाल, गुलाबी, महरुन रंग के कोरे कपड़े न रखें।
2. घर में धर्म स्थान की जगह न बदलें।

उपाय :
1. वर्षा का पानी छत पर रखें।
2. काला अंडरवियर पहनें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको पिता/ससुर का सहयोग प्राप्त होगा। भाई आपके मदद्गार हो सकते हैं और उनसे लाभ भी होगा। कारोबार में भाई का साथ भाग्य जगाता है। आपके जीवन में 16 वर्ष से 28 वर्ष तक आपका भाग्य खूब साथ देगा। आपके भाग्य से ससुराल वालों को बहुत लाभ होगा आपको धन-संपदा प्राप्त होगी। आप गरीबों की मदद करेंगी तथा धर्म में विश्वास रखेंगी, तो आपका भला होगा। पिता/ससुर की उम्र तक आपकी हालत अच्छी रहेगी। आपको लाभ तो होगा परंतु आप कर्जदारी में भी रहेंगी। सरकारी कामों से संबंधित कमाये धन में बहुत बरकत होगी। आपके जीवन में आमदनी के और भी कई रास्ते हो सकते हैं। आप दूसरों की मदद्गार होंगी आप अपनी आमदनी का अपव्यय भी कर सकती हैं या आप अपने धन को संभाल कर नहीं रख सकेंगी। आपकी दोस्ती से दूसरों को लाभ मिलेगा। आप अपने भाई-बंधुओं, दोस्तों के साथ अच्छा व्यवहार रखेंगी। आप अपनी किस्मत पर भरोसा नही करेंगी। आपकी मौत शान और सम्मान से होगी।

यदि आपने पूजा स्थान घर में रखा, चाल-चलन खराब किया, घर में या घर के पास सूखा पीपल का वृक्ष हुआ तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से पिता/ससुर की मृत्यु के बाद कोई सहायता नहीं करेगा। आप परिवार के साथ रह कर सुखी परंतु अकेले रहने में दुःखी रहेंगी। आप की आखों की नज़र कमजोर हो सकती है। बुढ़ापे में आपकी किस्मत ढीली हो जाएगी। परिवार कितना बड़ा हो मगर कफन पराया मिले ऐसा शक है। आप शराब बीयर आदि न पीएं वरना आपके पास धन नहीं टिकेगा। पिता/ससुर की मौत के बाद आपके भाग्य पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. अण्डे न खावें।
2. पूजा स्थान घर में न रखें। धर्म मंदिर में पूजा करें।

उपाय :
1. पीला रुमाल पास रखें।
2. लावारिस लाश को कफन दान देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र सातवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से यह खुलासा हो रहा है कि आपकी माता/सास और पति में मां-पुत्र जैसा प्यार रहेगा। आपके घर में माया का अच्छा प्रभाव रहेगा। लक्ष्मी की बरकत कभी भी कम नहीं होगी। आपकी पच्चीस वर्ष की उम्र तक ही परेशानी रहेगी। इसके बाद समय जीवन भर सुख पूर्ण रहेगा। आपके कमाए हुए धन से पति पक्ष को लाभ होगा। आप विवाह में उपयोगी चीजों का कार्य, जैसे टैंट हाउस, ब्यूटी पार्लर, रेडिमेड गारमेंट्स चलाएं तो अच्छा लाभ होगा। आपको कृषि योग्य जमीन भी मिलेगी। आपका अच्छा भवन एवं वाहन सुख मिलेगा। काले पुरुष से लाभ होगा। 37 वर्ष की आयु तक पति सुख खूब मिलेगा। आपको जद्दी घर से दूर समुद्र की यात्रा द्वारा कमाई होगी। आपके अपने जन्म स्थान के शहर/गांव में रहकर अधिक लाभ नहीं मिलेगा। आप संसार में कहीं भी रहें मरने के समय जद्दी घर पर वापस आ जाएंगी।

यदि आपके पति का रंग गोरा हुआ, भाई/देवर के साथ साझेदारी की, चाल-चलन खराब रखा तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपके काम धंधे में भाई-बंधु, यार-दोस्त आपकी संपत्ति को लूटते रहेंगे। आपके कारोबार में यही लोग रुकावट डालेंगे। ससुराल वालों को कारोबार में साथ न रखें। वैवाहिक संबंध में तथा संतानोत्पति में गड़बड़ी रह सकती है। चमड़े के पर्स में रुपये-पैसे न रखें। आपके पति और आपकी माता की नहीं बनेगी या वह ग्रहचाल के कारण इकट्ठे नहीं रह पायेंगे। परपुरुष से इश्क के बुरे असर होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सफेद गाय की पालना या सेवा न करें।
2. बिल्ली की जेर चमड़े के पर्स में न रखें।

उपाय :
1. बिल्ली की जेर कंबल के टुकड़े में रख कर अपने पास रखें।
2. कांसे का बर्तन दहेज में जरुर लेवें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के चौथे खाने में शनि पड़ा है, जिसकी वजह से आपका जीवन सुखी रहेगा। आप पुरुष और प्रेम संबंधों से घिरी रहेंगी, परंतु जवानी के बाद कामवासना से परहेज और धार्मिक विचारों की प्रवृत्ति हो जाएगी। सेहत खराब के समय शराब दवा के रूप में काम करेगी। आपके रिश्तेदार आपकी सहायता करेंगे। माता/सास या पिता/ससुर में से एक का सुख बहुत लंबे समय तक मिलेगा। दूसरे पुरुषों के आगे-पीछे भागना, आपके अपने पति के लिए बुरा असर करेगा। घर से दूर विद्या पढ़ें तो अधिक लाभ होगा।

यदि आपने किराये के मकान में रिहाईश की, मकान में काले कीड़े निकले, सांप का तेल बेचना शुरु किया, मादक चीजें बेचीं तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप क्रोधी, धूर्त, पानी के सांप जैसा स्वभाव होगा, आपको मकान-जायदाद का सुख कम ही मिलेगा। कभी बीमारी के चक्कर में पड़ जाएं तो शनि की चीजों का प्रयोग करें। माता/सास दुःखी रहेंगी या माता/सास के लिए कष्टकारक समय होता है। विधुर पुरुष से अनैतिक संबंध रखने पर खर्च करने से कंगाल हो जाएंगी। शराब पीने से शुभ प्रभाव नष्ट हो जाएगा। पेट में खराबी तथा विकार रहेंगे। आपकी जायदाद पर दूसरों का कब्जा हो सकता है और आप पर लांछन लगेगा। आपके पति आपके कारण दुःखी रह सकते हैं या आपको पति सुख में कमी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. हरा रंग हानिकारक है।
2. काला कपड़ा न पहनें।

उपाय :

1. कुएं में दूध डालें।
2. मछली-भैंस-कौवे को भोजन का हिस्सा खिलायें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप सर्वगुण संपन्न, धनवान, और आयुवान होंगी। आप तीर्थ यात्रा करेंगी। आप एक भद्र महिला होंगी तथा अपना जीवन सुख से बितायेंगी। आप अपार धन-संपत्ति की मालकिन बनेंगी। आपको अपने सगे संबंधियों से भी धन-दौलत प्राप्त होगा। आप दूसरों की भलाई करेंगी आप भली महिलाओं की गिनती में गिनी जाएंगी। आप धर्मात्मा, वाहन सुख से युक्त होंगी। आप अपनी बहन और पुत्री पर धन खर्च करेंगी। आपको ससुराल से भी धनागम होता रहेगा। आपको सरकार पक्ष से पूरा लाभ होगा तथा अपने बुजुर्गों का घर भर देंगी। ससुराल में भी धन की वृद्धि होगी। आप के पास 24 वर्ष की उम्र के बाद धन एकत्र होगा, गरीबी दूर हो जाएगी और धन की वर्षा होगी। आपके पिता/ससुर और आपके पुत्र पर अच्छा असर पड़ेगा परंतु माता/सास के लिए अशुभ होगा। आपके पास भूमि, भवन, वाहन सभी प्रकार के सुख के साधन उपलब्ध होंगे। यदि आप सरकारी महकमे में कार्यरत होंगी तो सरकारी महकमे में बड़ी अफसर होकर अच्छा ओहदा प्राप्त करेंगी। आप जन्म भर सुखी रहेंगी। बंदूक-पिस्तौल आदि रखने का शौक होगा।

यदि आपने पाखाने की जगह बदली, घर की छत पर लकड़ी के कोयले रखे, सीढ़ियों के नीचे रसोई बनाई, पिता की आयु के पुरुषों से संबंध रखे तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके जीवन का 34वां वर्ष कष्टकारी होगा। माता/सास को कष्ट की आशंका है। आप माता/सास का विरोध

करेंगी। ससुराल-ननिहाल के लिये अशुभ रहेगा, राजदरबार में हानि, दो विवाह योग या पति के साथ परपुरुष से संबंध रहे, ऐसी शंका है। पर पुरुष पर धन बर्बाद करके अपना जीवन नष्ट कर लेंगी। आपको वाहन दुर्घटना का भय रहेगा। दिन में स्वप्न देखने वाली होंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. पिता समान आयु के पुरुष से अवैध संबंध स्थापित न करें।
2. गंगा नदी में स्नान न करें।

उपाय :

1. घर पर गंगा जल से स्नान करें।
2. सूखा धनिया जल प्रवाह करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान, नौकर-चाकरों से युक्त, उत्तम सुख से परिपूर्ण तथा अपने पथ पर अग्रसर रहने वाली होंगी। आप इतने अच्छे मुकद्दर की हैं कि आप मिट्टी छुएं तो सोना हो जाता है। 24 वर्ष की उम्र के बाद संतान प्राप्ति योग होगा। आपकी कन्या संतान से सुख और पुत्र संतान से मध्यम सुख संभव है। आपको पुत्र का सुख प्राप्त होने की आशंका है। आप खेल जगत में विश्व प्रसिद्ध बन कर ख्याति प्राप्त कर सकती हैं। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी। निर्धनता कभी भी नहीं आएगी। आप शक्की स्वभाव की हैं। आपके जीवन में 48 वर्ष आयु तक समय तो मिला-जुला फल देगा। इसके बाद का समय बहुत ही शुभ और सुखकारक सिद्ध होगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर कोई विशेष बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। कुल मिला-जुला कर आपका जीवन सुखमय ही रहेगा।

यदि आपने अपने भाई से झगड़ा किया, परपुरुषों से अनैतिक संबंध रखे तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से आपका चाल-चलन ढीला हो तो पुत्रियां अधिक होने की संभावना रहती है। निःसंतान या संतान गोद लेने का योग होता है और जिससे आपको बहुत ही पीड़ा भोगनी पड़ सकती है। आपके भाई आपको गढ्ढे में धकेल सकते हैं या आपके धन का दुरुपयोग करेंगे। पराये पुरुष से संबंध आपके दांपत्य सुख में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपके जीवन के लिए घातक और मौत का कारण सिद्ध हो सकते हैं। 48 वर्ष के लगभग पुत्र सुख मिले या माता/सास की आंखें खराब होने पर या माता/सास की मौत के बाद पुत्र जन्म हो ऐसी संभावना है। धन का अपव्यय या अवनति होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. कुत्तों से नफरत न करें।

उपाय :

1. मकान की नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।
2. घर में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु नवम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि नवम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वादश भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि लग्न स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वादश भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। वर्ष के शुरुआत में सप्तम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप व्यापार में उन्नति करेंगे। अनुभवी लोगों कह सलाह अवश्य लें। व्यापार में आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या बिरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें अन्यथा परिणाम प्रतिकूल होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों व पत्नी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद राहु एवं गुरुग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपको कोई बड़ा निवेश न करें। यदि निवेश करना अत्यधिक जरूरी हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों से परामर्श लेकर निवेश करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। व्यवसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे।

मई के बाद गुरुएवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपनी वौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि विवाह योग्य है तो विवाह हो सकता है। मई के बाद समय प्रभावित हो रहा है, अतः उस समय उन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। किसी प्रकार की कोई चिंता परेशानी न होने के कारण आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आप अपने शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे।

मई के बाद आपका समय थोड़ा प्रतिकूल हो रहा है। उस समय छोटी-मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। द्वादशस्थ गुरुके पृथ्वी तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक रोग या मौसम जनित बीमारियों से परेशानी उत्पन्न हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगी। पंचम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए शुभ है। यदि उत्तम शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ शुभ है।

मई के बाद आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल रोजगार प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु मई के बाद द्वादश स्थान के गुरु विदेश यात्रा करा सकते है।

नवम स्थान के शनि आपको लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की उनकी जन्मभुमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। मई के बाद गुरुग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान

पुण्य, भण्डारा इत्यादि धार्मिक कार्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरुव मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली वस्तुएं जैसे दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- दुर्गा बीसा कवच अपने गले में धारण करें एवं राहु मन्त्र का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेंगे। परन्तु अल्प मात्रा में शुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता भी रहेगी। साथ ही शत्रु पक्ष भी प्रबल रहेगा एवं आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेगा जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है जिससे आपको सतर्क रहना चाहिए। आपको इस समय अपने उच्चाधिकारियों की आज्ञा का नम्रता पूर्वक पालन करना चाहिए अन्यथा उपेक्षा करने पर वे आपको दण्डित भी कर सकते है। आप के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में कम ही सफल होंगे तथा असफलता ही अधिक प्राप्त होगी। साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ सकता है। इस मास में बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप पति या पुरूष वर्ग से सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा अपनी बुद्धिमता के द्वारा आप धनार्जन करेंगी एवं मध्यम रूप से सुखार्जन करने में भी सफल रहेंगी। अतः सावधानी एवं शान्ति पूर्वक अपने इस मास को व्यतीत करें।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों को अल्प तथा अशुभ फलों को अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय पति तथा पुरूष वर्ग से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी।साथ ही आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे तथा आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे अतः इनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस मास में आपके उत्साह में भी न्यूनता आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही आपको अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी जिससे मानसिक रूप से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। आपका स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी फलतः समाज से भी आप उपेक्षा का सामना करेंगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा आपस में मनमुटाव रहेगा इसके साथ ही मित्र भी इस समय शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में अन्य जनों से भी वाद विवाद होता रहेगा। अतः संयमपूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। अतः आप पुरूष वर्ग से लाभ तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा परिश्रम से आप धन तथा सुख भी अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा समाज में प्रतिष्ठा

अर्जित करने में आप सफल रहेंगी।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अल्प तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय शत्रुओं से आप पराजित रहेंगी तथा उनसे आपको भय तथा चिन्ता रहेगी। साथ ही घर में भी किसी प्रकार की चोरी की संभावना बनी रहेगी।अतः सावधान रहने की आवश्यकता होगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः धनाभाव से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा।साथ ही आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी जिससे शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। इस मास में आप दूर समीप की यात्रा भी कर सकती हैं। साथ ही आपके सांसारिक महत्व के कामों में व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे तथा इनमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप खिन्न तथा बैचेन रहेंगी। इसके साथ ही मुकद्दमे आदि में भी आप का धन व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः बुद्धिमता एवं संयम पूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में समय समय पर शुभ फल भी मिलते रहेंगे। अतः आप उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ तथा सहयोग अर्जित करेंगी एवं अपने महत्वपूर्ण कार्यो को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त किसी नवीन वस्त्र की प्राप्ति या द्रव्यार्जन करने में भी आप सफल हो सकेंगी।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप सौभाग्यशाली रहेंगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगी। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा उच्चाधिकारी वर्ग एवं सामाजिक जन आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सहयोग भी प्राप्त करेंगी। इस मास में आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती है। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधि पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी।संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगी एवं बुद्धि में भी निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी जिससे आप के शुभ कार्य यथासमय सिद्ध होंगे।साथ ही भाग्योदय संबधी कार्य भी इसी समय पूर्ण होंगे। इस समय आपकी लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके यथोचित मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इस प्रकार सर्वत्र आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा अपने बुद्धिबल से वांछित धन एवं सुख भी प्राप्त करेंगी। धर्म के प्रति भी श्रद्धालु रहेंगी तथा समाज में आप एक सम्माननीया महिला समझी जाएंगी।

मई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्यक्षेत्र में मनोवांछित सफलता प्राप्त करेंगी साथ ही इसमें आपको लाभ तथा उन्नति भी मिलेगी। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आपके शुभ एवं महत्पूर्ण कार्य अल्प समय में सिद्ध होते रहेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगी एवं उनकी भलाई के कार्यो में भी तत्पर रहेंगी। आपके शुभ कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप श्रद्धा का भाव रखेंगी तथा विधिपूर्वक इनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस मास में समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप धन अर्जित करेंगी तथा आपकी अपूर्ण इच्छाएं भी इस समय पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि भी निर्मल रहेगी एवं धर्म के प्रति भी आप श्रद्धालु रहेंगी। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

जून 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में अर्जित करेंगी परन्तु अशुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय पति तथा पुरूष वर्ग से आप पूर्ण सहयोग एवं लाभार्जित करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप मनोवांछित लाभ एवं सम्मान प्राप्त करेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा मन भी प्रसन्न एवं शान्त रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आपके मन में इच्छा उत्पन्न होगी एवं इसमें आप सफलता प्राप्त कर सकती है। बन्धुजनों एवं मित्रों से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे इचिछत लाभ एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस मास में आप वांछित द्रव्य पदार्थ भी प्राप्त करेंगी एवं उनके उपभोग से प्रसन्न रहेंगी ।संतति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगी तथा आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप गर्मी तथा पित द्वारा उत्पन्न दोषों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा रूधिर विकार से भी पीड़ित हो सकती है। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से आप कमजोर रहेंगी। साथ ही आप दुष्ट जनों की संगति प्राप्त करेंगी जिससे आपको कष्ट होंगे। आपका स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। अतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी तथा मन से भी आप अशान्त तथा

असन्तुष्ट रहेंगी। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आप उपेक्षा का भाव रखेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि होने की संभावना बनी रहेगी। इस समय बन्धु एवं मित्रों से आपके तनाव पूर्ण संबध रहेंगे। साथ ही जिस कार्य को इस मास में प्रारम्भ करेंगी उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी। इस प्रकार यह समय आपके लिए सामान्यतया कष्टदायक ही रहेगा।

साथ ही इस मास में यदाकदा शुभ फलों की भी आपको प्राप्ति होगी। अतः आप पति एवं पुत्र से सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस मास में आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी प्राप्त करने में सफल हो सकती हैं।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फल अधिक तथा अशुभ फल अल्प मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी फलतः आपके शत्रु आपसे पराजित तथा भयभीत रहेंगे तथा अन्य लोग भी आपका सम्मान करेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी अतः आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। साथ ही नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्यत्र भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। इस मास में आपके भाग्योदय संबधी कार्य सम्पन्न होंगे तथा कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होगा जिससे आप अत्यंत ही प्रसन्नता प्राप्त करेंगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे वांछित सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आपके अधिकाशं सांसारिक कार्य इस समय सम्पन्न होंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। फलतः कार्य क्षेत्र में आपकी उन्नति होगी एवं लोगों से यथोचित सम्मान प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे। अतः आप वातोत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगी एवं किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे आपके सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी अल्प मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धन अर्जित करने में सफल रहेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी ।साथ ही आपको समाज से भी पूरा यश तथा सम्मान प्राप्त होगा। बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे उचित सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आश्रय भी मिलेगा जिससे आप उनसे पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। मिष्ठान के प्रति आप

विशेष रूचिशील रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगी। इस समय शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगी तथा वे आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापारादि अन्य कार्यों के द्वारा भी आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से अस्वस्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप किंचित हानि प्राप्त कर सकेंगी। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए ।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों को प्राप्त करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगी। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा विभिन्न प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगी। साथ ही सामाजिक जनों से आप यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा एवं विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करती रहेंगी। साथ ही अन्य सामाजिक जनों की भलाई के कार्यो में भी आप तत्पर रहेंगी। आपका स्वास्थ्य भी इस समय उत्तम रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग लाभ तथा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे यथोचित सुख तथा सहयोग प्राप्त करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मनोवांछित संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा उनकी ओर से निश्चिन्त रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप नवीन वस्त्र या स्वर्णादि के आभूषण की भी प्राप्ति कर सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता रहेगी।साथ ही आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे फलतः उनकी ओर से भी आप चिन्तित तथा भयत्रस्त रहेंगी जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा अप्रसन्न रहेंगी। इस समय आपके घर में किसी प्रकार की चोरी होने की भी संभावना रहेंगी अतः सतर्क रहना चाहिए। इस मास में आपके व्यापार या कार्य क्षेत्र में मन्दी रहेगी तथा अनावश्यक रूप से विघ्न बाधाएं उत्पन्न होंगी। इसके साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है या कोई कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य जनों के साथ आपका परस्पर विवाद एवं संघर्ष भी होता रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त इस मास में धन हानि की भी संभावना रहेगी तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

इसके साथ ही इस मास में आप गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगी तथा रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः सावधानी एवं बुद्धिमतापूर्वक इस मास में अपना समय व्यतीत करें तथा शारीरिक सुरक्षा का पूर्ण ध्यान रखें।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आप अपनी बुद्धिमता से ही सम्पन्न करने में समर्थ रहेंगी। इस मास में आपको विविध प्रकार के द्रव्यों की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। साथ ही ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी जिसमें आप सफलता प्राप्त करेंगी। इस समय आपके प्रभुत्व में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को ससम्मान स्वीकार करेंगे।साथ ही आपके अधिकांश शुभ कार्य सिद्ध होंगे तथा कहीं से शुभ समाचार की भी आपको प्राप्ति होगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप विधिपूर्वक पूजन तथा सेवा करेंगी। इस मास में सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी एवं मन से आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से वांछित सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी। इस समय अपनी बुद्धिमता के द्वारा आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषप्रद रहेगी। इस प्रकार आपका यह मास अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

02 जून के बाद समय अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान का गुरु नयी विचारधारा नयी योजनाओ को जन्म देगा जिसका लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यरहेगा।द्वादश स्थान केगुरु धनागम में रूकावट उत्पन्न करेंगे। जिससे आर्थिक उन्नति में कमी हो सकती है। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है, परन्तु आपको मातुल पक्ष से लाभ होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको रूका हुआधन वापस मिल सकता है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा या आर्थिक स्थिति को सुधारने में इनका पूर्ण सहयोग होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधा पर भी पैसा खर्च करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह

के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपके परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत उत्तम रहेगा। अष्टम स्थान का राहु ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद करा सकता है।

02 जूनके बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपकेसम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान कीदृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थगुरुपर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएंहो सकती हैं।आपके बच्चों का स्वास्थ्य व शिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है। अतः उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

02 जून के बाद गुरु के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है। तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केगुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को अधिक परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के वायु तत्व राशि में होने के कारण संक्रमण, सांस व पेट संबंधित बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है।

02 जून के बाद गुरु का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारिरीक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा रहेगा।षष्ठ स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को मनोनुकूल सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को वर्षारम्भ में नौकरी मिल सकती है।

02 जून केबाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है। द्वादशस्थगुरु विदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होगी।

02 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी दर्शा रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थगुरुएवं नवमस्थ शनि के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। 02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आपगुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। मन्त्र जाप कर आध्यात्मिक शक्ति को बढाएंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी तथापि न्यूनाधिक रूप से शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा जिससे शरीर में दुर्बलता रहेगी साथ ही शत्रुपक्ष से अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। अतः इनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी एवं मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगी। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें तथा उनकी आज्ञा का विनम्रता पूर्वक पालन करें अन्यथा आप दण्डित भी हो सकती हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम करने से भी सफल नहीं होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक कष्ट का भी सामना करना पड़ सकता है। साथ ही इस मास में आपके द्वारा कोई ऐसा कार्य हो सकता है जिसके लिए पश्चाताप करेंगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा आपस में मन मुटाव रहेगा अतः संयम पूर्वक समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगी। इससे आप पति के द्वारा पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ होंगी तथा अपने बुद्धि चातुर्य से पर्याप्त मात्रा में धन तथा सुख भी प्राप्त कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में न्यूनाधिक रूप से आपकी प्रतिष्ठा भी विद्यमान रहेगी।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभफल कम तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय पति तथा बन्धुजनों से आप कष्ट प्राप्त करेंगी या उन्हें किसी प्रकार की कष्टानभूति होगी। इस मास में शत्रुपक्ष के प्रबल होने से आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आप आर्थिक रूप से कमजोर रहेंगी। इससे आप मानसिक रूप से अशान्त तथा उद्विग्नता की अनुभूति करेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रवर्ग से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा। साथ ही ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से भी आपके मतभेद रहेंगे। अतः संयम एवं बुद्धिमानी से अपने समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य आप शुभ फलों की प्राप्ति करने में भी सफल रहेंगे। इस समय आप श्रेष्ठ जनों तथा उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करेंगी। साथ ही अपने कार्य क्षेत्र में भी उन्नति को प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी प्राप्त कर सकती हैं। जिससे आपको प्रसन्नता की अनुभूति हो सकेगी।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय शत्रु वर्ग से आप चिन्तित रहेंगी एवं आपके लिए वे अनावश्यक व्यवधान तथा समस्याएं उत्पन्न करते रहेंगे। साथ ही इस मास में आपके घर में कोई चोरी भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम के पश्चात भी अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे। इस समय आपका धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। अतः आर्थिक दृष्टि से भी आप कष्ट की अनुभूति करेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में अल्प श्रद्धा का भाव रहेगा एवं देवता तथा ब्राहमणों का आप उचित पूजन तथा सम्मान कम ही करेंगी। शरीर से भी आप अस्वस्थ रहेंगी तथा कई प्रकार से कष्टानुभूति कर सकती हैं फलतः शरीर में दुर्बलता रहेगी। इस मास में आपकी दूर समीप की यात्रा भी सम्पन्न हो सकती है। इस समय आप पारिवारिक कार्यो को पूर्ण करने में भी असफल रहेंगी तथा मुकद्दमे आदि में धन का व्यय होगा। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगी।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगी। इससे आप पति से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी एवं अपनी बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करके प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी। अतः आप अल्प मात्रा में ही सुखों का उपभोग करेंगी तथा प्रसन्न रहेंगी।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्य में वृद्धि करने वाला होगा। इस समय आप पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्न रहेंगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। फलतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। इस मास में आपके घर में किसी धार्मिक उत्सव के आयोजन की भी संभावना रहेगी। संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा एवं देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके हृदय में अनन्य श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियमपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आप यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही आपकी लाभदायक यात्रा के भी योग बनेंगे। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा एक दूसरे से आप इच्छित सहयोग प्राप्त करेंगी। इस प्रकार से समाज में सभी लोगों से आप हार्दिक सम्मान प्राप्त करेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से प्रचुर मात्रा में धन तथा सुखों को अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में रूचि शील रहते हुए समाज में पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी तथा अशुभ फल अल्प मात्रा में ही होंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति होगी तथा समाज से आप यथोचित सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस मास में आपके उच्चाधिकारी भी आपसे पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे फलतः आपके अधिकांश शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य इसी समय सम्पन्न हो जाएंगे एवं इनसे आप इच्छित लाभ भी अर्जित करेंगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में अनन्य श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए उद्यत रहेंगी। संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगी तथा समाज एवं परिवार के मध्य आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अलावा इस मास में आपके मानसिक संकल्प भी सिद्ध होंगे जिससे आप प्रसन्न तथा शान्त रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। अतः आप गर्मी या पितोत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा रूधिर विकार की संभावना रहेगी। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा आनन्दपूर्वक इसे व्यतीत करेंगी। इस समय पुरूष वर्ग से आप पूर्ण लाभ अर्जित करेंगी तथा सौभाग्य से युक्त होकर अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा तथा वे आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उतम रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगी एवं इसमें सफलता प्रप्त करेंगी। मित्रों तथा बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। साथ ही आपको इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति होंगी। संतति पक्ष से आप पूर्ण सुखी रहेंगी एवं उनसे पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी। इस मास में समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस समय आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगी। इस मास में आपको नवीन वस्त्रों या स्वर्णादि के आभूषणों की प्राप्ति भी हो सकेगी। अतः सुख पूर्वक आपका यह समय व्यतीत होगा।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में होंगे। इस समय आप धन व्यय अधिक मात्रा में करेंगी तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति प्राप्त करेंगी। साथ ही आपके पास धनाभाव भी रहेगा। आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्ट की अनुभूति करेंगी। इस समय मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा

अप्रसन्न रहेंगी। इस मास में आपके शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम करने पर भी सफल नहीं होंगे तथा असफलता ही आपको मिलेगी। धर्म के प्रति भी आप में उपेक्षा का भाव रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप यथोचित सम्मान नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपके धन हानि के योग बनेंगे। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे न ही उनसे वांछित सहयोग प्राप्त होगा। इस समय कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी। आपके शत्रु भी इस समय बलवान रहेंगे तथा उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगी उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में आप ठंड या वातोत्पन बीमारियों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे समाज में आपके सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अलावा अग्नि से भी आप किसी प्रकार की क्षति प्राप्त कर सकती है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मन से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष को पराजित,चिन्तित तथा भयभीत करने में सफल रहेंगी। इस मास में आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा अपनी आर्थिक स्थिति को बल प्रदान करेंगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य सम्पन्न होंगे तथा आपके रूके हुए कार्य भी बनेंगे। साथ ही अपने मित्र एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही आपके सभी कार्य पूर्ण होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता होगी इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे तथा आपको इछित लाभ तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी होंगे। अतः आप शीत से उत्पन्न होने वाले रोगों से शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगी। इस समय आप आग के द्वारा भी न्यूनाधिक क्षति प्राप्त कर सकती हैं। अतः सावधानी पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी तथा सामाजिक जनों से यथोचित प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगी। इस समय आपके परिवार तथा अन्य मित्र जनों से मधुर संबध रहेंगे तथा उनके मध्य आप सम्माननीया रहेंगी। इस मास में सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको विशेष सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा फलतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आसानी से यथा संभव सिद्ध हो जाएंगे। इससे मानसिक रूप से आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा फलतः शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि

होगी। इस समय आपके शत्रु भी आपसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। मिष्ठान भक्षण में इस मास में आप विशेष रूचि का प्रदर्शन करेंगी। साथ ही पति से आप पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा गृहस्थ जीवन भी सुख पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त व्यापारादि कार्यो से भी आप प्रचुर मात्रा मात्रा में धनार्जन करके आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करेंगी।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा पति का पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगी तथा इनकी ओर से किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रहेगी। इसके अतिरिक्त इस समय आपको नवीन वस्त्र या स्वर्णादि के आभूषण की प्राप्ति भी हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा खुशी प्रदान करने वाला होगा।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी अल्प मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आप अपने पराक्रम के द्वारा धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी तथा विविध प्रकार से सांसारिक सुखों का भी प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथा योग्य सम्मान प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा एवं विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी साथ ही समाज के अन्य लोंगो की भी भलाई करती रहेंगी। उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आश्रय तथा सम्मान प्राप्त होगा एवं आपके शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः आप मानसिक रूप से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी से उत्पन्न होने वाले रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगी तथा रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा का इस मास में पूर्ण ध्यान रखें तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त कर सकती हैं। साथ ही शत्रुपक्ष भी इस मास में बलवान रहेगा अतः इनसे भी आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इस मास में आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्य में व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन होगा या कोई कार्य छूट भी सकता है। इसके साथ ही समाज में अन्य लोगों से आपके विशेष मधुर संबध नहीं रहेंगे एवं आपस में विवाद तथा वैमनस्य का भाव रहेगा। इस समय आपकी धन हानि की भी संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता हैं। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को संपन्न करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ काथ अल्प मात्रा में शुभ फल भी होंगे। अतः आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपने बुद्धि चातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी एवं सुख की भी अनुभूति करेंगी। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप न्यूनाधिक सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग भी प्राप्त करेंगी। साथ ही द्रव्य पदार्थो को अर्जित करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। इस समय समाज के सभी वर्गो में आपका प्रभुत्व बढेगा एवं लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे। साथ ही आपके शुभ कार्य भी इस मास में पूर्ण होंगे तथा कहीं से आपको शुभ समाचार भी प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप श्रद्धालु रहेंगी एवं निष्ठा पूर्वक उनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा समाज में आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा रहेगी एवं आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी एवं अपनी तीव्र बुद्धि से प्रचुर मात्रा में धन तथा सुखों को प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त धार्मिक कार्यो में भी आप रूचि शील रहेंगी तथा अपने सत्कार्यो से समाज में सर्वत्र प्रतिष्ठा एवं सम्मान अर्जित करने में सफल रहेंगी।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि नवम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं नवम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष सप्तम भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़िया रहेगा। व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से नयी योजनाओं से लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं। आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। आप कम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा।

साझेदारी में काम करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है। 26 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियो की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा, आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। रूके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी पत्नी के स्वास्थ पर भी धन का व्यय हो सकता है।

26 नवम्बर के बाद सामाजिक कार्यो में व धार्मिक कार्यो में पैसा खर्च कर सकते हैं। भाइयों या ससुराल पक्ष से भी धन लाभ हो सकता है। अचानक धन लाभ होने के भी योग बन रहे है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से जीवनसाथी कास्वास्थ्य खराब हो सकता है।

26 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिता के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद आपके सामाजिक मान संमान में और बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

संतान के लिये वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। विवाह योग्य है तो विवाह हो जाएगा।

26 नवम्बर के बाद दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। मन में अच्छे विचार आएंगे व आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे और प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसम जनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 26 जून के प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त हो सकती है। तकनीकी शिक्षा के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी। 03 जून के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहें है।

आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रूचि बढ़ेगी जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आप का अटूट विश्वास रहेगा। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 26 जून के बाद मन्त्र सिद्धी व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रुझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन राहु ग्रह का दान आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। भाइयों का सहयोग मिलेगा। सप्तम स्थान के राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं परन्तु आप उसे भी अपने बौद्धिक बल से अनुकूल बना लेंगे।

24 मई के बाद व्यवसाय में सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो 24 जुलाई के बाद अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आमदनी के नये स्रोत मिलने कि उम्मीद है। अनुभवी व्यापारिक एवं वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे। आपका मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। आप बचत करने में सफल रहेंगे। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकते हैं।

फरवरी के बाद आपको रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पिता का अहम सहयोग होगा। मातुल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा। मांगलिक कार्यों में भी पैसे खर्च हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ-चढ कर भाग लेंगे। फरवरी के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय शुभ है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा चल रहा है यदि बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी।

राहु ग्रह के गोचर के साथ आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। यदि पहले से किसी बीमारी से ग्रसित हैं तो उससे छुटकारा मिल सकता है। छठे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए सामान्य रहेगा। आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि शिक्षा की दृष्टि से उत्तम है।

24 मई के बाद षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों को ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से लम्बी यात्राएं व तीर्थ यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि, नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है, जिसके कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में आकृष्ट होगा। आप गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। समय समय पर गरीबों की सहायता भी करेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में बांट दें।
- दुर्गाजी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।
- गौ सेवा करें या गौशाला में चारा दान करें।

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। बड़े अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण सारे विरोधी शान्त होंगे। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए अति उत्तम रहेगा। व्यवसाय में उन्नति के लिए नये-नये तरीके अपनाएंगे व सफल भी होंगे। आपको लाभ मिलता रहेगा। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की अच्छी उन्नति होगी। छठे स्थान का राहु आपको ब्राण्ड नेम भी दिला सकता है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख सुविधा पर आप अधिक खर्च करेंगे। आय के स्रोत और उत्तम होंगे। निवेश के लिए समय अच्छा चल रहा है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की स्थिति पैतृक सम्पत्ति प्राप्ति के योग बना रही है। अचानक धनागम का योग बनेगा जिससे आर्थिक स्थिति सुधरेगी।

08 अगस्त के बाद आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। इस समय के अंतराल में आपका रुका हुआ या फंसा हुआ पैसा भी मिल सकता है। इस अवधि में वसीयत प्राप्त होने की भी संभावना बन रही है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। यदि कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

तृतीयस्थ मंगल के प्रभाव से सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप

अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। माता-पिता के साथ भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। उच्च शिक्षा के लिए समय उत्तम नहीं है परन्तु प्रतियोगिता परीक्षा में आप सफल होंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

आपके बच्चों का किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे की उन्नति होगी। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छठे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ा रहे हैं जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते है, तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी।

इस समय के अंतराल में आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आगे रहेंगे। अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में और अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अहं भाव ना आने दें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

29 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। 05 अक्टूबर के बाद तीर्थ यात्रा या परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बढ़ेगी। किसी तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं तो उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें, अन्यथा उसमें व्यवधान आ सकता है। 25 अगस्त के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष आयोजन कर सकते हैं जैसे- भगवती जागरण, माता की चौकी इत्यादि।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं और केतु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। फरवरी से आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने काम को पूरा करके ही रहेंगे

17 अप्रैल से समय व्यावसायिक स्तर आपके लिए बेहतर होने वाला है। आपको पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। भले ही गुरु एवं राहु की युति थोड़ी अड़चने देगी किन्तु सफलता आपके कदम चूमेगी। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आय भाव पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। 04 फरवरी से आपकी आर्थिक उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। वित्तीय मामलों में आपको निराशा हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। आपकी राह में अवरोध उत्पन्न किया जा सकता है। जोखिम भरे कार्यो में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं।

01 मई से आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे यह समय आपके लिए लाभकारी रहेगा। यदि अनपेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिए मत अपितु उसका लाभ उठाएं। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी मौके आएंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। परिवार के प्रत्येक मसले पर आपको बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है।

मई से समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा, क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो परिवार के लिए हितकर होंगे। परिवार के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान में गुरु चण्डाल योग संतान हानि का योग बना रहा है।

गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। अप्रैल के बाद सन्तान के लिए समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य रहेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप आलसी हो जाएंगे और आपके रवैये में भी परिवर्तन आएगा। आपको अपने खान-पान और दिनचर्या पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है ताकि आप इस तरह की भावनाओं से बच सकें। आपके जीवन में इस साल कुछ अच्छे पल भी आएंगे किन्तु ऐसा भी समय आएगा जब आप अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन से सम्बंधित चिंताओं से घिरे रहेंगे

स्वस्थ रहने के लिए आप योग और ध्यान का सहारा लें और प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएं। स्वास्थ्य को लेकर यह साल वैसे तो आपके लिए ठीक-ठाक ही रहेगा लेकिन अपने खान-पान को लेकर सतर्क रहें। पंचम स्थान में गुरु एवं राहु की युति उदर रोग दे सकती है। अतः मसालेदार या तली हुई वस्तुओं का सेवन कम से कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रथम मास श्रेष्ठतम रहेगा परन्तु 04 फरवरी के बाद से समय प्रभावित हो रहा है। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। विदेश यात्रा के भी प्रबल योग बन रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र भी ले सकते हैं और उस मन्त्र की साधना भी कर सकते हैं। पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा भी करेंगे। अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं और महालक्ष्मी मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- राहु ग्रह का दान करें और उसके मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा आप व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप अपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम पर ध्यान देंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। बस आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। चतुर्थ मंगल के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

09 अगस्त के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अपने अनुभवों से आपका खुद का विकास होगा। आपका धैर्य आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए थोड़ा चिंताजनक हो सकता है क्योंकि राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपकी आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी नहीं है। 18 फरवरी के बाद अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है। परन्तु 14 जून से एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। आपको कई अत्यंत लाभकारी अवसर भी मिलेंगे। अपनी समझ का सही उपयोग करेंगे।

15 अक्टूबर के बाद जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान के मंगल आपके घरेलू माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी माता स्वास्थ्य भी

अच्छा नहीं रहेगा। 18 फरवरी के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है।

09 अगस्त से समय अनुकूल हो रहा है। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावुक लगाव बढ़ने के कारण पारिवारिक माहौल भी अनुकूल होगा। आपके पिताजी एवं बड़े भाई के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों के स्वास्थ्य व शिक्षा में रूकावटें आ सकती हैं। 18 फरवरी के बाद गर्भवती स्त्रियों को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

09 अगस्त से बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी कम होगी और शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा। गर्भधान के लिए उत्तम समय रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान रह सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फिर भी आपको स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम करते रहना चाहिए।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः ठीक-ठाक रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। व्यापारिक व्यक्तियों के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

8 अगस्त के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 15 अक्टूबर से समय आपके लिए काफी बेहतर हो रहा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में कोई विदेश यात्रा का योग नहीं बन रहा परन्तु 18 फरवरी के बाद विदेश यात्राएं होंगी। राहु के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। इस स्थानान्तरण से आप प्रसन्न नहीं रहेंगे।

14 जून से नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

तीर्थ यात्रा के भी योग बन रहे हैं। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। परन्तु 18 फरवरी के बाद आप दान पुण्य करेंगे। राहु ग्रह के गोचर के बाद मन्त्र जप या साधना अधिक करेंगे। साधु, संन्यासी, देवता एवं अपने से बड़े लोगों में आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं एकादश भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुछठे भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं छठे भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

5 मार्च के बाद का समयआपकेकार्य-व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके अंदर काम करने का जुनून होगा। परिश्रम की बदौलत उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपनी शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। अधिकारी आपसे प्रभावित होंगे और उनका अच्छा सहयोग भी मिलेगा।

किसी के साथ मिल कर कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे तो उसमें अच्छा लाभ होगा।12 अगस्त से आपको किसी पर अत्यधिक विश्वास नहींकरना है,नहीं तो आपको धोखा मिल सकता है। 23 अक्तूबर से आपका समय अनुकूल हो रहा है फिर भी आपको सतर्क रहना चाहिए।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। एकादश स्थान का शनि आर्थिक उन्नति के लिए काफी शुभ है फिर भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुवभी लोगों की सलाह अवश्य लें।

5 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। पुत्र एवं आपके मित्रों से अच्छा लाभ होगा। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन व्यय करेंगे। 12 अगस्त से 23अक्तूबर तक निवेश के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में निवेश से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें। आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं होगी। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

गुरु के गोचर के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। वर्षान्त में आपके

परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बढ़िया नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुआपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी जिससे उनकीशिक्षा-दीक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही नकरें। दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

रोग स्थान में गुरु ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य के लिए उत्तम नहीं है। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता में कुछ अनुकूलता आएगी। आप स्वस्थ महसूस करेंगे परन्तु अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। पेट की तकलीफें व मोटापा बढ़ सकता है।व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए श्रेष्ठ रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत उत्तमरहेगा।विदेश में व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राओंके प्रबल योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर हो सकता है। 5 मार्च के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

यात्रा के दौरान या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें क्योकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के

कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है परन्तु 5 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपकी श्रद्धा और बढ़ेगी।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं छठे भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक जीवन में इस वर्ष आप कुछ विशेष करेंगे। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। कानून से जुड़े लोगों वकील, पुलिस आदि को लाभ की संभावना बन रही है। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपका किसी से मतभेद हो सकता है। पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। वर्षान्त में किसी प्रकार का जोखिम न लें।

धन संपत्ति

आर्थिक उन्नति के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आर्थिक उन्नति के लिए अच्छी नहीं है। आय के कम एवं व्यय के ज्यादा योग बन रहे हैं। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसे न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

18 मार्च से आपका समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा हैं। धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आपके पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसे खर्च हो सकते हैं। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। ऐसी विषम परिस्थिति में आपको अपना आत्मबल बनाए रखना चाहिए। छठे स्थान में वक्री मंगल आपके आय के स्रोतों में वृद्धि करेंगे। फिर भी आर्थिक स्थिति को लेकर सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव के कारण घरेलू मामलों में आपको बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद में न पड़ें। मार्च के बाद अपने दांपत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए आपको अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। इस समय आपके

ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मदभेद हो सकता है।

तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। भाई-बहनों का अच्छा सहयोग मिलेगा। समाज में आपका पराक्रम और बढ़ेगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होना आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा, जिसके कारण संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम है। परन्तु 18 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। आपको पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। अपने खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर पार्क जाना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

छठे स्थान में मंगल ग्रह के प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिसके कारण आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। 8 अक्टूबर के बाद वाहन इत्यादि से सावधान रहें और यात्रा भी कम से कम करें। नहीं तो शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता अभ्यार्थियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए। मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है।

व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साइंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा और आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग

बन रहें है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। 18 मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है।

8 अक्टूबर के बाद यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। चोट चपेट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास होगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में संलग्न होंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को प्रेम सौहार्द के साथ मनाएंगे। 8 मार्च से आप दान पुण्य व दूसरों की सहायता अधिक करेंगे, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनि ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए शनि यन्त्र अपने पूजा घर में स्थापित कर उसकी पूजा करें।
- मदिरा व नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल न करें।
- सरसों के तेल से निर्मित वस्तुओं को गरीब मजदूरों को खिलाएं।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों में दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक जीवन के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादश शनि के कारण आप कुछ गलत फहमियों से व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। निश्चित तौर पर आपको बेहतर परिणाम मिलेगा। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें अन्यथा सकारात्मक परिणामों की जगह आपको नकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं एवं आप कानून की जद में आ सकते हैं। संचित धन का सही जगह उपयोग करें। सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। हालांकि मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें नहीं तो उसमें आपको हानि हो सकती है। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारु रूप से चलाते रहें। उसमें आपको सफलता मिल सकती है। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से बड़े व अनुभवी लोगों का साथ आपको अच्छी सफलता दिला सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको धोखा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्ग एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूवार्द्ध घर परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पायेंगे। गृहस्थ जीवन की बात करें तो पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। आपका छोटे भाई-बहनों के साथ संबंध अच्छा रहेगा। दशम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि पिता के साथ कुछ मतभेद उत्पन्न करा सकता है और आप दोनों के बीच हमेशा कुछ न कुछ तनाव भी रहने वाला है। मार्च के बाद यह तनाव खत्म हो जाएगा और संबंधों में मधुरता आएगी

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य सम्पन्न करेंगे। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को सावधानी बरतें नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

28 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी, जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहे तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। 28 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होनी प्रारम्भ हो जाएगी।

आप अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी अनुशासित रखेंगे। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो 12 अगस्त के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। अतः ज्यादा तेल युक्त आहार लेने से बचें। आँखों में समस्या हो सकती है और चश्मा भी लग सकता है। जिन लोगों को पहले ही चश्मा लग चुका है उनके चश्मे का नंबर बढ़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यह समय माध्यमिक शिक्षा ग्रहण

कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनाएगा। 28 मार्च के बाद लग्न भाव पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को कठिन परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। शत्रुओं को परास्त करने के लिये आपको नीतियो में बदलाव करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ है। तृतीयस्थ राहु के कारण छोटी मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु 28 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा, जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रिया कम ही कर पाएंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका अच्छे कार्यों के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। आपके दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या में सुधार होगा। गरीबों को दान देना व दूसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। मजदूरों को खाना खिलाकर व किसी की सहायता कर आप अत्यधिक संतुष्ट होंगे।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को काला कम्बल दान करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न दान करें, जिससे आपकी शारीरिक व्याधियां दूर होंगी।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि लग्न स्थान में और सिंह राशि का राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। लग्नस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठाकर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश कर सकते हैं। परन्तु आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

तृतीयस्थ राहु के कारण आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम होंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के कारण धन हानि व धनागमन के मार्ग प्रभावित होंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनेगी। यदि आपने ऋण के लिए आवेदन डाला है तो 6 अप्रैल के बाद पास हो जाएगा। इस वर्ष आपके संचित धन में कमी होगी। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

गुरु ग्रह का गोचर भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं के लिए बहुत ही शुभ है। भूमि व भवन खरीदते समय कागजी मामले में बहुत ही सावधान रहना चाहिए नहीं तो आपको धोखा मिल सकता है, जिसमें आपका पैसा फंस सकता है। कोई बड़ा निवेश करने से बचें। यदि निवेश करना जरूरी हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के कारण आपका घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगो का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं।

आपकी धर्मपत्नी के लिए यह समय शुभ नहीं है। आलस्य व स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर आपके घरेलू वातावरण के लिए काफी शुभ है। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। घर में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। माता पिता की खूब उन्नति होगी। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि सामाजिक पद प्रतिष्ठा में कमी कर सकती है। अतः सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग ले पाएंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए उत्तम रहने वाला है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे, जिससे समाज में आपका सम्मान और बढ़ेगा।

आपके दूसरे बच्चे की शिक्षा प्रभावित हो सकती है और उन्नति में भी बाधा उत्पन्न होगी। अतः दूसरी संतान के लिए तुला दान करना लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद आप संक्रमण संबंधित बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं। लग्न स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य लिए अच्छा नहीं रहेगा। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण स्वस्थ रहते हुए भी आप अपने को बीमार जैसा अनुभव कर सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। नहीं तो बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं।

आपको दुरुस्त रहने के लिए व्यायाम व योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें। महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। विद्यार्थियों को अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 6 अप्रैल के बाद नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। दशमस्थ गुरु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती

रहेंगी। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्राएं होंगी। यह यात्रा मनोरंजनात्मक एवं आनन्ददायक रहेंगी।

यात्रा करते समय आपको कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। यात्रा के दौरान आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है या आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ से ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 6 अप्रैल के बाद घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें व प्रत्येक दिन शिव का दुग्धाभिषेक करें।
- गरीब व जरूरतमंद लोगों को काली वस्तुओं का दान करें।
- अपने वजन के बराबर अन्न दान आपके शारीरिक कष्टों को दूर कर सकता है।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु दशम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारभ्म अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अचानक व्यवसाय में परिवर्तन होने की संभावना बन रही है। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

15 अप्रैल के बाद एकादश स्थान का गुरु आपके व्यापार में आय की मात्रा बढ़ा सकते हैं। व्यापार में आमदनी के स्रोत सृजित होंगे। शेयर बजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। 27 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले लोगों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके के लिए अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि होने के कारण भूमि, क्रय-विक्रय व खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु परिवार में अधिक खर्च होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है।

13 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में राहु एवं शनि का गोचर आर्थिक हानि का योग बना रहा है। उस समय आपको खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपकी जिन्दगी धन के मामले में बहुत सुदृढ़ हो जाएगी। 27 अगस्त से द्वितीय स्थान का शनि परिवार पर कुछ अनावश्यक खर्च करा सकता है, जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी । द्वितीयस्थ राहु के कारण अचानक परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। ऐसी स्थिति में आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना लाभप्रद रहेगा।

15 अप्रैल के बाद आपको प्रेम-प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। सप्तम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपके भाईयों की अच्छा उन्नति होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतः उसके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

15 अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय मे शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आप का बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। शनि की सप्तम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बन सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आपको ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे आप कमजोर होते जा रहे हैं।

अप्रैल के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि आप मसालेदार और तेल वाले आहार पर विशेष ध्यान देंगे। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए सामान्यतः मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपकी उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः

समय का सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

15 अप्रैल के बाद समय विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए क्योंकि शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

लग्न में शनि की स्थिति यात्रा में विलंब या किसी प्रकार की कठिनाई का कारण बनेगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु लम्बी यात्राओं का योग कम ही बन रहा है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यवसाय से संबंधित यात्रा भी करा सकती है। इस वर्ष आपकी पूर्व निर्धारित कोई यात्रा नहीं होगी। मुख्यतः सारी यात्राएं अचानक होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का शनि धार्मिक कार्यों में अरुचि उत्पन्न कर सकता है। जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। तन्त्र, यन्त्र व सिद्धि के प्रति आपका रुचि बढ़ेगी। 15 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह-शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। वर्षान्त में आप दान पुण्य भी अधिक करेंगे।

- राहु मन्त्र का पाठ करें व शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ायें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं द्वादश में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान के गुरु व्यापार में उन्नति का योग बना रहे हैं। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। यदि आप साझेदारी में व्यावसाय कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। बड़े लोग व वरिष्ठ अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परन्तु 26 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि नौकरी करने वालों के लिए अच्छी नहीं है। क्योंकि आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। मुख्यतः सारे ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न की जा सकती है। इन समस्याओं के बीच आप अपने को पूर्ण रूप से फंसा हुआ महसूस करेंगे। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे। सितम्बर के बाद काफी हद तक सफल भी रहेंगे। उस समय आपको कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। धनार्जन करने में आपको भाई व धर्मपत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। परन्तु अप्रैल के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें व धन के लेद देन में सावधान रखें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है।

गुरु, राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोग की अधिकता होगी उसेके निवारण में भी आपका व्यय होगा। रिश्तेदारी व मित्रों के साथ आर्थिक लेन देन न करें नहीं तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के

कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। द्वितीयस्थ शनि की चतुर्थ स्थान पर दृष्टि पारिवारिक माहौल खराब कर सकती है। ऐसे में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं। नहीं तो आपका घरेलू माहौल ज्यादा अशान्त हो सकता है।

अप्रैल के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहारों में संयम बरतें। इस वर्ष आपका दाम्पत्य जीवन भी अच्छा नहीं रहेगा। धर्मपत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। समाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसके उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

अप्रैल के बाद उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर बच्चे की उन्नति रोक सकता है। अतः उस समय उन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी। सितम्बर के बाद समय फिर से उत्तम हो रहा है। उसके बाद से अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। अप्रैल के बाद चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं।

अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन करें। दाल, सब्जी, फल आदि का ही अधिक सेवन करें। 16 सितम्बर के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। यदि उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

अप्रैल के बाद उन्नति में व्यवधान आता रहेगा। यदि आप अपने लक्ष्य में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करना पड़ेगा। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं, उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए यह वर्ष शुभ है।

यात्रा-तबादला

तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि छोटी यात्राएं कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा। 26 अप्रैल के बाद आपकी विदेश यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा जिससे आप दुःखी रहेंगे।

यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

साल का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आलस्य के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। सितम्बर के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या अनुशासित होगी। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं द्वितीय भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किए अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। 11 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्ययवास में कुछ सुधार होगा।

अक्टूबर के बाद कार्य क्षेत्र में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित कर सकते हैं। यदि आप खनिज एवं खान विभाग व रासायनिक विभागों से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो बहुत अच्छी उन्नति करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत सृजित होंगे। इस अवधि में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, उसमें अच्छी सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जाएगी। नौकरी वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। घर परिवार में रोग व्याधि की अधिकता होने से भी आपके अपव्यय होंगे। पैसे के लेन देन के समय कागजी कार्यवाही अवश्य करें। धनागम के मार्ग भी प्रभावित होंगे। ऐसे स्थिति में आपको अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाना चाहिए और जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश नहीं करना चाहिए, नहीं तो नुकसान हो सकता है। मई के बाद समय किंचित अच्छा हो रहा है। पत्नी के द्वारा धन संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। संतान की उच्च शिक्षा पर भी आपका पैसा खर्च होगा।

अक्टूबर के बाद आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में आप अत्यधिक व्यय करेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या भाईयों के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी। रुके या फंसे हुए धन की पुनः प्राप्ति के संकेत हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष उत्तम नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के शनि आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। वर्ष के प्रारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। परन्तु मई के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपकी पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह संस्कार हो जाएगा।

आपके पिताजी के लिए समय बहुत ही शुभ है। आपकी संतान एवं भाईयों की उन्नति होगी। अक्टूबर के बाद आप उच्च मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके समाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी। सरकारी क्षेत्रों में आपको काफी सम्मान मिलेगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे सभी लोग आपके प्रभाव से प्रभावित होंगे तथा यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

संतान के लिए साल का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा दीक्षा पर भी पड़ेगा। परन्तु 11 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति के मार्ग खुलेंगे। वे अपने परिश्रम एवं पराक्रम के बल पर उन्नति करने में समर्थ होंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी श्रेष्ठ है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। यदि विवाह योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु छोटी मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। मई के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उत्साह एवं परिश्रम से करेंगे। धर्म पत्नी का पूर्ण सहयोग मिलने से मानसिक प्रसन्नता बनी रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

अक्टूबर के बाद तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से आप प्रतियोगिता में सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। वांछित उन्नति तथा सफतला अर्जित करके मानसिक शान्ति की अनुभूति कर सकते हैं। अन्य लोग आपके कार्य से प्रभावित होंगे तथा आपके प्रशंसक बनेंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

अक्टूबर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी सुखद रहेगी। यात्रा करते समय बहुत ही सावधान रहें नहीं तो अचानक आपके साथ दुर्घटना हो सकती है क्योंकि पूरे साल राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंद्वता के कारण आपका मन पूजा पाठ मे नहीं लगेगा। 11 मई से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि का वास होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू-संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- आठमुखी रुद्राक्ष लाल धागे में सोमवार के दिन धारण करें।
- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध चढ़ाएं एवं ॐ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय में उन्नति के लिए यह साल उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ शनि के कारण आप अपने परिश्रम के बल पर व्यापार में उन्नति करेंगे। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से कुछ प्रतिद्वन्दी आपके व्यापार में व्यवधान डालने की कोशिश करेंगे। लेकिन उस योजना में वे सफल नहीं हो पाएंगे। 7 अप्रैल से अचानक आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी। जो लोग सूद-ब्याज पर पैसे देते हैं उनको अच्छा लाभ होने वाला है। यदि आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं तो सफलता आपके कदम चूमेगी।

13 जुलाई के बाद मुख्यतः सारे ग्रहों का गोचर शुभ होने से आपके मान-मर्यादा में बढ़ोत्तरी होगी तथा सभी सहकर्मियों का अच्छा सहयोग भी मिलेगा। आपको कुछ ऐसी खुशियाँ मिलेंगी, जिसकी तलाश आपको एक लम्बे समय से थी। आप अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे और प्रतिद्वन्दियों को मुहतोड़ जबाब देंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने से बड़े अधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा कार्य स्थल पर आपकी एक अलग पहचान होगी।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति शानदार रहने वाली है। व्यावसायिक अनुकूलता के कारण धन का आगमन भी निर्बाधा होता रहेगा। परन्तु 5 अप्रैल से 13 जुलाई के अंतराल में आपके संचित धन में बढ़ोत्तरी नहीं होगी। उसके बाद स्थिति में अप्रत्याशित बदलाव होगा और आप यह पाएंगे कि आपकी जमापूंजी में वृद्धि हो रही है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। निवेश के मामले में यह समय अत्यधिक श्रेष्ठ है।

आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। उसके स्वामित्व को प्राप्त करके आप श्रेष्ठता के भाव की अनुभूति करेंगे। आपके ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से भी आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करेंगे। 4 नवम्बर के बाद जमापूंजी और लेन-देन के मामले में किसी प्रकार की कोताही न करें। संभव हो तो लिखित रूप में ही लेन-देन करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाल है। परिवार के सभी सदस्य आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारी जनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे। आप दोनों परिवारों के लिए सहयोगी सिद्ध होंगे परन्तु अप्रैल से जून पर्यन्त आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है। यदि दोनों आपस में सामंजस्य बनाए रखें तो संबंधो मे मधुरता बनी रहेगी।

2 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है। उन लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। 13 जुलाई से पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका एक अलग प्रकार का प्रभाव होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आपकी संतति बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगी। अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आपके आज्ञापालन में वे हमेशा तत्पर होंगे।

3 मार्च के बाद आप अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। 4 नवम्बर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिए समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। 3 मार्च से समय और भी शुभ हो रहा है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी तथा आप मानसिक रूप से प्रसन्न व सन्तुष्ट बने रहेंगे। आप पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के होंगे, जिसके कारण रोग व्याधि आपसे दूर ही रहेगी।

5 अप्रैल से 13 जुलाई के बीच आप किंचित बीमार हो सकते हैं। परन्तु उसके बाद आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। मक्खन, घी और मिठाई से दूर रहना आपके लिए ज्यादा फायदेमंद होगा अन्यथा आपका बजन बढ़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 3 मार्च के बाद समय बहुत ही शुभ

हो रहा है।

7 अप्रैल के बाद नौकरी इच्छित व्यक्तियों को नौकरी मिल सकती है। इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों को 13 जुलाई के बाद सफलता मिलेगी। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय काफी अच्छा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि के कारण छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। द्वादश स्थान का राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहा है।

5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह परिर्वतन आपके लिए अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। परन्तु 3 मार्च के पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि बढ़ेगी। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा। दैनिक पूजा-पाठ में भी सुधार होगा। मार्च के बाद दान पुण्य करेंगे। साथ ही धार्मिक गतिविधियों जैसे जागरण, सांई संध्या इत्यादि कार्यों में भी संलग्न रहेंगे। 4 नवम्बर के बाद तीर्थ यात्रा व भण्डारा कर अत्यधिक पुर्ण्याजन भी करेंगे।

- अपने पूजा घर में पारद शिव लिंग स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें तथा बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं।

दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु
(15/01/2021 - 15/01/2028)

केतु की महादशा 15/01/2021 को आरम्भ और 15/01/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु दशम भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति, समृद्धि, विरोधियों पर विजय तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको यश ओर ख्याति मिलेगी और जीवन में प्रगति तथा लाभ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप खुश और आशावादी होंगे। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी तथा विषाणुजन्य बुखार, चर्मरोग, हृदय-पीड़ा, निचले अंगों में पीड़ा बुखार फोड़ा तथा अल्सर आदि हो सकते हैं। समय पर उपाय करने से इनसे बचाव हो सकता है।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। व्यवसाय-व्यापार में उपार्जन अच्छा होगा। शत्रुओं-विरोधियों पर विजय मिलेगी। सट्टा-कार्य कम करें। पिता से कुछ लाभ होगा। जीविका-व्यवसाय के लिए कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, परिष्कृत कला, इंजीनियरिंग, सम्पर्क अधिकारी का कार्य, न्यायिक सेवा, प्रबन्धन तथा भाषा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। रत्न, विलासिता-सामग्री, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, कपड़े, रबड़ तथा प्लास्टिक आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्य स्थान में अनुकूल परिवर्तन आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आपको वरिष्ठ कर्मचारियों का अनुग्रह तथा सहकर्मियों-सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों के जीवन में प्रगति, आय में वृद्धि तथा लाभ और व्यापार का विस्तार होगा। आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी और साझेदारी में लाभ होगा। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और बड़ी दोनों यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे। आपको परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। भाषा, दवा, प्रबन्धन, इन्जीनियरिंग तथा विधि के विषयों

में आपकी रुचि होगी। आप कूटनीतिक और स्नेही हैं और आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी। समाज सेवा में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की विरोधियों पर विजय और कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। उन्हें आपकी सहायता की जरूरत हो सकती है। आपके जीवनसाथी को सुख, जमीन जायदाद में वृद्धि और कुछ परिवर्तन होगा। आपकी माता को साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी जबकि पिता की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी और उनके साथ अचानक कोई घटना घटेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ और हानि और कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या होगी जबकि बड़ों के आवास या व्यवसाय में परिवर्तन, यात्रा और व्यय होगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति और जीवन में प्रगति होगी। शुक्र की दशा में बच्चों से सुख, शिशु का जन्म, सफलता तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यवसाय में लाभ होगा। मंगल के कारण जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और सगे-संबंधियों से सहायता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में यश और ख्याति की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सफलता मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन-समृद्धि, यश तथा सफलता मिलेगी।

अंर्तदशा :- केतु - राहु
(16/12/2023 - 02/01/2025)

आपके लिए केतु महादशा 15/01/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 16/12/2023 को प्रारंभ होकर 02/01/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। चिंताओं से मुक्ति मिलेगी। समाज, व्यापार या कार्यक्षेत्र में लाभ होगा। समाज की भलाई का कार्य कर सकते हैं। प्रसिद्धि प्राप्त होगी। लंबी यात्रा या तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। विदेशियों से संबंध हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे और प्रसिद्ध बनेंगे।

आपके पिता को अचानक लाभ हो सकता है। माता सफल होंगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे, अन्य लोगों से सहायता प्राप्त होगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, उत्तम शिक्षा, उत्तम पारिवारिक जीवन, शत्रुओं पर विजय, कर्ज़ से मुक्ति और सफलता का संकेत है।

आपकी संतान को सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारियों की सक्रियता बढ़ेगी, आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- केतु - गुरु
(02/01/2025 - 09/12/2025)

आपके लिए केतु महादशा 15/01/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 02/01/2025 को प्रारंभ होकर 09/12/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। शिक्षा उत्तम होगी। भाई-बहनों और चाचा से उत्तम संबंध होंगे। प्रभावशाली मित्र होंगे। संतान से सुख मिलेगा। विवाह हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा, व्यापार में लाभ होगा। संचार माध्यम और लघु यात्राओं से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली और धनी होंगे। आपके पिता की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। माता के जीवन में परिवर्तन आ सकते हैं। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य और धन का संकेत है। आपकी संतान भाग्यशाली होगी, उन्हें साझेदारी से लाभ होगा। अगर आप

सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय उत्तम होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए केसर, हल्दी, चने का दान करें।

अंर्तदशा :- केतु - शनि
(09/12/2025 - 18/01/2027)

आपके लिए केतु महादशा 15/01/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 09/12/2025 को प्रारंभ होकर 18/01/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। धन-समृद्धि और सम्मान की वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में प्रसिद्धि मिलेगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी; स्वास्थ्य उत्तम होगा। आत्म-विश्वास और विवेक में वृद्धि होगी।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं, धनार्जन उत्तम होगा। माता को कुछ बाधाओं के बाद सफलता मिल जाएगी।

आपके भाई-बहनों के लिए धन लाभ, आरामदेह जीवन, अचल संपत्ति की प्राप्ति, सुखी घरेलू जीवन का संकेत है।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारियों की आय बढ़ेगी, सफल होंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। छाती के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए काली वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :- केतु - बुध
(18/01/2027 - 15/01/2028)

आपके लिए केतु महादशा 15/01/2021 को प्रांरभ हुई। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा की अवधि 11 मास 27 दिन होगी जो आपके लिए 18/01/2027 को प्रारंभ होकर 15/01/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, बुद्धि, लेखन और तर्कशक्ति का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसन्न रहेंगे। उच्च पद प्राप्त होगा, धनार्जन उत्तम होगा। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। उत्तम वस्त्र, आभूषण, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। लेखन और अन्य बौद्धिक कार्यों के लिए उपयुक्त समय है।

महादशा :- शुक्र
(15/01/2028 - 15/01/2048)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 15/01/2028 को आरम्भ होकर 15/01/2048 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी कुण्डली में शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। शुक्र स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जो अच्छे स्वाद, भावनात्मक आनन्द तथा सुखमय जीवन, विशेष रूप से औरत के साथ, का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों तुला तथा वृष का स्वामी है। यह मीन में उच्च का जबकि कन्या में निम्न का होता है। आपकी जन्म कुण्डली में यह सप्तम भाव में स्थित होकर प्रथम भाव को देख रहा है और इस भाव पर कारकत्व का प्रभाव डाल रहा है। भाव जिस में यह स्थित है अर्थात सप्तम भाव भूमि, आय, जीवन-साथी और व्यवसाय में साथी, मुकदमें तथा विदेश में प्रभाव या वहाँ अर्जित प्रतिष्ठा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव से यह प्रथम भाव को देख रहा है जो लग्न है तथा शरीर-गठन एवं शरीर का द्योतक है। यह आपकी किसी बड़ी शारीरिक समस्या या दुर्घटना से रक्षा करेगा।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र सप्तम भाव में स्थित है और अपने ही भाव को प्रबलित कर रहा है जो साथी या जीवन साथी का भाव है। इस दशा काल में आप साझेदारी का व्यवसाय आरंभ कर सकते हैं जिसमें आप सफल रहेंगे या विदेश जाने की स्थिति में आपको वहाँ अच्छी उपलब्धियाँ तथा लोगों से संपर्क स्थापित करेंगे और आपकी चल तथा अचल संपत्ति में वृद्धि संभव है।

व्यवसाय :

आप साझोदरी का व्यवसाय कर सकते हैं जिसमें सफलता मिलेगी विशेष कर जब यह विचरीत लिंग के साथ हो। आप उन वस्तुओं को बनाने का काम करेंगे जिनकी मांगे औरतों में ज्यादा होती है जैसे रंग-रोगन या कपड़े का व्यवसाय।

पारिवारिक जीवन :

शुक्र विवाह का कारक भी है तथा सप्तम भाव जो विवाह का द्योतक है, में स्थित है और आपको एक कारक दोष देता है जिसके परिणाम स्वरूप आपके वैवाहिक जीवन में कुछ समस्या आ सकती है। आपको एक समर्पणशील या आज्ञाकारी जीवन साथी मिलेगा। किन्तु इसके बावजूद आपका परायी स्त्रियों की ओर झुकाव होगा, जो आपके वैवाहिक जीवन को तहस-नहस कर सकता है। आप बहुत ही भावुक होंगे और स्त्रियों के प्रति झुकाव के कारण स्वास्थ्य संबंधी अनेक समस्याएं हो सकती हैं।

अंर्तदशा :- शुक्र - शुक्र
(15/01/2028 - 17/05/2031)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/01/2028 को प्रारंभ होकर 15/01/2048 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 15/01/2028 को प्रारंभ होकर 17/05/2031 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह हैं। सप्तम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के प्रथम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप रोमांटिक और वासनापूर्ण होंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध बनेंगे, व्यक्तित्व आकर्षक होगा। लोकप्रियता के कारण विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ व्यापार में भागीदारी हो सकती है। रति की अति से मर्दानी कमजोरी हो सकती है; अतः सावधान रहें।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- चींटिओं को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - सूर्य
(17/05/2031 - 16/05/2032)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 15/01/2028 को प्रारंभ होकर 15/01/2048 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 17/05/2031 को प्रारंभ होकर 16/05/2032 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है और एक शक्तिशाली ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर सूर्य कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके जीवन में बहुत सी अप्रत्याशित घटनाएं अचानक घट सकती हैं, जिनमें से कुछ का प्रभाव पूरे जीवन पर पड़ेगा। फिर भी, इस अवधि में आप एक कुशल वक्ता बनेंगे। निवेश या सट्टेबाजी से कुछ लाभ हो सकता है। जीवन में काफी बाधाएं आएंगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य के निम्न टोटके आजमाएं।

1 दूध में शहद डालकर पियें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
2 गरीबों को आटा, गुड़ और तांबा दान करें।

3 सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - चन्द्र
(16/05/2032 - 15/01/2034)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 15/01/2028 को प्रारंभ हुई थी और 15/01/2048 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 16/05/2032 से प्रारंभ होकर 15/01/2034 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है।

नवम भाव में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका मन अध्यात्म और ध्यान में लगेगा। समाज की भलाई के कार्य करेंगे, गुरु की सेवा करेंगे। मष्तिष्क में जिज्ञासाएं उभरेंगी, मन धर्म और आत्मा के उत्थान में लगा रहेगा। इससे आपके पिता और गुरु को भी लाभ होगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा का यंत्र धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - मंगल
(15/01/2034 - 17/03/2035)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/01/2028 को प्रारंभ होकर 15/01/2048 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 14 मास रहेगी। यह 15/01/2034 को प्रारंभ होकर 17/03/2035 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

मंगल ऊर्जा का कारक है। अष्टम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 11, 2, 3 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

आप मंगली हैं, अतः आपके जीवनसाथी को भी मंगली होना चाहिए। अन्यथा जीवन कष्टप्रद रहेगा या जीवन को खतरा भी हो सकता है।

इस अवधि में बुद्धिमानी में कमी हो सकती है, वाणी कटु हो सकती है, स्वास्थ्य का ह्रास हो सकता है। नशीले पदार्थों से दूर रहना श्रेयस्कर रहेगा। घरेलू और विवाहित जीवन में कष्ट आ सकते हैं। धन और आय के मामलों में भाग्य का साथ देना कठिन होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन ब्रह्मा जी के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में प्रतिदिन जाकर उपासना करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - राहु
(17/03/2035 - 17/03/2038)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 15/01/2028 को प्रारंभ होकर 15/01/2048 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 17/03/2035 को प्रारंभ होकर 17/03/2038 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। राहु शुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के 10वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घरेलू जीवन से असंतुष्ट, अप्रसन्न और विचलित रह सकते हैं। मित्रों का सहयोग प्राप्त करना कठिन होगा। माता-पिता से, विशेषकर माता से लाभ हो सकता है। अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - गुरु
(17/03/2038 - 15/11/2040)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/01/2028 को आरंभ हुई थी और 15/01/2048 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 17/03/2038 को प्रारंभ होकर 15/11/2040 को समाप्त होगी।

एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं का और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 3, 5, 7 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके धन, बुद्धि, ज्ञान और साहस में वृद्धि होगी। बहुत से मित्र होंगे, प्रसिद्धि मिलेगी। विद्वानों और धार्मिक संस्थाओं से जुड़ेंगे, उनकी सेवा करेंगे। दान-धर्म में रुचि होगी; जरुरतमंदों की मदद करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - शनि
(15/11/2040 - 15/01/2044)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 15/01/2028 को प्रारंभ हुई थी और वद 15/01/2048 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 15/11/2040 को प्रारंभ होकर 15/01/2044 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है।

तृतीय भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 6, 10, 1 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

पारिवारिक मामलों में यह अंतर्दशा अशुभ हो सकती है। रिश्तेदार और मित्र आपसे अप्रसन्न रह सकते हैं। एकाकी जीवन आपको अच्छा लगेगा। वात और बलगम का कोई रोग हो सकता है। सुस्ती और संवेदनशीलता से त्रस्त हो सकते हैं। मन में नकारात्मक विचार आएंगे। मन को प्रसन्न रखना लाभदायक रहेगा।

- शिवजी की उपासना प्रतिदिन करें।
- पीपल को जल अर्पित करें।
- भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।

अंर्तदशा :- शुक्र - बुध
(15/01/2044 - 15/11/2046)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/01/2028 को प्रारंभ हुई थी और वद 15/01/2048 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 15/01/2044 जो आपके लिए 15/11/2046 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

अष्टम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान और ज्ञानवान बनेंगे। छात्रवृत्ति प्राप्त हो सकती है। धन का संचय होगा, विरासत में भी धन मिल सकता है। योग्यता और मृदु स्वभाव के लिए प्रशंसा मिलेगी।

आप दीर्घायु होंगे मगर स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है। स्वस्थ रहने के लिए अधिक

प्रयास करना श्रेयस्कर रहेगा।

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

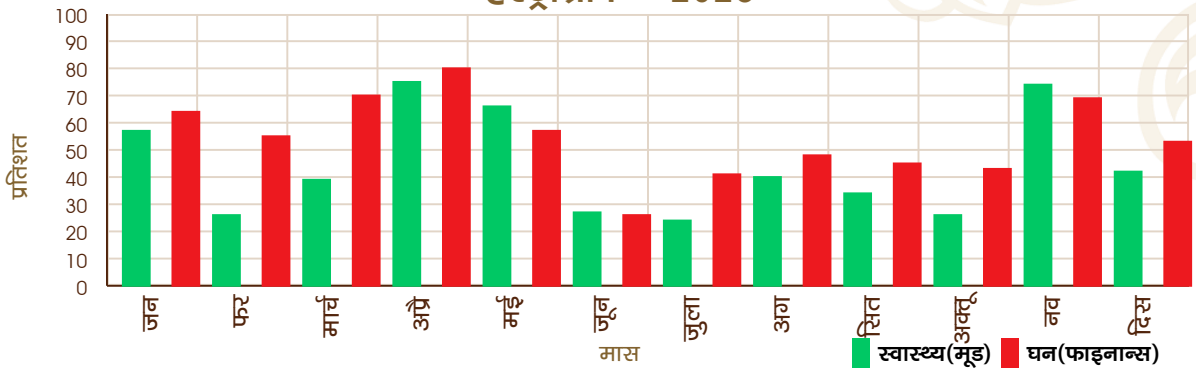

एस्ट्रोग्राफ - 2026

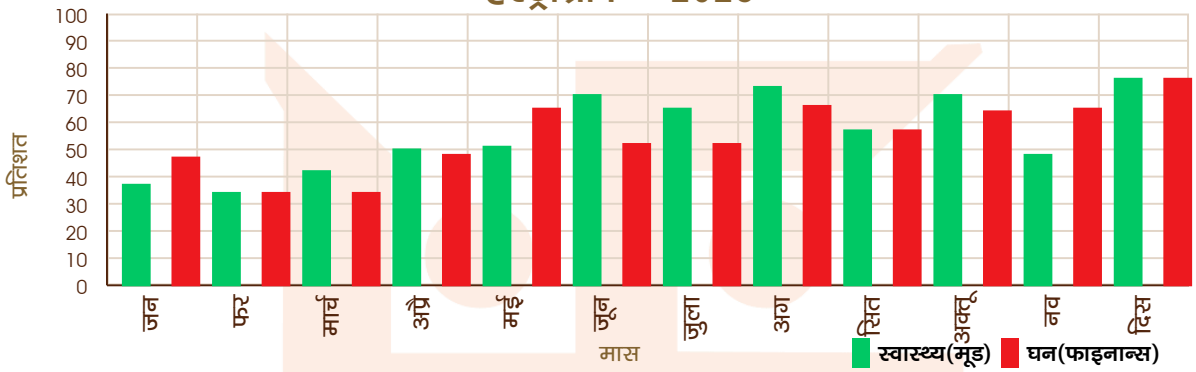

एस्ट्रोग्राफ - 2027

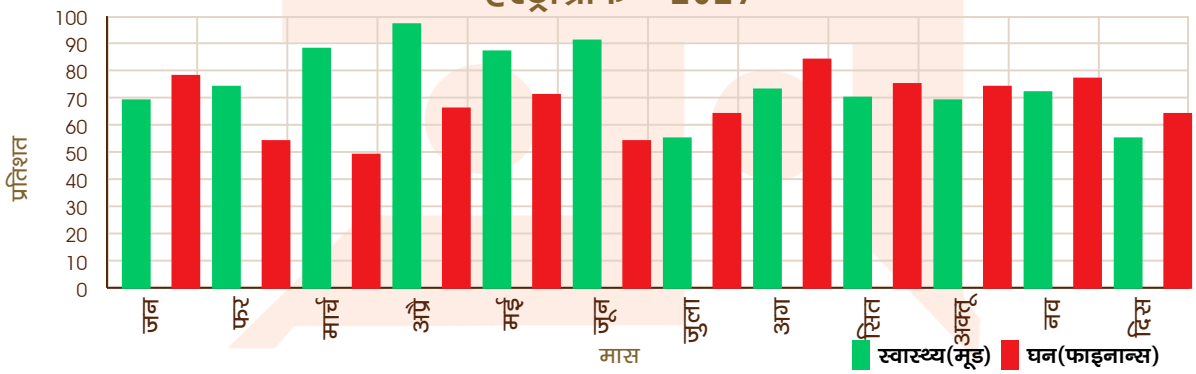

एस्ट्रोग्राफ - 2028

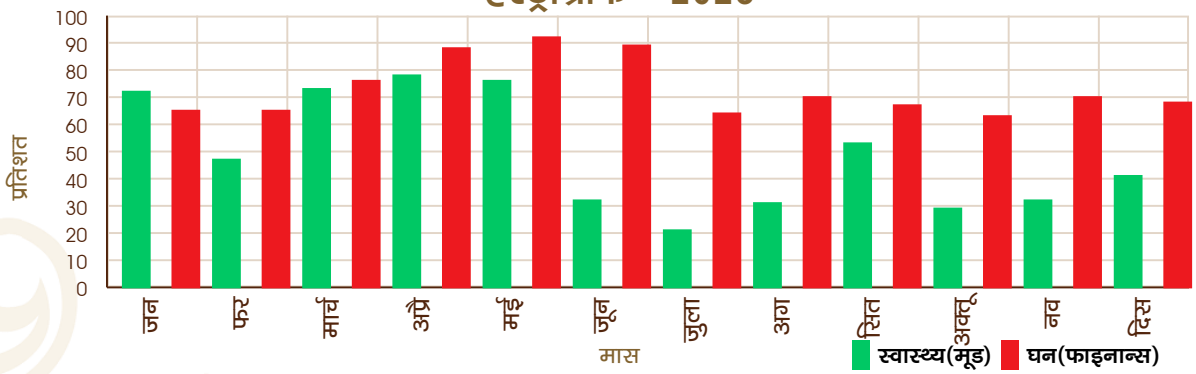

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

एस्ट्रोग्राफ - 2029

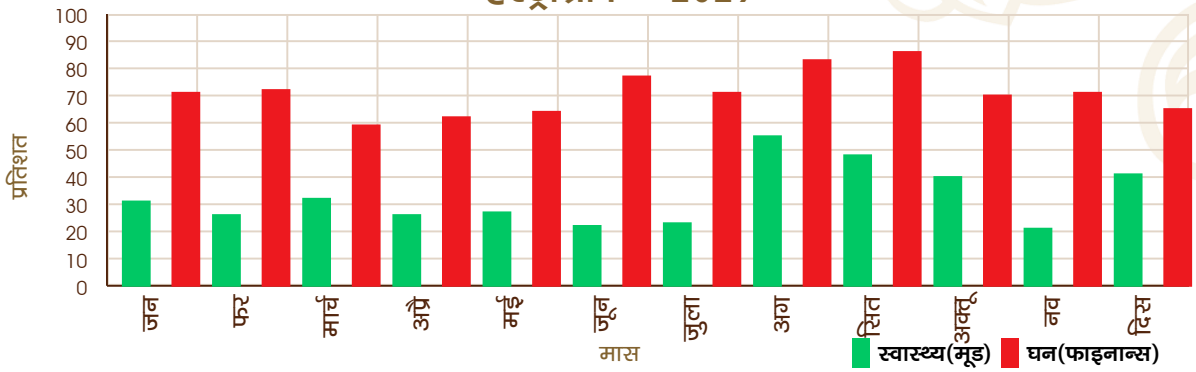

एस्ट्रोग्राफ - 2030

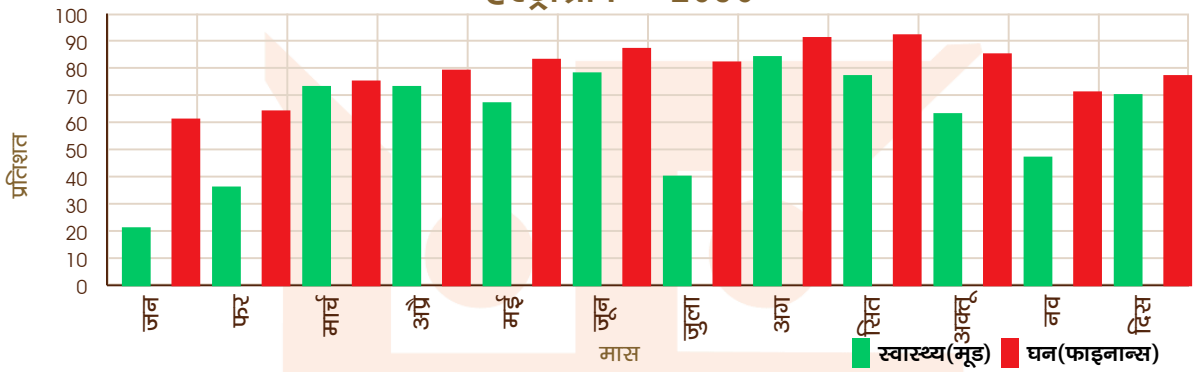

एस्ट्रोग्राफ - 2031

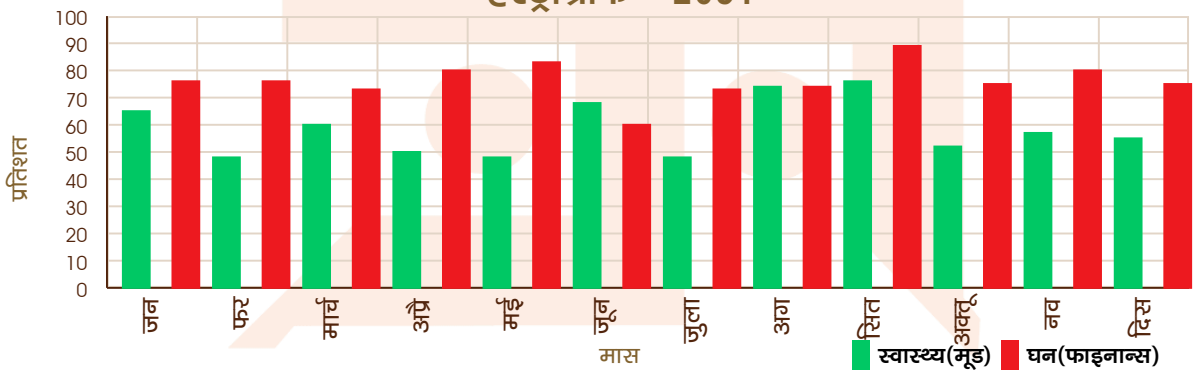

एस्ट्रोग्राफ - 2032

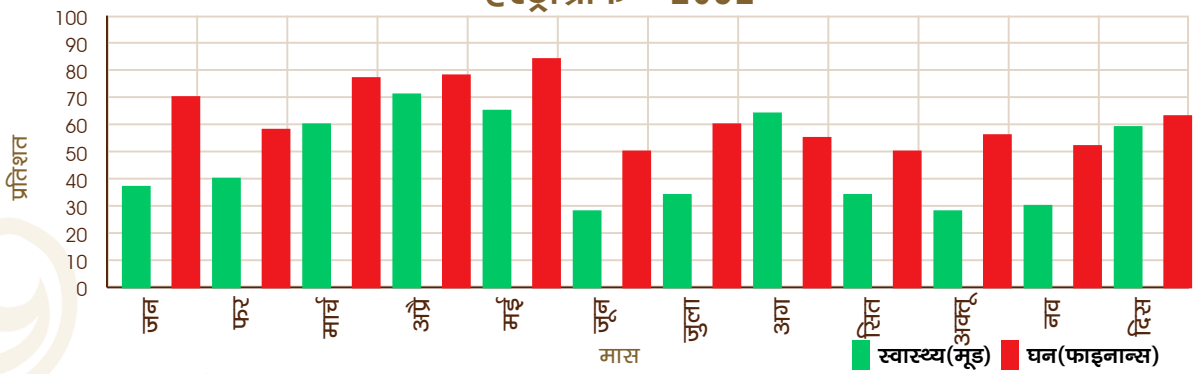

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

एस्ट्रोग्राफ - 2033

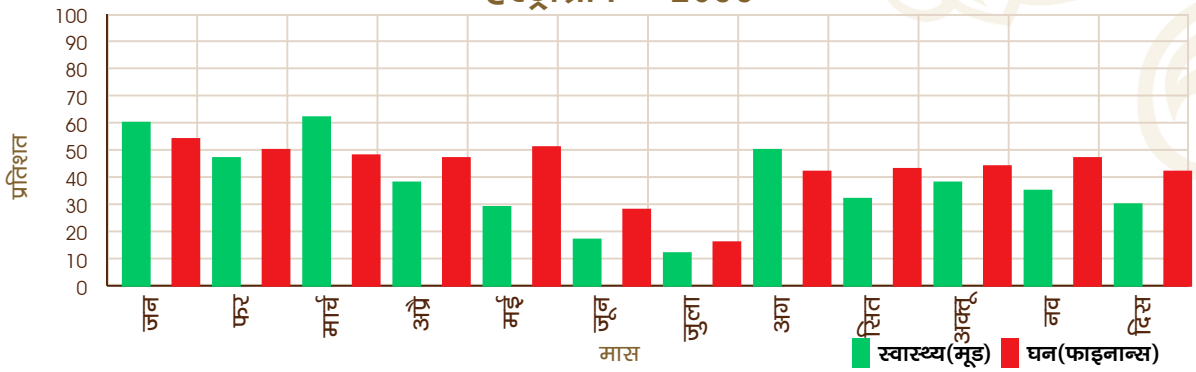

एस्ट्रोग्राफ - 2034

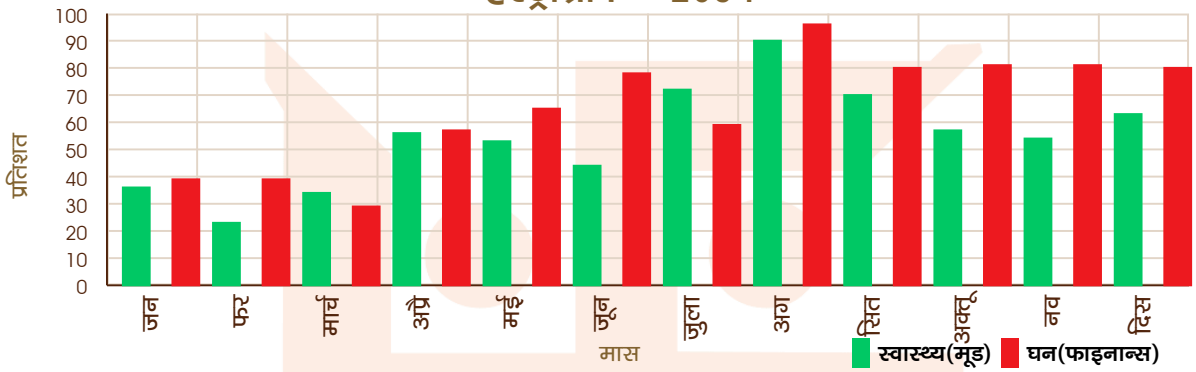

एस्ट्रोग्राफ - 2035

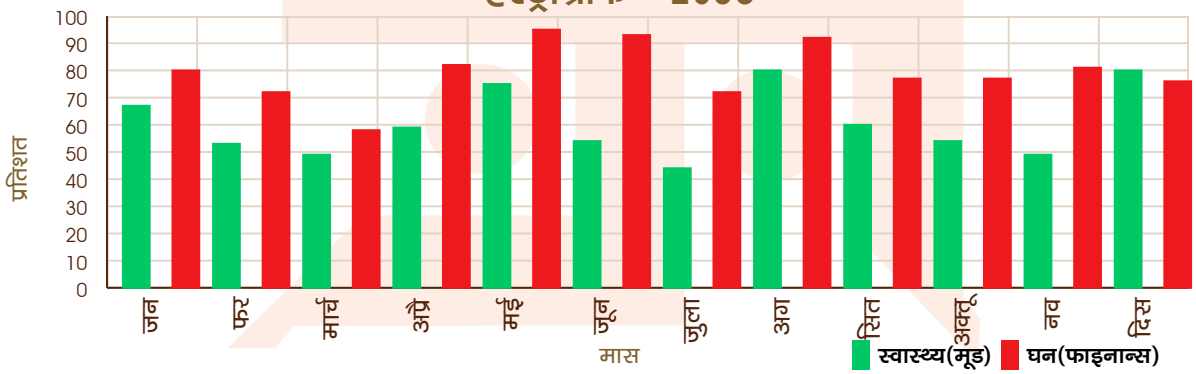

एस्ट्रोग्राफ - 2036

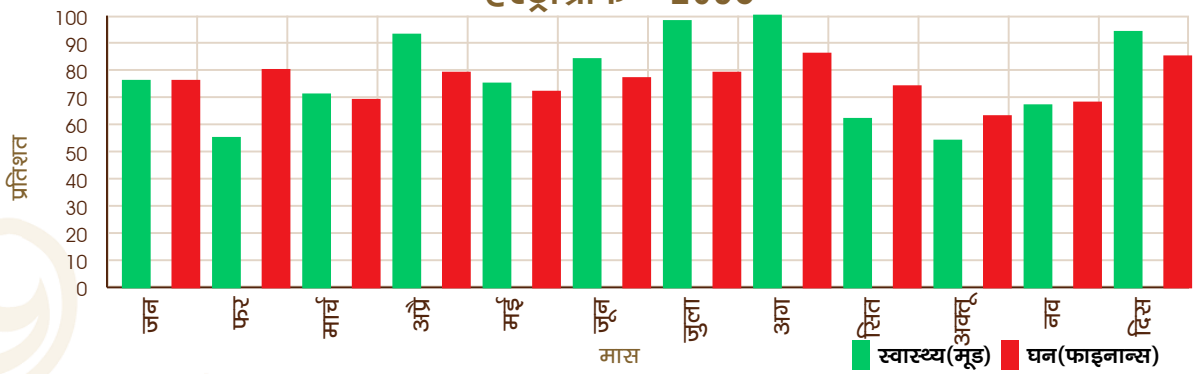

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

एस्ट्रोग्राफ - 2037

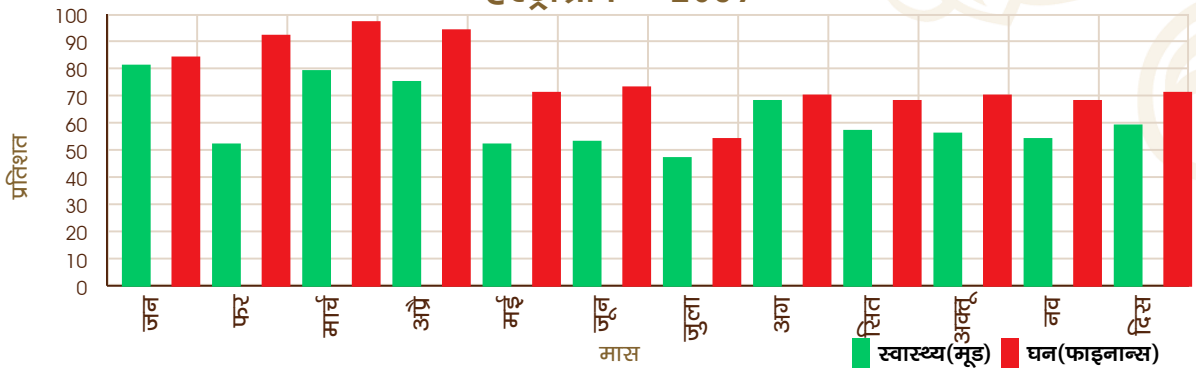

एस्ट्रोग्राफ - 2038

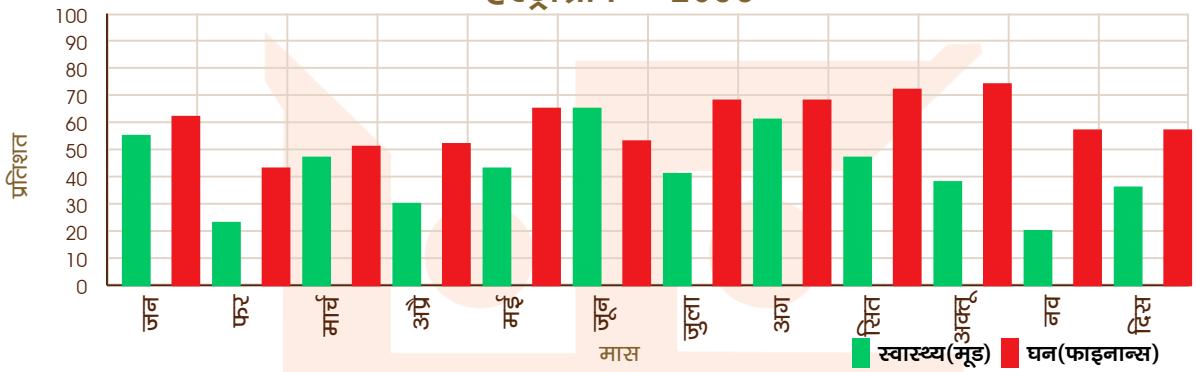

एस्ट्रोग्राफ - 2039

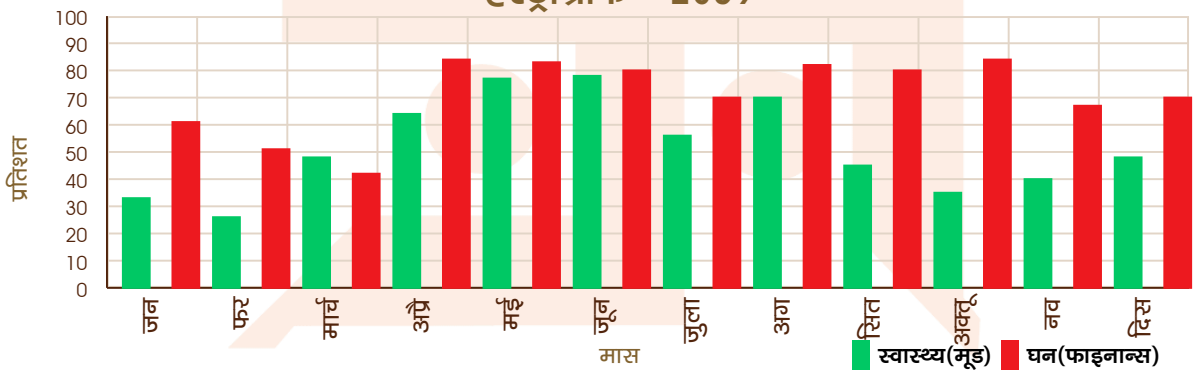

एस्ट्रोग्राफ - 2040

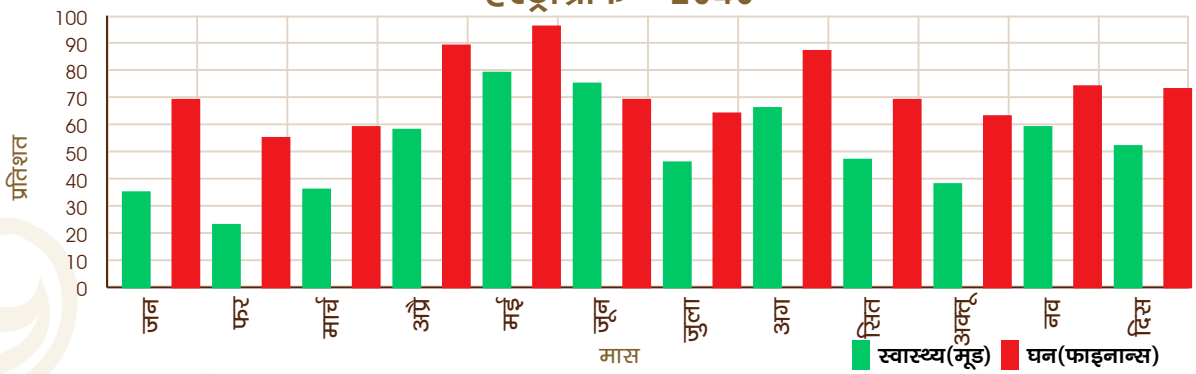

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

एस्ट्रोग्राफ - 2041

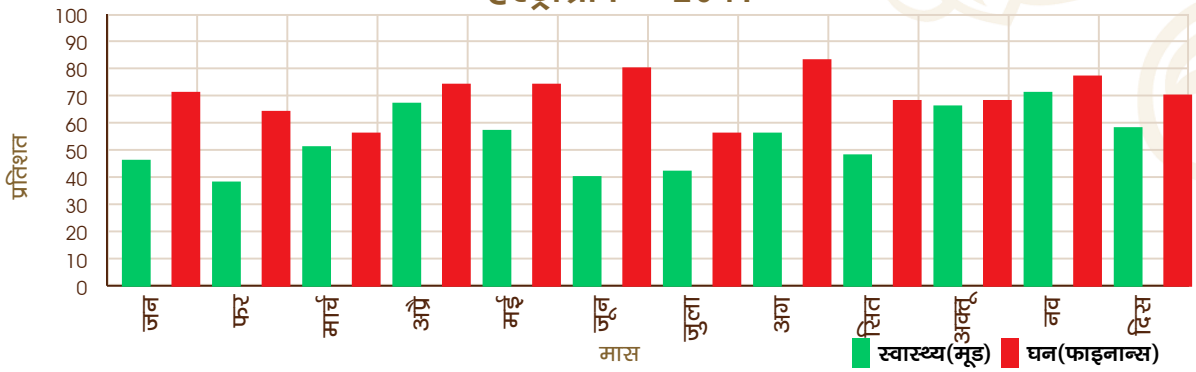

एस्ट्रोग्राफ - 2042

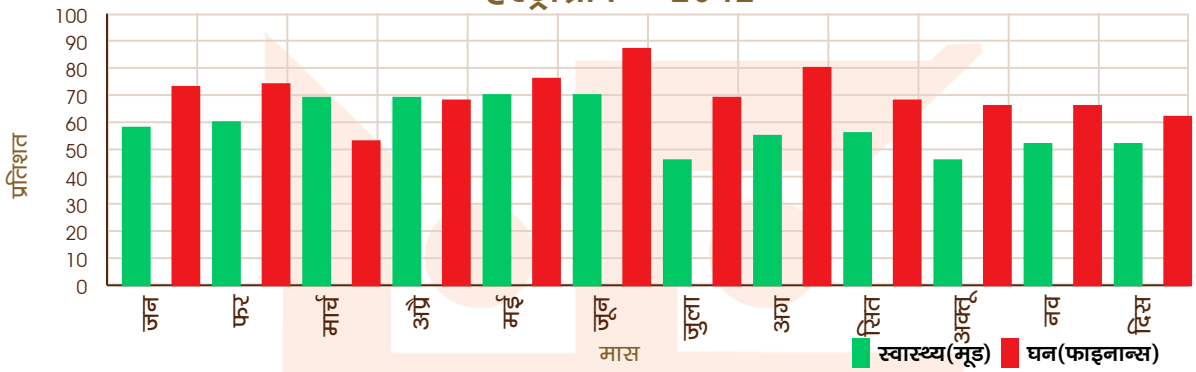

एस्ट्रोग्राफ - 2043

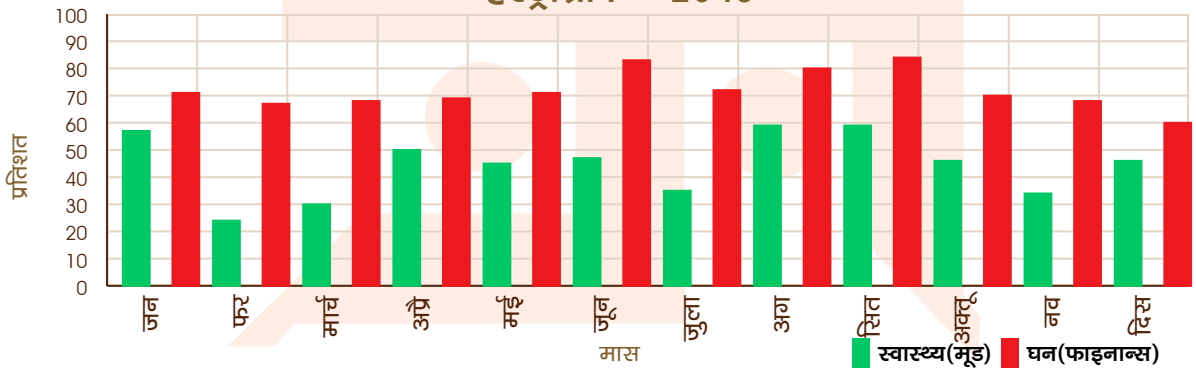

एस्ट्रोग्राफ - 2044

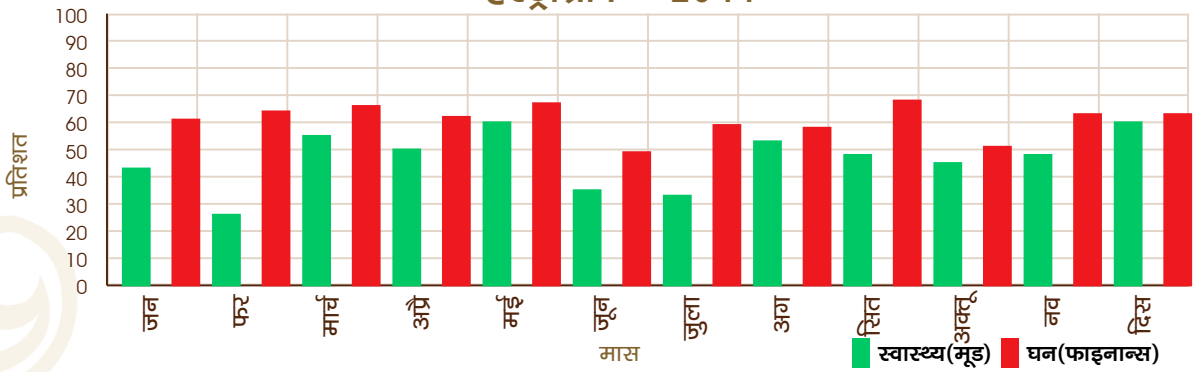

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

योग

शशक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
लघुर्द्विजास्योऽद्रिगतः सकोपः शठोऽतिशूरो विजनप्रचारः।
वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्ताः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः।।
नानासेनानिचयनिरतो दन्तुरश्चापि किंचि-
द्धातोर्वादे भवति कुशलश्चंचलो लोलनेत्रः।
स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजङ्घो
मध्ये क्षामः सुललितमती रन्ध्रवेदी परेषाम् ।।
पर्यङ्कशङ्खशरशस्त्रमृदङ्गमाला-
बीणोपमाःखलु करे चरणे च रेखाः।
वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं
प्राप्तं शशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः।।

।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 9, 1-3।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर शनि केन्द्र में हो तो शशक योग बनता है।

इस योग में समुत्पन्न जातक छोटे दाँत और छोटे मुखवाला, पर्वत पर रहने वाला, क्रोधी, हठी, महावीर, वन, पर्वत, नदी किनारे आदि में निवास करने वाला, अतिथि सेवा करने वाला, मध्यम कद का व्यक्ति होता है। सेनाओं को एकत्रित (इक्ट्ठा) करने में आसक्त, खनिज विद्या में निपुण, स्त्री में आसक्त, पराये धन हरण करने वाला, माता में भक्ति रखने वाला, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, दूसरे के छिद्रों को जानने वाला, हाथ पाँव में पलङ्ग, शङ्ख, वाण, शस्त्र, मृदङ्ग, माला वीणा आदि के चिह्नों से युक्त और 70 वर्ष पर्यन्त राज्य करने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप जातक उद्योगपति, राजदूत, मुखिया, मैकेनिकल इन्जीनियर, रसायनिक इन्जीनियर या माइन्स इन्जीनियर, भवन निर्माण, लौहकार्य, ट्रांसपोर्ट कार्य, नौकरी, महाव्यवसायी, भारी उद्योग के मालिक, राजनेता, मंत्री, राजनीतिक क्षेत्र में वांछित सफलताएं प्राप्त होंगी।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।

।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,69 ।।

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,राहु,बुध | योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

काम योग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
परदारपराङ्मुखो भवेद्वरदारात्मजबन्धुसंश्रितः।
जनकादधिकः शुभैर्गुणैर्महनीयां श्रियमेति कामजः।।
।। फलदीपिका।। अ. 6 / श्लोक 44, 51।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा सप्तम स्थान में शुभ ग्रह बैठे हो एवं सप्तम भाव का स्वामी स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो कामयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि | योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दूसरे के स्त्री में आसक्त नहीं होंगे और आपको उत्तम जीवनसाथी, सन्तान और बन्धुओं का सुख

प्राप्त होगा। आप शुभ गुणों से युक्त लक्ष्मीवान् होंगे। आप अपने पिता से अधिक उच्च पद प्राप्त करेंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र,गुरु,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,राहु,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-30 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य — योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

सिंहासनांश योग

''सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "सिंहासनांश" भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "सिंहासनांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : चंद्र,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।